जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

वर्ष -२६ अंक -०९ मई २०२४ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ५२ मूल्य - १५० रूपए प्रति

जय भिक्षु

श्वेताम्बर जैन दिगम्बर

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर

जय तुलसी

जय महाप्रज्ञ

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन

आचार्य महाश्रमण जी के ६३वें जन्म दिवस पर कोटि-कोटि वंदन

ADVANCE PANELS & SWITCHGEARS (P) LTD.

Unit 1: A-257, DSIDC, Narela Industrial Park, Narela, New Delhi-110040,
Factory 2: SIDCUL, Haridwar, Factory 3: Sonepat, Haryana (www.advancepanels.com)
Offices : Delhi, Noida, Gurgaon, Dehradun, Jaipur, Ahmedabad, Mumbai, Pune, Bengaluru, Chennai)
(45 years old India's leading manufacturer of HT, LT & Control Panels like 33 kV, 11 kV, PCC, MCC, MDB, VFD & Soft Starters, Draw-out panels, iMCC, APFC & Hybrid solution, PLC & SCADA s, DB's, sandwich bus ducts, rising mains, cable trays, raceways.
EPC Solutions: 11KV/33KV/66KV Switchyard, sub station, external & internal electrical contracts, MEP contracts.
Contact us : marketing@advancepanels.com, customercare@advancepanels.com,
Mob. : 9350290804, 8377000515

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

द्वारा प्रायोजित

भारत नाम सम्मान (कई अवार्ड से सम्मानित)
विश्व भर में

संगीत : दिलीप सेन (प्रख्यात संगीतकार)
गायन : मोहम्मद सलामत (पुरुष),
रेखा राव, अर्चना जैन (महिला)
लेखिका : लता हया

अब हो रहा है भारत में पहली बार
भाषाओं में अनुवाद

* मराठी	* गुजराती	* राजस्थानी	* बांग्ला	* आसामीज
* मणिपुरी	* हरियाणवी	* गढवाली	* भोजपुरी	* पंजाबी
* नागामीज	* तामील	* कन्नड़	* मलयालम	* उड़िया
* तेलुगु	* सिंधी	* झारखंडी	* अवधी	

एक दिन हर भाषा में बोला जाएगा
अपने देश का नाम केवल 'भारत' INDIA नहीं

भारत को केवल **BHARAT** ही बोला जाए **INDIA** नहीं

साथ दें - सहयोग करें - मार्गदर्शन दें

निवेदक
बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व संपादक

For Donation
सहयोग हेतु

Mahavir Jayanti – Towards Enlightenment & Inner Peace

RSM Astute Consulting Group

- RSM Astute Consulting Group, along with its affiliates (together referred as 'RSM India'), has been ranked amongst **India's top 6 accounting, tax and consulting groups** [International Accounting Bulletins]
- Indian member of **RSM International,** the world's 6th largest accounting, tax and consulting network with global revenue of US$ 9.4 billion (Rs. 78,000 crores)
- Founded by Dr. Suresh Surana, the Group is one of the prominent Jain groups in the **Knowledge Business**
- Core services include Internal Audits & Risk Advisory, Corporate Tax & GST, IT Systems Assurance & Solutions and Operations Consulting
- Clients include several large Indian groups, multinational corporations and first-generation entrepreneurs

Founded
1985

Personnel
3,000+

India offices
13

6th Largest Accounting, Tax & Consulting firm

Mumbai Offices

Nariman Point: 8th Floor, Bakhtawar, 229, Nariman Point, Mumbai - 400 021

Andheri: 3rd Floor, Technopolis Knowledge Park, Mahakali Caves Road, Andheri (E), Mumbai 400 093

Tel: (91-22) 6121 4444 / 6108 5555 **Fax:** (91-22) 6108 5556 **Emails:** emails@rsmindia.in **URL:** www.rsmindia.in

Offices: New Delhi (NCR) * Chennai * Kolkata * Bengaluru * Surat * Hyderabad * Ahmedabad* Gandhidham * Pune * Jaipur * Vijayanagar * Navi Mumbai

RSM

अगला अंक
जून २०२४

तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी जन्म पर्व
१४ जून

श्वेताम्बर जैन दिगम्बर
जैन एकता' से ही जैन समाज का विकास व सम्मान बढ़ेगा
मिल कर कहें हम-सब जैन हैं

BASANTILAL SANCHETI JAIN
Mob. 098199 76662

Prathmesh Gold
Specialist in Bangles
204, Golden Plaza, 2nd Floor, 93/95, Dhanji Street, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400 003
Tel.: +91-22-23468222 / 61832199 / 49117305 / 33527305
E-mail: prathmeshgold92@gmail.com

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

!! ॐ अर्हम् !!
सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य श्री महाश्रमण जी के ६३वें जन्म दिवस
पर कोटि-कोटि वंदन

Prakash Pramod Baid
Director (M.Com., F.C.A.)
Mob : 9830170610

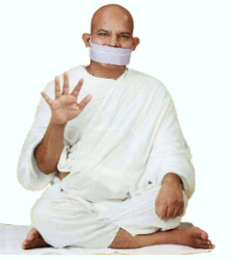

LAUREL
FINANCIAL SOLUTIONS
LAUREL SECURITIES PRIVATE LIMITED
(MEMBER OF NATIONAL STOCK EXCHANGE OF INDIA LTD.)
LAURELMF FINMART PRIVATE LIMITED
(MEMBER OF ASSOCIATION OF MUTUAL FUNDS IN INDIA)
(MUTUAL FUND DISTRIBUTOR)
LAUREL INVESTMENT ADVISERS
(SEBI REGISTERED INVESTMENT ADVISER)
(MEMBER OF BSE ADMINISTRATION & SUPERVISION LTD.)
JAIN BAID & CO
(CHARTERED ACCOUNTANTS)
909 & 910 Diamond Heritage, 16 Strand Road, Kolkata, West Bangal, Bharat- 700001
+91 33 66153334-39 fax: 66153341 Email: prakash_laurel@yahoo.in

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

SIPANI

आचार्य श्री रामेश के सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव

'महत्तम महोत्सव' (50वें दीक्षा वर्ष) के उपलक्ष्य में

सिपानी सेवा सदन - 1

सिपानी समूह ने मानव सेवा के क्षेत्र में एक ऐसा हस्ताक्षर अंकित किया है, जो सदियों तक स्मरण किया जाता रहेगा। समूह ने अपने प्रथम चरण में सिपानी सेवा सदन-1 - बंदापुरा विलेज मडिवाला ग्राम, मर्सुर पोस्ट, अनेकल तालूक, बेंगलूरु - 562106 में 12 वर्ष पूर्व जिस योजना को क्रियान्वित किया उसके अंतर्गत सदन की बहु मंजिला इमारत में 400 मरीजों एवं उनकी देखरेख करने वाले नर्स, कर्मचारी आदि की व्यवस्था रखी गई है।

सिपानी सेवा सदन - 2

सेवा के कदम आगे बढ़ाते हुए सिपानी समूह ने सिपानी सेवा सदन - 2 का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवा दिया है। इस भवन में उपरोक्त के अतिरिक्त 500 मरीजों एवं उनके लिए अवश्यक डॉक्टर, नर्स कर्मचारी एवं एम्बुलेंस आदि की सुविधा उपलब्ध रहेगी।

इसका उद्घाटन फरवरी 2025 से पहले होना संभावित है।

SIPANI

Sipani Seva Sadan-2
Address No. 149/1 & 150/1 Bandapura village, Madivala grama, Marsur post Anekal taluk, Bangalore 562106
Phone number +91 8431 888 000 & +91 9513 361 335

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

२७ वें वर्ष में प्रवेश
वर्ष -२६, अंक ९, मई २०२४

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
जिनागम
समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

१२ अंकों का वार्षिक मूल्य रू.२१००/-

सम्पादक - बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)

- 'जिनागम' में प्रकाशित लेखों/कविताओं/समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्व सहमत होना सम्भव नहीं है।
- 'जिनागम' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-४०१५८०९४
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com
अन्तरताना:- http//www.jinagam.co.in

कृपया विज्ञापन बिल सदस्यता की राशि का भुगतान नीचे दिये गए बैंक में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

श्वेताम्बर दिगम्बर • सम्पादकीय • दिगम्बर श्वेताम्बर

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

जैन एकता के परम समर्थक आचार्य श्री महाश्रमण जी के जन्म दिवस पर सभी पंथ 'संवत्सरी' महापर्व एक साथ मिलकर मनाएं ऐसी मनुहार

अहिंसा प्रिय जैन समाज, एक दूसरे का सहयोगी समाज विश्व के सर्वश्रेष्ठ धर्म को आम चौराहे पर अब लाना चाहिए, ताकि हर कोई अहिंसा धर्म का लाभ लेवे क्योंकि अहिंसा से ही विश्व शांति संभव है। 'जैन एकता' के प्रमुख समर्थक आचार्य श्री महाश्रमण जी का जन्म पर्व १३ मई को तेरापंथ समाज के सभासद स्थाई स्तर पर मनाएगें और प्रण लेंगे की इस वर्ष यानी २०२४ से हम सभी जैन पंथ मिलकर 'संवत्सरी' मनाएं।

जैन एकता है जरूरी
संतों के द्वारा ही होगी पूरी

जैन धर्म के संत केवल जैनों के द्वारा ही नहीं अन्य धर्मावलंबियों के द्वारा भी पूजे जाते हैं कारण यह है कि जैन संत हर प्राणी मात्र को सुखी देखना चाहते हैं, क्योंकि जैन संत अहिंसा के दूत होते हैं 'परस्परोपग्रहो जीवानाम' के भाव को परोसने वाले होते हैं।

मैंने महावीर को नहीं देखा पर महावीर का रूप संत प्रवर के अंदर देखा है तभी तो मैं कहता हूं कि हमारे जैन संत चलते-फिरते तीर्थंकर के स्वरूप हैं, तभी तो विश्व में पूजनीय है।

समय बितता चला जा रहा है, हर इंसान के जीवन के क्षण कम होते जा रहे हैं, समय के अनुसार हम कुछ ऐसे कार्य कर लें ताकि धर्म,समाज के साथ राष्ट्र भी मजबूत हो।

बता दूं कि जैन समाज राष्ट्र को मजबूत करने के लिए आर्थिक समृद्धि तो परोस ही रहा है विभिन्नात्मक Tax के माध्यम से, रही बात धर्म व समाज की तो वह एकता व प्रेम से ही संभव है और एकता को मजबूत करने के लिए हमें 'संवत्सरी' एक ही दिन मनाना जरूरी है और इसके लिए साधु संतों का आशीर्वाद स्नेह ही जरूरी है। निवेदन करता हूं कि जहां कहीं भी हमारे साधु-संत विचरण (विहार) कर रहे हैं उनके चरणों में विनंती करें कि वर्ष २०२४ की 'संवत्सरी' एक साथ मिलकर मनाएं तभी 'जैन एकता' संभव हो सकती है।

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं अभियान की सफलता के लिए 'मैं भारत हूं फाउंडेशन' एक बार फिर से जमीन स्तर पर काम करने का प्रण ले लिया है, 'भारत नाम सम्मान' हिंदी गीत को जल्द ही १९ भारतीय भाषाओं में अनुवाद कर गीत के रूप में प्रस्तुत करने जा रहा है, जिसकी एक प्रति भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भी दी जाएगी ताकि भारतीय संविधान के अनुच्छेद क्रमांक १ से INDIA को विलुप्त करवाया जाए और विश्व के मानचित्र GLOBE में, जहां पर आज भी हमारे देश का नाम INDIA लिखा है वहां पर BHARAT केवल BHARAT ही रहे।

जय जिनेंद्र!

जय भारत!
जय भारतीय संस्कृति!

पूर्ण राष्ट्र की परिभाषा
भाव-भूमि और भाषा

आपका अपना
जैन एकता का सिपाही
बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय
मो.९३२२३०७९०८

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

॥ श्री राजेन्द्रसूरी गुरुदेवाय नमः ॥ ॥ श्री आदिनाथाय नमः ॥ ॥ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः ॥

सौराष्ट्र प्रदेश की परम पावन भूमी मध्ये

श्री पालिताणा महातीर्थ नगरे

राजेन्द्र भवन मध्ये

नवनिर्मित राज ऋषभ विहार का भव्य उद्घाटन एवं

धुम्बडिया (राज.) निवासी शा. बाबुलाल धनराजजी डोडीया गाँधी
श्रीमती सुशीलाबेन बाबुलालजी के

जीवित महोत्सव निमिते त्रिदिवसीय भक्ति महोत्सवे

भावभरा

आमंत्रण

दिनांक : 14 जुन 2024, शुक्रवार से 16 जुन 2024, रविवार

पावन निश्रा

१००८ जिन मंदिर केप्रेणाता
राष्ट्रसंत प.पू. गच्छाधिपति
आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय
लेखेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.
पू. मुनिराजश्री मृगेन्द्रविजयजी म.सा.
आदि मुनिमण्डल

प.पू. गच्छाधिपति आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय
हितेशचन्द्रसूरीश्वरजी
म.सा.पू. मुनिराजश्री दिव्यचन्द्रविजयजी म.सा.
पू. मुनिराजश्री पुष्पेन्द्रविजयजी म.सा.
पू. मुनिराजश्री रुपेन्द्रविजयजी म.सा.
पू. मुनिराजश्री वैराग्ययशविजयजी म.सा.
आदि मुनिमण्डल

प.पू.आ.देव श्रीमद् विजयनरेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. एवं
प.पू. जिनेन्द्रविजयजी म.सा.

प.पू.शासन प्रभावक आ.भ. **श्री हेमेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.** एवं
प.पू.आ.भ. श्री ऋषभचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न
प.पू.मुनिराज श्री पियुषचन्द्रविजयजी म.सा., प.पू.मुनिराज श्री रजतचन्द्रविजयजी म.सा.
प.पू.मुनिराज श्री चन्द्रयशविजयजी म.सा., पू.मुनि श्री जनकचन्द्रविजयजी म.सा.
पू.मुनि श्री जिनभद्रविजयजी म.सा.,

16 JUNE 2024 | SUNDAY

हार्दिक आमंत्रण

आपको शुभ संदेश देते हुए अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव कर रहे है की शत्रुंजय महातीर्थ स्थित राजेन्द्र भवन के विशाल प्रांगण में नूतन धर्मशाला निर्माण करने का अलभ्य लाभ पूर्व जन्म के पूण्योदय से हमारे परिवार को गच्छाधिति प.पू.आ.देवेश ऋषभचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद से प्राप्त हूआ है।

ज्येष्ठ सुदि १०, रविवार दि.१६ जुन २०२४ को नुतन भवन का उद्घाटन होने जा रहा है एवं देवगुरुधर्म की महती कृपा से श्रीमान् बाबुलाल धनराजजी डोडिया गांधी श्रीमती सुशीलादेवी बाबुलालजी के जीवित महोत्सव का मनोरथ मानो साकार होने जा रहा है।

प.पू.गच्छाधिति राष्टसंत आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय हेमेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के पट्टालंकार प.पू.गच्छाधिति आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय लेखेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. एवं प.पू.आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय ऋषभचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के पट्टालंकार प.पू.गच्छाधिति आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय हितेशचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा प्रदान करने की स्वीकृती देकर हमारे परिवार पर महती कृपा की सौधर्मबृहतत्पोगच्छीय प.पू. कलिकाल कल्पतरु श्रीमदविजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. समुदायवर्ति प.पू. गच्छाधिपती आचार्य भगवंत आदि मुनिमण्डल एवं साध्वीवृंद गुरुभगवंतो को विनंती की गई है, अपनी अनुकुलता अनुसार पधारेंगे। आप समस्त श्रीसंघ त्रिदिवसीय भक्ति महोत्सव के पावन अवसर पर पधारकर हमें सेवा का अवसर प्रदान करें।

आईये पधारीये...

स्वागत है आपका

शत्रुंजय मंडन
श्री आदिनाथ भगवान
के चरणो में
भावपूर्वक वंदना...

परम उपकारी गुरुदेव के चरणो में भावपूर्वक वंदन

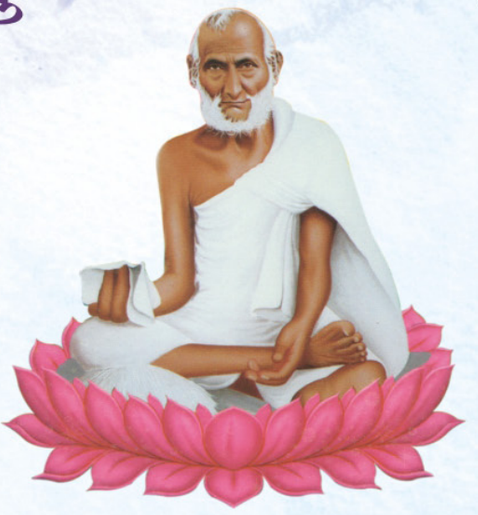

पाट परम्परा को वंदन..

विश्वपूज्य दादा गुरुदेव श्रीमदविजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

चर्चाचक्रवर्ती प.पू.आ.भ. श्री धनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

प.पू.आ.भ. भूपेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

प.पू.आ.भ. यतिन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

प.पू.आ.भ. विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

प.पू.आ.भ. हेमेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

प.पू.आ.भ. रविन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

प.पू.आ.भ. ऋषभचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

वर्तमान गच्छाधिपति प.पू.आ.भ. श्री हितेशचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

राज ऋषभ विहार निर्माता

शा. बाबुलालजी धनराजजी डोडीया गाँधी परिवार

त्रिदिवसीय भक्ति महोत्सव का

मंगलमय कार्यक्रम

प्रथम दिवस

14 जुन 2024 शुक्रवार

श्री पार्श्वनाथ महापूजन : दोपहर 12:39 बजे
भक्ति भावना : रात्रि 8:00 बजे

द्वितीय दिवस

15 जुन 2024 शनिवार

सिद्धचक्र महापूजन : दोपहर 12:39 बजे
भक्ति भावना : रात्रि 8:00 बजे
मातृ पितृ वंदना

तृतिय दिवस

16 जुन 2024 रविवार

उद्घाटन : प्रातः 9.00 बजे
गुरुपद महापूजन : दोपहर 12:39 बजे
रात्रि भक्ति भावना

महोत्सव स्थल : राजेन्द्र भवन तलेटी रोड,
पालीताणा, जि. भावनगर, गुजरात.

♦ आयोजक एवं निमंत्रक ♦

शा. बाबुलालजी धनराजजी डोडीया गाँधी
श्रीमती सुशीलाबेन बाबुलालजी डोडीया गाँधी
पुत्र-पुत्रवधु : जयंत-ममता, शैलेष-मंदाकिनी
पौत्र-पौत्री : कुशी, कियाश, झील, क्रिश
बेटा-पोता : धनराजजी हरजीजी डोडीया गाँधी परिवार

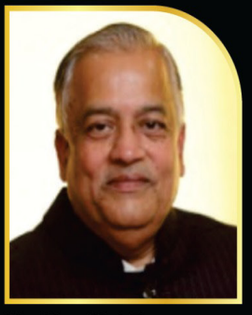

with
BEST COMPLIMENTS
सत्यमेव जयते
INDORE INSTITUTE OF LAW
INDORE INSTITUTE OF LAW®
(An Autonomous Institute, Affiliated to DAVV & Bar Council of India, New Delhi)
First & Only
Law College in India
with
NAAC A+ GRADE
AUTONOMOUS STATUS
— In it's First Cycle —
Mr. Kantilal Bam
Chairman,
Icon Education Society
Dr. Akshay Kanti Bam
Chairman,
Indore Institute of Law
Rau Pithampur Road, Opp. IIM, Indore, MP, Bharat - 453331
Call : 91- 09977019777 • Email : indoreinstituteoflaw@gmail.com

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.maimbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

षष्टिपूर्ति (६३वाँ) जन्म पर्व

तेरापंथाचार्य महाश्रमण जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

जन्म	: वि.सं. २०१९, वैशाख शुक्ला नवमी (१३ मई १९६२) सरदारशहर
जन्म नाम	: मोहनलाल दुगड़
पिता	: स्व श्री झूमरमलजी दुगड़
माता	: स्व. श्रीमती नेमादेवी दुगड़
दीक्षा	: वि.सं.२०३१ वैशाख शुक्ला चतुर्दशी (५ मई १९७४) सरदारशहर (आचार्य तुलसी की अनुज्ञा से मुनि सुमेरमलजी 'लाडनूं' द्वारा)
अन्तरंग सहयोगी	: वि.सं. २०४२, माघ शुक्ला सप्तमी (१६ फरवरी १९८६) उदयपुर में
सांझपति	: वि.सं. २०४३, वैशाख शुक्ला चतुर्थी (१३ मई १९८६) ब्यावर में
महाश्रमण पद	: वि.सं. २०४६, भाद्रव शुक्ला नवमी (९ सितम्बर १९८९) लाडनूं में
युवाचार्य पद	: वि.सं. २०५४, भाद्रव शुक्ला द्वादशी (१४ सितम्बर १९९७) गंगाशहर में
आचार्य पदाभिषेक	: वि.सं.२०६७, द्वितीय वैशाख शुक्ला दशमी (२३ मई २०१०) सरदारशहर में
महातपस्वी	: वि.सं. २०६४, भाद्रपद शुक्ला पंचमी (१७ सितम्बर २००७) उदयपुर में
शान्तिदूत	: वि.सं. २०६८, ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी (२९ मई २०११) उदयपुर में
श्रमण संस्कृति उद्गाता	: वि.सं.२०६९, आश्विन कृष्णा चतुदर्शी (१४ अक्टूबर २०१२) जसोल में
अहिंसा यात्रा शुभारम्भ	: वि.सं. २०७१, मार्गशीर्ष बदी तृतीया (९ नवम्बर २०१४) दिल्ली से
प्रथम विदेश यात्रा	: वि.सं.२०७२, चैत्र शुक्ला एकादशी (३१ मार्च २०१५) वीरगंज (नेपाल)
प्रकाशित पुस्तकें	: आओ हम जीना सीखें, दुःख मुक्ति का मार्ग, क्या कहता है, जैन वाङ्मय, संवाद भगवान से (भाग-१, २), शिक्षा सुधा, शेमुषी, मेरे गीत, धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, महात्मा महाप्रज्ञ, सुखी बनो-संपन्न बनो-विजयी बनो, रोज की एक सलाह, शिलान्यास धर्म का, अदृश्य हो गया महासूर्य....

।। ओम् शांती ।।

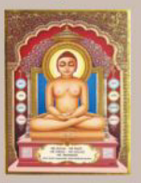

वर्तमान शासन नायक अंतिम तीर्थेश १००८

श्री महावीर स्वामी

जन्म कल्याणक महोत्सव की शुभकामनाएँ !

PREMIUM DESIGNER JEWELLERY IN

GOLD & DIAMOND

१९८४ पासून

शिंगवी ज्वे ल र्स

by

सहगामिनी®

— A FOREVER COMPANION —

महावीर चौक

ICICI बँकेजवळ, लिटल फ्लॉवर शाळेजवळ, होटगी रोड, सोलापूर. फोनः 2315409

✆ 9090 43 3030

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

निस्पृह व्यक्तित्व - आचार्य श्री महाश्रमण

एक अन्तरराष्ट्रीय विश्वविख्यात संस्थान द्वारा पूरी दुनिया के सभी देशों के सर्वेक्षण के बाद यह आंकलन प्रसारित किया गया कि विश्व में करीब ३६०० से ऊपर विभिन्न तरह की धार्मिक मान्यता, यानि अलग-अलग तरह की उपासना पद्धति वाले धर्म व विधियां प्रचलित हैं।

जैन धर्म: एक अन्य पक्ष यह है कि ईसाई, मुस्लिम, सनातन (हिन्दू), जैन, सिख, ब्राह्मणों आदि-आदि अनेकों बड़े धर्मसंघ हैं, जिनकी मान्यता मानने वाले करोड़ों की संख्या में हैं, उनके अनुयायी भी विश्व के अनेक देशों में फैले हुए हैं, इन्हीं में एक है जैनधर्म, जिसकी जड़ें हजारों-लाखों वर्षों पहले नहीं, बल्कि करोड़ों वर्ष पहले से जमी हुई है एवं जैन आज दुनिया के कई देशों में फैले हुए हैं। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव (आदिनाथ) हुए थे, जिनकी तो काल-गणना भी मुश्किल है, इसके अन्तिम तीर्थंकर महावीर २६२३ वर्ष पहले हुए थे, उस समय इस धर्म का नाम श्रमण धर्म व जिन धर्म प्रचलित था, जो बाद में जैन धर्म के नाम से सुविख्यात हो गया।

महाश्रमण जी बचपन में

तेरापंथ का प्रादुर्भाव: आचार्य रूघनाथजी जिनके एक शिष्य थे मारवाड़ प्रान्त के कंटालिया ग्राम के श्री भीखणजी। प्रतिभा के धनी, विद्वान व आगम शास्त्रों के ज्ञाता संत भीखणजी की किन्हीं तात्विक मान्यताओं पर वाद-विवाद से अपने गुरू से मतभेद हो गया, तब उन्होंने करीब २६४ वर्ष पहले सन १७६० में बगड़ी (पाली जिला) में उनसे सम्बन्ध-विच्छेद कर अपना अलग सम्प्रदाय स्थापित किया जो आज 'तेरापंथ' के नाम से पूरे भारत में सुविख्यात है।

जैन धर्म का विलक्षण संघ : तीर्थंकर महावीर के बाद जैन धर्म की यह एक विलक्षण घटना थी 'तेरापंथ' धर्मसंघ का उदयमान होना, यह किसी एक व्यक्ति की महत्वाकांक्षा का परिणाम नहीं था, परन्तु जैन आगमों व सूत्रों में उल्लिखित, परम्पराओं व सिद्धांतों को विकृत व कलुषित होने से बचाने एवं उनको पुनः प्रतिष्ठापित करने का महत्वपूर्ण प्रयास था। संत भीखण जी ने यह कार्य किया, अतः वो नवोदित तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम प्रवर्तक आचार्य बने। अन्य सम्प्रदायों में प्रचलित मान्यताओं से हटकर इसमें एक आचार्य यानि पूरे धर्मसंघ का एक ही सिरमोर आचार्य हो, यह सिद्धान्त बना।

वर्तमान में
आचार्य महाश्रमण जी

इतिहास साक्षी है कि युवा सन्त तुलसी तेरापंथ धर्मसंघ के सर्वाधिक प्रभावी व क्रांतिकारी आचार्य साबित हुए, ऐसे महान आचार्य की तेरापंथ धर्मसंघ को सबसे बड़ी देन है करीब १५० मुनि सन्तों में से १७ वर्षीय मुनि मुदित के रूप में एक रत्न की खोज। यह उपरोक्त भूमिका इसी रत्न रूपी मुनि मुदित तक पहुंचने की कहानी है, जो कालान्तर में बना तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान ११वें पट्टधर आचार्य महाश्रमण, निस्पृह व्यक्तित्व के धनी महाश्रमण।

बचपन से ही अध्यात्म की ओर: मोहन का जन्म सरदारशहर कस्बे में श्री झुमरमलजी दुगड़ की भार्या श्रीमती नेमा देवी की कुक्षी से दिनांक १३ मई १९६२ में हुआ। आप चार भाई व तीन बहिनें थी। आपकी माता धार्मिक प्रवृति की महिला थी तथा साधु-साध्वियों की आराधना-सेवा में प्रायः जाती-आती थी। मोहन पर अपनी माता की धार्मिक वृत्ति का काफी प्रभाव पड़ा, अतः आपका भी मात्र ८ वर्ष की उम्र से ही साधु-साध्वियों की सेवा-आराधना में काफी झुकाव हो गया। सन १९७४ का मुनिश्री सुमेरमलजी (लाडनूं) का चातुर्मास सरदारशहर में था, यह एक बड़ा ही सुखद संयोग बना, मुनिश्री ने तो उनकी धार्मिक वृत्ति का खूब सिंचन किया।

बालक मोहन का अध्यात्म की ओर झुकाव तो बढ़ता ही गया, इनकी समझने व कंठस्थ करने की प्रवृत्ति काफी गजब की एवं समृद्ध थी। कहना नहीं होगा कि मात्र कुछ माह में मोहन ने पच्चीस बोल, तेरह द्वार, बावन बोल, गतागत, बासठिया, लघुदण्डक, पाना की चर्चा आदि सहित गाथा आदि थोकड़ों को कंठस्थ कर लिया एवं वापस दोहरा-दोहरा कर उनका शुद्ध उच्चारण भी सीख लिया, इसके साथ ही अपने शैक्षणिक विद्यालय में भी बराबर जाता था एवं अपनी पाठ्य पुस्तक पढ़ने व समझने में भी अव्वल दर्जे का छात्र था।

निर्णायक १२वां वर्ष : किशोर मोहन का १२वां वर्ष काफी निर्णायक साबित हुआ, पहले उसके मन में एक दुविधा थी कि मुझे गृहस्थ में रहना चाहिये या साधु बनना चाहिये, वो स्वयं ही अपने संस्मरणों में बताते हैं कि सन् १९७३ की संवत्सरी के दूसरे दिन आचार्य कालुगणी का निर्वाण दिवस था। सम्भवतः एक स्वर्गस्थ आचार्य जो किसी देवलोक में स्थित थे, उन्होंने भी उसकी प्रतिभा को जान लिया था कि इसके माध्यम से मेरे तेरापंथ धर्मसंघ का और अधिक शुभ भविष्य उजागर होने वाला है, तो उन्होंने उसे अपना भावी पट्टधर मानकर उसकी मानसिकता में ऐसा प्रवेश किया और उसने साधु जीवन स्वीकार करने का मानसिक निश्चय कर लिया एवं अपना हर कदम उस ओर बढ़ाने लगा।

स्कूली शिक्षा भी शानदार तरीके से ग्रहण करते हुए मोहन ने धार्मिक शिक्षा व आराधना हेतु दिन-प्रतिदिन प्रगति करता गया। मुनि सुमेरमलजी का सरदारशहर में होने वाला चातुर्मास उसके जीवन का निर्णायक मोड़ आ गया, साथ के अन्य मुनि भी उसे सिंचित कर ही रहे थे, उनके बड़े भाई श्री सुजानमलजी द्वारा दीक्षा की अनुमति के पश्चात **शेष पृष्ठ १६ पर ...**

Vibhooshit Decor

Events | Exhibitions | Conferences

We Make It Happen

ONE STOP DESTINATION FOR RELIGIOUS EVENTS

EVENTS SERVICES

Planning | Conceptualizing | Designing | Decoration

RELIGIOUS EVENTS

Chaturmas Mahotsav| Jinalay Pran Pratishtha Mahotsav
Diksha Mahotsav | Samuhik Aayaambil Oli | Samuhik Updhan Taap
Samuhik Updhan Maal | Samuhik Varshitap Parna | Jinalay Salgira Utsav

RECENT EVENTS

મુમુક્ષુ. તત્વ ભાઇ દીક્ષા મહોત્સવ. નિશ્રા - પૂ.આ. શ્રી ઉદયવલ્લભસૂરી મ. સા.

પદ્મભૂષણ જૈનાચાર્ય વિજય રત્નસુંદરસૂરીજી મહારાજ સાહેબ ચાતુરમાસ.

મુમુક્ષુ. સેતુકભાઇ દીક્ષા મહોત્સવ. નિશ્રા - પૂ.આ. વિજય શ્રેયાંશપ્રભસૂરિ મ. સા.,પાલીતાણા.

શ્રી જયઘોષ સૂરીશ્વરજી મહારાજા સમાધિ મંદિર પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ,
રિવરફ્રન્ટ તથા બોપલ આંબલી, અમદાવાદ.

સામુહિક ઉપધાન તપ આરાધના નિશ્રા - પૂ.આ. શ્રી ઉદયવલ્લભ મ. સા., અમદાવાદ.

Hardik Shah
+91 96870 84745

Mohil Chotaliya
+91 84690 69996

info@vibhooshitdecor.com
@Vibhooshit_decor

Vibhooshit Decor Bh. The August Apartment,
Opp. Science City, Off. S P Ring Road,
Bhadaj, Ahmedabad - 380060

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

जय आचार्य महाश्रमण

पृष्ठ १४ से ... जल्दी ही दीक्षा का एक ऐसा शुभ मुहूर्त दृष्टिगोचर हो गया।

दीक्षा का निवेदन : उस समय आचार्यश्री तुलसी दिल्ली में अणुव्रत विहार (भवन) में प्रवासरत थे।

मर्यादा महोत्सव के अवसर पर मोहन ने प्रवचन पंडाल में खड़े होकर अपनी उत्कृष्ट भावना ज्ञापित की, तब आचार्यप्रवर ने उसे दीक्षा की आज्ञा प्रदान कर दी, उनके परिवार की सरदारशहर में ही दीक्षा दिलाने का ज्यादा मानस था, अतः उनकी भावना को देखते हुए आचार्य तुलसी की आज्ञा से मुनि श्री सुमेरमलजी (लाडनूं) ने ५ मई १९७४ को सरदारशहर में गधैयाजी के नोहरे के प्रांगण में दो संतों को दीक्षा प्रदान कर दी एवं किशोर मोहन दूगड़ बन गया मुनि मुदित, उनके साथ अन्य थे जो पिछले अनेक वर्षों से मुनि सुमेरमलजी की सेवा में ही विरचित थे। दीक्षा के बाद मुनि मुदित का एकमात्र साथ रहा अध्यात्म ग्रन्थों का पाठन, कंठस्थ करना एवं अपनी स्वयं की साधना करना।

अनुपम मेधा : मुनि मुदित की मस्तिष्क ऊर्जा व स्मृति शक्ति काफी प्रखर थी जिसकी वजह से वह एक दिन में तीस से अधिक श्लोक याद कर लेते थे। पूर्व में याद किये हुए ज्ञान का पुनरावर्तन तो चलता ही था, शुद्ध व स्पष्ट उच्चारण की तरफ भी विशेष ध्यान रहता था। चातुर्मास की समाप्ति के बाद आचार्य श्री तुलसी सन् १९७५ को मर्यादा महोत्सव हेतु श्रीडूंगरगढ़ पधारे, तब मुनिश्री सुमेरमलजी भी उनके दर्शनार्थ वहां पधारे तब नवदीक्षित संत भी सभी साथ थे, जहां उन्होंने गुरूचरणों में समर्पित कर दिया। मुनि मुदित अगले दो वर्ष मुनिश्री सुमेरमलजी के साथ ही रहे, उसके बाद एक चातुर्मास आचार्यप्रवर के साथ सरदारशहर में किया एवं बाद में मुनि रूपचंदजी (संघमुक्त) के साथ जयपुर चातुर्मास के बाद उन्हीं के साथ दिल्ली पधार गये।

विशिष्ट घटना कर्म : तेरापंथ धर्मसंघ में घटित होने वाले एक विशेष घटनाकर्म का कोई पूर्व आभास नहीं देते हुए सन १९७९ के राजलदेसर मर्यादा महोत्सव पर आचार्य श्री तुलसी ने सर्वजनता को रोमांचित करते हुए अपने अति विद्वान संत श्री नथमलजी को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करते हुए धर्मसंघ का युवाचार्य घोषित कर दिया, इससे पूर्व गंगाशहर में मुनि नथमलजी को ''महाप्रज्ञ'' अलंकरण से विभूषित किया था। युवाचार्यपद पर मनोनीत करने के बाद उनका नया नामकरण कर दिया गया ''युवाचार्य महाप्रज्ञ''।

संघनिष्ठा का महत्व : मर्यादा महोत्सव के बाद आचार्यश्री तुलसी युवाचार्य के साथ दिल्ली पधारे एवं कुछ दिन दिल्ली में विराजकर पंजाब की तरफ विहार कर गये एवं युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ जी अणुव्रत भवन में विराज रहे थे। मुनि रूपचंदजी अपनी कुण्ठा के आवेग को रोक नहीं सके एवं तेरापंथ धर्मसंघ से निकलने का निर्णय ले लिया, अब तक देखा यह गया है कि जब सिंघाड़पति धर्मसंघ छोड़ता है या निष्कासित किया जाता है तो उनके साथ के अन्य सभी संत प्रायः उसी के पास रहने का निश्चय करते हैं, क्योंकि सिंघाड़पति के साथ वर्षों साथ रहने से उनका भावनात्मक लगाव हो जाता है। मुनि रूपचंदजी के साथ इस अवसर पर अन्य संत तो उनके साथ ही रहे, परन्तु अकेले मुनि मुदित ने कहा कि वह उनके साथ नहीं जाकर तेरापंथ धर्मसंघ में ही रहना चाहेंगे।

मुनि मुदित की छवि को चार चांद : अपने इस शानदार कर्तृत्व की वजह से मुनि मुदित का नाम काफी उजागर हो गया। युवाचार्यश्री ने भी इनको खूब सराहा एवं उनकी दृष्टि में मुनि मुदित के प्रति कुछ विशेष भाव जागृत हो गया और कहा कि यह मुनि काफी कर्तव्यनिष्ठ व संघनिष्ठ है, उन्हें उसके भविष्य में कुछ संभावनाएं नजर आने लगी, इन्हीं संभावनाओं ने मुनि मुदित को टेढी-मेढी गलियों से निकालकर राजपथ पर आरोहित कर दिया।

कर्तव्य बोध : मुनि मुदित इधर-उधर की अन्यान्य बातों पर बिलकुल भी ध्यान नहीं देते थे एवं पूरा समय अध्ययन, उपासना व अन्य संघ के कार्यो में बांट रखा था एवं उसी अनुरूप अपने को पूरा नियोजित कर रखा था। उपरोक्त संघनिष्ठा के गहरे कर्तृत्व से वो आचार्यप्रवर व युवाचार्यश्री दोनों की ही नजर में काफी ऊंचे उठ गये, अब उनका ध्यान विशेष तौर से मुनि मुदित पर केन्द्रित हो गया, इस तरह समय के साथ-साथ उनकी विशेषताएं उजागर होने लगी।

दो विशेष घटनाएं : सन १९८७ के दिल्ली चातुर्मास हेतु आचार्यप्रवर ससंघ जयपुर से दिल्ली पधार रहे थे। मैं स्वयं इस यात्रा में काफी समय स्वयं-सेवक के रूप में साथ ही रहा, साधु-साध्वियां किसी विशेष कार्यो हेतु मुझे स्मरण कर लेते थे। पालम हवाई अड्डे के पास आते-आते कुछ बाल साधुओं ने हवाई अड्डा देखने की इच्छा मुझसे प्रकट की। मैंने आचार्यप्रवर को संतों के मानस की बात बताई तो उन्होंने अनुमति प्रदान कर दी। ६-७ बाल साधु इस हेतु मेरे साथ जाने को उत्सुक व प्रसन्न थे, जब मुनि मुदित से इस सम्बन्ध में कहा गया तो उन्होंने आचार्यश्री के सेवा में साथ ही रहने की बात कहकर हवाई अड्डा देखने जाने हेतु इन्कार कर दिया।

चातुर्मास में पूरा संघ अणुव्रत भवन में विराज रहा था, उन्हीं बाल संतों ने मुझसे अप्पु घर देखने की इच्छा प्रकट की, वो स्वयं तो आचार्यप्रवर से आज्ञा लेने में संकोच कर रहे थे, अतः मुझे आगे किया, मैंने जब निवेदन किया तो आचार्यश्री ने मेरी तरफ टेढी आंख से देखा, मानो कुछ रूष्ठ से हों, संत दूर से छिपकर देख रहे थे, मैं तो हट ही गया, संतगण भी तुरन्त इधर-उधर हो गये, सम्भवतः मधुकर मुनि के परामर्श या कहने से **शेष पृष्ठ १७ पर...**

Partner's

Karni Soft Solution Pvt. Ltd.
Aligning IT to BUSINESS

IBM infor

Services Offered

- ERP
- SCM
- CRM
- BI
- IBP Solution
- Digitalization
- Customer & Supplier Portal

Contect Us:
Delhi Office: F-6/10, Krishna Nagar, 3rd Floor
New Delhi-110051 (India).
Kolkata Office: 1, Chandney Chowk Street, 1st Floor, B-Block, Room No.7, Kolkata-700072
Ph.: +91 99710 96596
Email: Umedsethia@karnisoftsol.com
Website: www.karnisoftsol.com
Social Media: Facebook: Karni-Soft-Solutions-Pvt-Ltd
Twitter: https://twitter.com/karnisoftsol

पृष्ठ १६ से ... मुझे एक-दो दिन बाद निर्देश दिया गया कि इन्हें अप्पु घर दिखा लाओ, परन्तु समय कम ही लगाना, तब मेरे साथ ७-८ सन्त हो गये एवं जब मुदित मुनि से पूछा गया तब अपना पाठ पूरा करने का कहकर साथ जाने से इन्कार कर दिया, इस पर कुछ साथी संतों ने हल्का सा व्यंग्य भी कस दिया।

इन उपरोक्त दोनों घटनाओं से पाठक समझ सकते हैं कि मुदित मुनि अपने कार्यों व कर्त्तव्यों के प्रति कितने जागरूक थे एवं इस तरह के अन्य कार्यों में अपना समय बिलकुल भी नहीं देना चाहते थे। अप्पु घर से वापसी आने पर संतों ने आचार्यप्रवर का दर्शन किया तो मुदित मुनि को नहीं देखकर उन्होंने मुझसे इस बारे में पूछा भी, यह ऐसी घटनाएं थी जिस वजह से मुनि मुदित धीरे-धीरे आचार्यप्रवर की नजरों में प्यारे लगने लगे।

आचार्य सेवा का अवसर : उस काल में सुबह शाम साध्वियां सभी पंचमी हेतु ठिकाने से बाहर खुली जगह में जाते थे तब पानी का पात्र अपना-अपना साथ ले जाते थे, आचार्य तुलसी का पानी का पात्र वर्षों से मुनि श्री मधुकरजी ले जाते थे। घटना ८ मई १९८४ की लाडनूं की है जिस दिन मुनि मुदित का जन्म दिन भी था, आप २२ वर्ष के पूरे हो रहे थे, उस दिन आचार्यश्री तुलसी ने मुनि मुदित को निर्देश दिया कि अब से पानी का पात्र तुम लेकर मेरे साथ जाया करो। आचार्यों की सेवा का यह एक विशेष अवसर था जो उनको जन्मदिन के उपहार के रूप में मिल गया, इस वजह से मुनि मुदित को आचार्य व युवाचार्य के साथ निश्चित रूप में दोनों समय साथ रहने व उनकी सेवा व बात करने का वरदान सा मिल गया, इससे कुछ नई बातें जानने-सुनने का अवसर व नये श्रावकों से परिचय बढ़ने का भी सहज ही नये-नये अनुभव प्राप्त करने का अच्छा मौका मिलता था।

जोधपुर चातुर्मास में आचार्यप्रवर के प्रातःकालीन प्रवचन से पहले का प्रवचन देने का मुदित मुनि को निर्देश दिया गया, इस तरह पूरे चातुर्मास काल में उन्होंने आगम आधारित विषयों पर अपना प्रवचन देते, उससे उनकी ज्ञान के विकास का बेहतर अवसर व भाषण कला के अधिक विकास व सुधार का सहज अवसर मिला, बाहर आये श्रावकों से वार्ता करने व अन्य संघीय जानकारी व परिचय बढ़ाने का अन्यान्यों की अपेक्षा विशेष अवसर मिलने लगा।

युवाचार्यश्री के सहयोगी : ६ फरवरी १९८६ उदयपुर मर्यादा महोत्सव के अवसर पर आचार्यप्रवर ने फरमाया कि युवाचार्य महाप्रज्ञ को अनेक तरह के कार्य करने होते हैं, अतः उन्हें एक सक्षम सहयोगी की अत्यन्त अपेक्षा है, अतः इस हेतु मुदित मुनि को उनका अन्तरंग सहयोगी रूप में नियुक्त कर रहा हूं एवं वो युवाचार्यश्री के हर कार्य में पूर्ण **शेष पृष्ठ १८ पर...**

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १७ से... सहयोगी रहेंगे, इस दायित्व से मुदित मुनि का कार्य क्षेत्र काफी बढ गया, वो पहले आत्मकेन्द्रित ज्यादा थे, अपने में ही मस्त व व्यस्त रहने वाले को अब व्यापक क्षेत्र में काम करने का अवसर मिलने लगा, इससे उनके अनुभव व सम्पर्क का विस्तार होने लगा।

सांझपति का सम्मान : दीक्षा लेने के अनेकों वर्षों तक साधु-साध्वियों को किसी अन्य वरिष्ठ साधु के साथ रखा जाता है, जब वह स्वयं ही काफी योग्य व अन्य योग्यताएं प्राप्त कर लेता है तो उसे सिंघाड़पति/सांझपति बना दिया जाता है। १३ मई १९८६ में ब्यावर में मुनि मुदित को भी यह सम्मान प्राप्त हो गया, यह आचार्य द्वारा उनका विशेष अंकन है, जो उन्हें प्राप्त हुआ।

संकलित चित्र

महाश्रमण पद से विभूषित : तेरापंथ धर्मसंघ में इससे पूर्व कोई भी सन्त श्रमण (साधु) से महाश्रमण पद पर सम्मानित नहीं हुआ था, यह पहला अवसर था जब गुरू तुलसी ने अपने शिष्य की विशेष योग्यता का अंकन करते हुए अपने स्वयं के जन्म दिवस पर ९ सितम्बर १९८९ को लाडनूं में इन्हें महाश्रमण पद से विभूषित किया। मुनि मुदित की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए प्रफुल्लित मन से एक विशेष नियुक्ति-पत्र प्रदान किया गया। अध्यात्म निष्ठा, साधना, शिक्षा, सेवा, विमम्रता, संघनिष्ठा, गंभीरता आदि विशेषताओं को ध्यान में रखकर मैं मुनि मुदित कुमार को 'महाश्रमण' के पद पर नियुक्त करता हूं।

- धर्मसंघ में युवाचार्य के बाद इनका स्थान रहेगा।
- यह युवाचार्य के कार्य में सतत सहयोगी रहेगा।
- युवाचार्य की तरह साध्वियों, समणियों को पढ़ाना इसके कार्यक्षेत्र में रहेगा।
- आहार पानी समुच्चय में होगा।
- सब प्रकार का विभागीय कार्यो व संघीय बोझ की पांती से मुक्त रहेगा।

- आचार्य तुलसी
९-९-१९८९

समस्त जैन पंथों की एकमात्र पत्रिका व 'जैन एकता' के लिए प्रतिबद्ध 'जिनागम' के प्रबुद्ध पाठक अवलोकन करें कि एक गुरू ने अपने विनीत शिष्य हेतु उन सब उच्च मानवीय गुणों वाले शब्दों को प्रयुक्त करके उसे सम्मानित किया। अपने प्रवचन में आचार्य तुलसी ने उनको अनेक करणीय कार्यों का निर्देश देते हुए कहा कि वह संघीय कार्य करने हेतु अपना विकास करे। उपस्थित दर्शकों ने उनकी भावना व भावी संकेत को खूब अच्छी तरह समागत कर लिया एवं मुनि मुदित महाश्रमण के रूप में सबकी नजरों में अनेकों पायदान ऊपर उठ गये।

स्वतंत्र यात्रा : मुनि मुदित अपने शुरू के वर्षों में केवल स्वयं के अध्ययन में केन्द्रित ज्यादा रहते थे। न तो हवाई अड्डा देखने गये और न ही अप्पू घर का आकर्षण उन्हें खींच पाया। तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी सन १९८७ के चातुर्मास में अणुव्रत भवन पधारे। प्रायः सभी सन्त उन्हें देखने व कार्यक्रम में नीचे हॉल में आ गये, परन्तु मुनि मुदित प्रथम तल के अपने ही कक्ष में अपने अध्ययन में केन्द्रित रहे। आत्म संयम का यह विशेष उदाहरण है, यद्यपि युवाचार्यश्री के साथ जुड़ने में अन्य कार्यो में भी अपने आपको नियुक्त करने लगे थे।

आचार्य तुलसी एक प्रयोगधर्मी व व्यावहारिक प्रशिक्षण देने वाले महापुरूष (गुरू) थे। उन्होंने मुदित को हर विद्या में पारंगत करने हेतु उनकी स्वतंत्र यात्रा का चिंतन करते हुए उन्हें अपनी जन्मभूमि सरदारशहर व आसपास के क्षेत्रों में विचरण हेतु भेजा, अनेकों संतों-सतियों के साथ करीब ५० दिनों में १५-२० क्षेत्रों में गये, वहां प्रवचन दिया स्थानीय लोगों से परिचय किया तथा उन्हें अध्यात्म की रश्मियों से आप्लावित करके सभी को संतुष्ट किया, अनेकों अनुभव प्राप्त किया।

यात्रा के अन्त में खाटू में जब दर्शन किये तो युवाचार्य महाप्रज्ञ उनके स्वागत हेतु पण्डाल से बाहर पधारे तथा आचार्यश्री भी पट्ट से उतरकर अपने प्रिय शिष्य को गले से लगाकर उसके प्रति खूब प्रमोद भावना व आनन्द व्यक्त किया। ऐसा लग रहा था मानो ५० दिनों बाद नहीं बल्कि ५० माह बाद मिल रहे हों, दोनों ओर ही ऐसा आभास हो रहा था। श्रावकगण भी इस आनन्दमय

संकलित चित्र

मिलन समारोह को देखकर अत्यन्त प्रसन्नता अनुभव कर रहे थे।

अकल्पनीय उदाहरण : सन १९९० के चातुर्मास के बाद आचार्यश्री व युवाचार्यश्री ने महाश्रमणजी को बाड़मेर-सोजत आदि जिले की स्वतंत्र यात्रा हेतु भेजने से अत्यन्त ही भावपूर्ण विदाई दी, जब लम्बी यात्रा के बाद वापस लौटे तो उस तरह उनका हृदयंगम दृष्य वाला स्वागत किया, अपने उदगारों के मध्य आचार्य श्री तुलसी ने महाप्रज्ञजी से प्रश्न किया 'इस श्रमशील अनुपम यात्रा का इन्हें क्या उपहार प्रदान करू'? चारों तरफ सन्नाटा, कोई भी कुछ बोलने की स्थिति में नहीं था। उसका उत्तर भी स्वयं ही दिया जो अकल्पनीय व अनोखा था। उन्होंने कहा कि आचार्य भिक्षु ने अपने शिष्य भारमलजी से कहा कि तुम पर कोई इल्जाम (आरोप) लगाये, चाहे वो मिथ्या ही हो, फिर भी तुम्हें तेले की तपस्या करनी होगी, अब में भी इसे ऐसा ही कुछ अनोखा देने वाला हूँ।

चारों तरफ सन्नाटा पसर गया, उपहत करते-करते कौन सा दण्ड देंगे। गुरूदेव बोले महाश्रमण! तुम्हारे पर भी कोई व्यक्ति सुविधावाद अपनाने या उसकी तरह का अपनी तरफ से कोई ऐसा आरोपित करे तो तेला जैसी कड़ी तपस्या तो नहीं, परन्तु तीन दिन लगातार तीन-तीन घण्टे का ध्यान करना होगा, क्या कुछ ऐसा हुआ है?

शेष पृष्ठ २० पर...

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य श्री महाश्रमण जी के ६३ वें जन्म दिवस पर
कोटि-कोटि वंदन

Khemchand Mukim Mob :9999102249
Vidit Samkit

SRIMATI GEMS & JEWELS

100% buy back policy*
*T&C apply

A wide variety of Diamond, JADAU, Gold Jewellery and exclusive SILVER FURNITURE at wholesale prices.

Authentic Jewellery is your right and our commitment...

4835-36,24 Ansari Roach Darya Garth New Delhi-110002
Website: sgiindia.com, E-mail: sgi.delhi@gmail.com
Contact: 8588977777, 011-23254470, 23244472

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के ६३वें जन्म पर्व पर शत् शत् नमन

विजयराज सुराणा जैन
9868807683

राजीव सुराणा जैन
9810030672

SWASTIK
Marketing Company

Manufacturers & Dealers
XLPE/PVC Armoured & Unarmoured Telecommunication
& Co-axial, House Wiring & Submersible, Instrumentation

Ollvin
Connecting life...
WIRES & CABLES

B-35/3, Jhilmil Industrial Area, Delhi- 110095
Tel: 011-35009785, 09312271915
E-mail: swastikmarketing.70@gmail.com
www.ollvin.in

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के ६३वें जन्म पर्व पर शत् शत् नमन

नवरत्न कुमुद बच्छावत

DJ™ DJ BROTHERS

Admin Offfice: No. 307, Bhanwar Apt., 10th Cross,
Near Adagi Hospital, Wilson Garden,
Bangalore, Karnataka, Bharat-560027

Head Offfice: Plot No.33, INDIA FOOD PARK, KIADB
Industrial Area, Vasanthanarasapura, 3rd Phase, Kora Hobli,
Tumkur District, Bangalore, Karanataka, Bharat- 572139

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.maibharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १८ से... पूरा पण्डाल इस अनोखे उपहार को सुनकर चिंतन के मध्य आ गया, महाश्रमणजी ने करबद्ध यह स्वीकार किया कि भविष्य में इसका विशेष ध्यान रखूंगा कि सुविधावाद मेरे व संघ के आसपास भी नहीं पनपे। गुरू द्वारा इस माध्यम से अन्यों को भी यह एक अनोखी सीख थी।

अगले वर्ष अध्यात्म साधना केन्द्र दिल्ली में आयोजित मर्यादा महोत्सव पर इसका विधिवत पदाभिषेक समारोह आयोजित किया गया। तेरापंथ के इतिहास में इतना अनोखा व इतना शानदार विशाल आयोजन पहली बार हुआ था। आचार्य तुलसी ने अनुष्ठानपूर्वक शास्त्रीय विधि विधान से उन्हें आचार्यपद पर प्रतिष्ठापित किया, उसके बाद उन्होंने महाश्रमणजी को खड़ा करके एक लिखित पत्र सौंपा, जिसका विवरण निम्न है--

अर्हम्

महाश्रमण मुनि मुदितकुमार आचार्य महाप्रज्ञ के गण संचालन के कार्य में सतत सहयोगी रहे तथा स्वयं गण-संचालन की योग्यता विकसित करें, इसके लिये अवशेष जो करणीय है वह उचित समय पर आचार्य महाप्रज्ञ करेंगे।

५ फरवरी १९९५, रविवार

-गणाधिपति तुलसी

इसके वाचन व सुपुर्दगी के बाद वहां उपस्थित किसी भी व्यक्ति को सन्देह नहीं रहा कि अब महाप्रज्ञ के युवाचार्य एवं भावी आचार्य महाश्रमणजी होंगे। महाश्रमण मुदित ने अपने दोनों गुरूओं के मध्य अपनी योग्यता की इतनी पैठ जमा दी थी कि भावी आचार्य की स्पष्ट संभावनाएं नजर आ गई।

गुरू का प्रोत्साहन : महाश्रमणजी को अपने दोनों ही गुरुओं से काफी प्रोत्साहन मिला तथा प्रायः किये जाने वाले कार्य उनके माध्यम से करते या करवाते थे, ताकि वह उनसे जुड़ जावे व जान जावें। आचार्य तुलसी ने तो यह भी निर्देश दे रखा था कि मैं जब भी तुम्हें बुलाऊं तब कलम व डायरी साथ लेकर आया करो, ताकि जो भी नई बात ध्यान में आवे, उसे लिखाया जा सके। महाश्रमणजी रात्रि में गुरूदेव तुलसी के पट्ट के पास ही सोते थे ताकि जब वो उठें या कोई व कैसा भी कार्य हो वह तैयार रहें। आचार्य तुलसी ने तो एक बार प्रवचन में कहा कि यदि कोई मुझसे पूछे कि संत कैसा हो तो मैं मुनि मुदित को प्रथम पंक्ति में रखूंगा, इसकी शालीनता, सहनशीलता एवं एक संत के सभी गुणों का समावेश है, उन्होंने तो अपनी डायरी में लिखा कि महाश्रमण मुदित कुमार मेरा सहज सेवाभावी शिष्य है, मैं भविष्य के लिये निश्चिंत हूं।

गंगाशहर चातुर्मास: सन १९९७ का चातुर्मास वहां घोषित था, सभी वहां सानन्द विराज रहे थे। गुरूदेव तुलसी के अकस्मात देवलोक गमन होने पर आचार्य महाप्रज्ञजी ने अपना भावी उतराधिकारी (युवाचार्य) मनोनयन करने हेतु। १४ सितंबर १९९७ की तिथि घोषित कर दी। चोपड़ा हाई स्कूल के प्रांगण में निर्मित विशाल भव्य पण्डाल में एक लाख से अधिक व्यक्तियों की उपस्थिति थी। यद्यपि अधिकांश को नाम की निश्चितता थी, फिर भी घोषित होने से पहले पूरा उहापोह व्याप्त था। तेरापंथ के दशम अधिष्ठाता आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अपनी भूमिका वक्तव्य के बीच में शुभ मुहूर्त आते ही कहा-''उष्ठि त मुनि मुदित'' नाम सुनते ही एकाएक ही लाखों हाथ प्रसन्नता की गर्जना के साथ उठ गये एवं जब उत्तराधिकार पत्र का वाचन किया तत्पश्चात जनता जय-जयकार करने लगी।

युवाचार्य नाम की घोषणा के बाद आचार्यप्रवर ने आगम श्लोकों एवं आर्षवाणी का उच्चारण करते हुए एक नई चादर पछेवड़ी उन्हें ओढाई एवं आलिंगनबद्ध करते हुए अपने समीप पट्ट पर बैठाया कहा:

अर्हम्

ऊँ णमो भगवते ऋषभाय, ऊँ णमो भगवते पार्श्वनाथाय, ऊँ णमो भगवते महावीराय

श्री भिक्षु, भारीमाल, ऋषिराय, जयाचार्य, मघवा, मणिक डालचन्द, कालु, तुलसी गुरूभ्यो नमः।

मैं तेरापंथ के दशम आचार्य के दायित्व का निर्वाह कर रहा हूं अब मैं अनुभव कर रहा हूं मुझे आचार्य के सर्वोत्तम और सबसे अधिक महत्वपूर्ण कर्तव्य की अनुपालना करनी चाहिये। तेरापंथ धर्मसंघ भिक्षु शासन की गुरू-परम्परा का अक्षुण्ण रखने के लिये मुझे अपने उतराधिकारी की नियुक्ति करनी चाहिये, मैं अपने परम अराध्य गुरूदेव तुलसी के साक्ष्य से मुनि मुदितकुमार को अपने उतराधिकारी के रूप में युवाचार्य पद पर नियुक्त करता हूं। मुझे विश्वास है कि यह अध्यात्म निष्ठा, अनुशासन विनम्रता और आचारनिष्ठा के साथ भिक्षु शासन की गरिमा बढ़ाता रहेगा। **१० सितम्बर, १९९७**

-आचार्य महाप्रज्ञ

तत्पश्चात आचार्यप्रवर ने फरमाया कि इनका नाम मुदित है एवं गुरूदेव तुलसी ने इन्हें 'महाश्रमण' का पद दिया था, अब मैं इनका नाम ही बदल कर 'महाश्रमण' कर रहा हूं। भविष्य में यह युवाचार्य महाश्रमण के नाम से प्रसिद्धि पायेंगे व पहचाने जायेंगे। आचार्य प्रवर ने उनके प्रति अनेकों अपनी शुभकामनाएं व आशायें, आकांक्षाएं प्रकट की, तत्पश्चात युवाचार्य महाश्रमण ने अपने अति भावपूर्ण शब्दों में पूर्व आचार्यों-युवाचार्यों के प्रति अपना आदर भाव व्यक्त करते हुए अपने संसारपक्षीय माता-पिता का भी स्मरण किया कि मेरे पर उनका अति उपकार है, जिस वजह से आज मैं इस मुकाम तक पहुंच पाया हूं। उन्होंने अपनी आत्मनिष्ठा, श्रद्धानिष्ठा व कार्यनिष्ठा सभी भावों को प्रकट करते हुए तेरापंथ धर्मसंघ की सर्वोत्तम सेवा करने को वचनबद्ध हुए। महाश्रमणजी ने अपने उद्बोधन में साध्वीप्रमुखाश्री व अन्य सभी बड़े-छोटे संतों के प्रति अपना अभिवादन व सद्भावना प्रकट की, साथ ही पूरे तेरापंथ धर्मसंघ की उत्कृष्ट सेवा हेतु अपने आपको समर्पित कर दिया।

पट्ट का उपयोग - युवाचार्य बनने के बावजूद वो पहले की ही तरह रात्रि में नीचे ही सोते थे। पद प्राप्ति के बाद भी वो किसी भी तरह की विशेष सुविधाएं ग्रहण नहीं करना चाहते थे। आचार्यप्रवर को ज्ञात होने पर उन्हें सोने व बैठने हेतु पट्ट का प्रयोग करने का निर्देश दिया गया।

अणुव्रत प्रेक्षा यात्रा - फरवरी २००० में 'तारानगर' मर्यादा महोत्सव की सम्पन्नता पर आचार्य महाप्रज्ञजी के निर्देश पर नोहर, अबोहर, हनुमानगढ, गंगानगर आदि क्षेत्रों की स्वतंत्र यात्रा की, जिसका विशेष उद्देश्य था आध्यात्मिक व नैतिक चेतना का जागरण, अणुव्रत, जीवन विज्ञान आदि का प्रचार-प्रसार एवं क्षेत्र के परिवारों के अध्यात्म भावों को ज्यादा पुष्ट करना, उनकी सार-संभाल करना।

कष्टप्रद पहाड़ी यात्रा- नवम्बर २००३ में महाश्रमणजी ने मध्य प्रदेश के कुछ क्षेत्रों की यात्रा की, जो प्रायः पहाड़ी व दुर्गम जंगली रास्ता था। २५ दिनों में ३३२ किलोमीटर की यात्रा करके करीब ३२ गांवों को स्पर्श करते हुए वहां पर अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान आदि का काफी प्रचार-प्रसार किया एवं हजारों व्यक्तियों को नशामुक्त जीवन जीने का संदेश देते हुए स्कूलों के सैकड़ों छात्रों को संकल्पबद्ध भी किया। क्षेत्र के केवल जैनी ही नहीं अन्य सभी समुदाय के लोग जो सम्पर्क में आये वो सभी लाभान्वित हुए। **शेष पृष्ठ २१ पर...**

!! ॐ अर्हम् !!
हे प्रभो! यह तेरापंथ
जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ
सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य श्री महाश्रमण जी के ६३वें जन्म वर्ष पर कोटि-कोटि वंदन
Arun Nahata
Director
Mobile : 9844172302
Lalit Nahata
Director
Mobile : 9844172304
KEPL
Estd in 1999
Krita Engineering (P) Limited
Expertise in: Turnkey Infrastructure Installation & Trenchless Technology
No .4/4, Maruthi Plaza, 2nd Floor, M.S.R.C.E Rood, Bangalore, Karnataka, Bharat - 560 054
Ph.:- 080-41553191/080-4352 4444 | Web www.krita.in
email:- akn1927@gmail.com/arun@krita.in

!! ॐ अर्हम् !!
जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ
तेरापंथ धर्मसंघ के ११ वें पट्टधर
अहिंसा यात्रा के प्रणेता, महातपस्वी, शांतिदूत
आचार्य श्री महाश्रमण जी के जन्म दिवस पर
कोटी-कोटी वंदन!
शुभकरण नवरतन सुनील हिरण
आर. के. मेन्यूफेक्चरिंग कंपनी
प्लॉट नं. ए-395, टीटीसी इंडस्ट्रियल एरिया,
एमआयडीसी, महापे, नवी मुंबई, महाराष्ट्र, भारत 400710.
भ्रमणध्वनि : 9821279990 (गंगापुर-वाशी)
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

पृष्ठ २० से... **तेरापंथ का शुभ भविष्य** - युवाचार्य महाश्रमण ने १३ मई २००५ को जब ४३वें वर्ष में प्रवेश किया। गुरू ने अपने शिष्य को आशीर्वचन देते हुए कहा कि 'विनम्रता, सहिष्णुता, क्षमा, संतोष व सरलता के साथ मन प्रसन्नता, ये ऐसे गुण हैं जो केवल व्यक्तित्व का ही निर्माण नहीं करते, अपितु समाज के लिये भी वरदान बन जाते हैं। अतः युवाचार्य के हाथों तेरापंथ का शुभ भविष्य सुरक्षित है।

महाश्रमण के विशिष्ट गुण - सन २००८ में जयपुर में ''युवादृष्टि'' पत्रिका में वो कहते हैं कि 'जनता भगवान के तुल्य होती है, जनता की सेवा करना भगवान की सेवा करना होता है, इससे मुझे कर्म निर्जरा का लाभ मिलता है, सेवा भी होती है और दायित्व का निर्वहन भी होता है।'

आचार्य महाप्रज्ञजी ने एक अवसर पर कहा 'महाश्रमण पहले बहुत एकान्तवासी थे, अकेले रहना, अपने आप में ही रहना इनकी पसन्द थी, अब इतने बदल गये हैं कि जनता को भगवान मानने लगे हैं। महाश्रमण प्राणवान व्यक्ति हैं एवं उसके तीन आधार बिन्दु हैं-सत्य, श्रद्धा और तप। महाश्रमणजी इस बात के लिये बहुत जागरूक रहते हैं कि मुझे किंचित मात्र भी असत्य का दोष नहीं लगे, जब एक गुरू अपने शिष्य के लिये ऐसे शब्दों को प्रयोग करे तो उसकी विशिष्टता तो स्वतः ही उजागर हो जाती है।

अहिंसा यात्रा- आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के नेतृत्व में शुरू होकर जोधपुर, अहमदाबाद, सूरत, मुम्बई, जलगांव, सिरियारी, जयपुर आदि मुख्य स्थलों के स्पर्श व चातुर्मास करते हुए एक लम्बा यात्रा वृत हुआ, जिसकी पूरी संयोजना युवाचार्य महाश्रमणजी की रही। यात्रा के मुख्य दो उद्देश्य रहे, पहला अहिंसक चेतना का जागरण और दूसरा नैतिक मूल्यों का विकास, इस हेतु

अनेकों कार्यक्रम हुए, जिसमें लाखों व्यक्ति प्रभावित हुए। हजारों विशिष्ट लोगों से युवाचार्यश्री का सम्पर्क हुआ एवं इस विशिष्ट उद्देश्योपरक सम्बन्ध में अनेकों साथ के कार्यक्रम संयोजित हुए। सन २००९ में सुजानगढ़ में यात्रा की परिसम्पन्नता करके उस वर्ष का चातुर्मास जैन विश्व भारती में किया गया।

सरदारशहर पदार्पण - सन २०१० का श्रीडूंगरगढ का मर्यादा महोत्सव सम्पन्न कर चातुर्मास हेतु सरदारशहर पधार गये। सन ९ मई २०१० की भरी दोपहरी में सरदारशहर में तेरापंथ के दसवें महासूर्य का अस्त हो गया। केवल तेरापंथ धर्मसंघ ही नहीं बल्कि पूरा जैन धर्म संघ व अन्यान्यों ने भी इसे अपूरणीय क्षति माना।

११ वें आचार्य महाश्रमण - तेरापंथ परम्परा के अनुसार वो आचार्य बन गये एवं उनके पदाभिषेक का अत्यन्त भव्य व विशाल **शेष पृष्ठ २२ पर...**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ २१ से... समारोह सरदार शहर के गांधी विद्या मंदिर के विशाल प्रांगण में २३ मई २०१० में सम्पन्न हुआ, जिसमें भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी सहित अनेक राजनेताओं, विद्वानों की उपस्थिति में साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के निर्देशन में सम्पन्न कार्यक्रम में अपना पद ग्रहण किया। नव प्रतिष्ठित आचार्यश्री ने काफी भावपूर्ण उदगार व्यक्त करते हुए निम्न संकल्प भी स्वीकार किये-

- मैं तेरापंथ की परम्परा, मर्यादा, आचार-विचार और साचारी की एकता को अक्षुण्ण रखने का पूरा प्रयास करूँगा।
- मैं तेरापंथ धर्मसंघ के दायित्व का पूर्ण निष्ठा के साथ निर्वाह करूँगा।
- मैं तेरापंथ के व्यापक दृष्टिकोण एवं कार्यक्रम को आगे बढ़ाने का प्रयत्न करूँगा।

इसके साथ चतुर्विध धर्मसंघ द्वारा अपने-अपने स्तर पर अपने दायित्व, कर्तव्य व करणीय कार्य एवं आचार्य के प्रति पूर्ण निष्ठा का भावपूर्ण भाषा में खड़े होकर स्वीकार किया। आचार्यप्रवर ने भी वहां उपस्थित अपने से बड़े (रत्नाधिक) सन्तों को वन्दन व साध्वीप्रमुखा आदि साध्वियों का अभिवादन किया, इस अवसर पर महाश्रमणजी ने अपने को दीक्षा प्रदान करने वाले मुनिवर श्री सुमेरमलजी 'लाडनूं' को विशेष सम्मान भाव से स्मरण किया, जो उस समय वहां उपस्थित नहीं थे। कार्यक्रम अत्यन्त ही भव्य व गरिमापूर्ण था। सन २०१० का सरदारशहर का चातुर्मास, जैसा पूर्व में निर्धारित था, घंटाघर रोड पर स्थित नवनिर्मित विशाल व भव्य तेरापंथ भवन में सम्पन्न हुआ। पारम्पारिक कार्यक्रमों के अलावा कुछ विशेष कार्यक्रम भी आपके सान्निध्य में आयोजित हुए, उन्होंने पदाभिषेक के समय ही घोषित कर दिया था कि पूर्व निर्धारित चातुर्मासों व अन्य कार्यक्रमों का जो गुरूदेव की अवस्था की वजह से पूर्ण नहीं किये जा सके थे, अब वो सब पूरे किये जायेंगे।

उस अनुरूप चातुर्मास की समाप्ति पर सबसे पहले उन्होंने उन सभी स्थानों का स्पर्शन किया जहां वयोवृद्ध व अशक्त साधु-साध्वियां स्थिरवास थी, वो योजनाबद्ध व कार्यक्रम के अनुसार अपना कार्य सम्पन्न करने वाले आचार्य बनें। यहां तक आप अपने समय का हर मिनट का सदुपयोग व निर्धारण करते रहते हैं। अनेक स्थानों का भ्रमण करते हुए जब चातुर्मास केलवा में किया किया, बतादें कि केलवा तेरापंथ धर्मसंघ का अति विशिष्ट ऐतिहासिक स्थान है, जहां की प्रसिद्ध अंधेरी ओरी में तेरापंथ के प्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु ने अपना चातुर्मास किया था। वहां एक यक्ष का स्थान था, जहां स्थानीय व्यक्ति जाने व रहने से डरते थे, वैसे स्थान पर इस महान तपस्वी सन्त ने अपना चातुर्मास सानन्द सम्पन्न किया एवं यक्ष स्वयं उनका प्रवचन सुनता था व सेवा करता था।

सन २०१२ का चातुर्मास आचार्यश्री महाश्रमणजी ने ओद्योगिक नगर बालोतरा के पास 'जसोल' में करवाया। भगवान पार्श्वनाथ व भैरूजी का प्रसिद्ध नाकोड़ा तीर्थधाम 'जसोल' कस्बे के समीप ही है। चातुर्मास में आने वाला हर श्रावक परिवार भगवान के दर्शनार्थ नाकोड़ा प्रायः अवश्य ही जाता रहता है। 'जसोल' भी सूती कपड़े की रंगाई आदि के लिये काफी प्रसिद्ध स्थान है।

जैन विश्व भारती : लाडनूं स्थित जैन विश्व भारती परिसर तेरापंथ धर्मसंघ का प्रमुख स्थल है। आचार्य तुलसी की परिकल्पना से स्थापित जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय जैनों का एक मात्र प्रथम, जैन अध्यात्म प्रशिक्षण का प्रमुख स्थल है, इसके विकास व सिंचन का कार्य आचार्य महाप्रज्ञजी ने भी

खूब किया, अब उनके पट्टधर का दायित्व था कि उसके विकास की ओर विशेष ध्यान देवे, इसके अतिरिक्त आचार्य तुलसी के जन्म शताब्दी वर्ष की भी तैयारी करनी थी, अतः इन सब विशेष उद्देश्यों के लिये आचार्य महाश्रमण ने सन २०१३ का चातुर्मास लाडनूं में सम्पन्न किया, चूंकि जैन विश्व भारती के परिसर में काफी बड़े पैमाने पर आवासीय सुविधायें उपलब्ध हैं, अतः बाहरी यात्रियों का यहां काफी आवागमन रहा। आचार्यप्रवर के सान्निध्य में यहां अनेकों संस्थाओं के वार्षिक अधिवेशन, सेमीनार व प्रशिक्षण के विशेष कार्यक्रम संचालित हुए।

दिल्ली का चातुर्मास : सन २०१४ का काफी महत्वपूर्ण चातुर्मास अध्यात्म साधना केन्द्र महरौली नई दिल्ली में था। तेरापंथ धर्मसंघ के विकास के पुरोधा पुरुष आचार्यश्री तुलसी का यहां पर जन्म शताब्दी वर्ष के सम्बन्ध में अनेक किस्म के विभिन्न आयोजन समय पर हुए। अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट द्वारा सम्पादित आचार्य तुलसी से सम्बन्धित एक ग्रन्थ का विमोचन हुआ, जिसमें दिये गये आलेखों की सभी के द्वारा सराहना हुई, ऐसे विरल महान पुरूष के कर्तृत्व व व्यक्तित्व के सम्बन्ध में एक विशाल ग्रन्थ तैयारी करने का कार्य पिछले २-३ वर्षों से चालु था, जिसे गंगाशहर के अजय चोपड़ा ने अन्तिम रूप से सम्पादन कर उसे दो खण्डों में काफी भव्य रूप से विमोचन का कार्यक्रम आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में 'महरौली' के भव्य पण्डाल में आयोजित हुआ, जिसमें अनेकों राजनेताओं व विद्वानों ने सम्मिलित होकर श्रद्धांजलि के अपने भावसुमन प्रकट किये।

लाल किले से विदाई : दिल्ली के बाद भारत के अनेक प्रान्तों की लम्बी के यात्रा का कार्यक्रम बना हुआ था, जिसका शुभारम्भ चातुर्मास के बाद ९ नवम्बर २०१४ को लाल किले के सामने के प्रांगण में काफी भव्य विदाई समारोह के रूप में आयोजित था। नेपाल के उपराष्ट्रपति इस समारोह के मुख्य अतिथि थे, क्योंकि तेरापंथ के यह पहले आचार्य थे जो नेपाल पधारने वाले थे। निर्धारित मुहूर्त पर आचार्यप्रवर ने अपने दीक्षा गुरू मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी ने खड़े होकर मंगलपाठ सुना एवं वहीं से मांगीलालजी सेठिया के निवास की ओर विहार करा दिया। प्रसंगवश 'जिनागम' पत्रिका के पाठकों को यह बताना चाहूंगा कि मांगीलालजी सेठिया जैन आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ के पिछले पांच चातुर्मासों में लगातार प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष रहे एवं सारी व्यवस्थाएं बड़ी कुशलता व मनोयोग से सम्पादित की, इस बार की व्यवस्था समिति के अध्यक्ष कन्हैयालाल पटावरी जैन थे, उन्होंने काफी अर्थ व श्रम का नियोजन कर अध्यात्म साधना केन्द्र में काफी नये निर्माण करवाये एवं उन्हें काफी भव्य रूप प्रदान करने का उन्हें बहुत बड़ा श्रेय भी जाता है।

विराटनगर चातुर्मास : नेपाल के अनेकों विपदा-ग्रस्त कस्बों को शान्ति व प्रसन्नता का प्रसाद बांटते हुए नेपाल सन २०१५ **शेष पृष्ठ २३ पर...**

!! ॐ अहम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

तेरापंथ धर्मसंघ के ११ वें पट्टधर अहिंसा यात्रा के प्रणेता, महातपस्वी, शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी के जन्म दिवस पर कोटी-कोटी वंदन!

Vikash Sethia Mob. : 9886001248

'ANUKAMPA FOUNDATION'

RKS AGRO-TECH LTD.
AGRO BIOTECH INDUSTRY

SUNSTAR FINANCE & HOLDINGS LIMITED

201, KALPAK ARCADE, 19, CHURCH STREET, BENGALURU - 560001
e-mail : indiapride75@hotmail.com

पृष्ठ २२ से... के प्रथम चातुर्मास हेतु विराटनगर पधारे, परन्तु वहां की स्थानीय राजनैतिक परिस्थितियों की वजह से वहां पर वैसे प्रभावी कार्यक्रम व आयोजन सम्पन्न नहीं कर सके जो अपेक्षित थे।

नेपाल यात्रा के बाद आप दो दिन के लिये भूटान भी पधारे जहां पर बौद्ध माण्टेसरी में आचार्यप्रवर का भव्य स्वागत हुआ एवं वहां की जनता भी लाभान्वित हुई। आपकी प्रवचन शैली इतनी प्रभावी होती है जिसमें हर व्यक्ति उसमें से कुछ न कुछ आध्यात्मिक खुराक पाता है। वहां से बंगाल व आसाम के हर मुख्य शहरों का स्पर्श करते हुए पहाड़ी व कष्टप्रद जंगली रास्तों से पाद-विहार करते हुए सन २०१६ का गौहाटी आसाम में चातुर्मास सम्पन्न किया, तेरापंथ आचार्य की यह आसाम यात्रा पहली बार हो रही थी।

अणुव्रत पुरस्कार: गौहाटी चातुर्मास के बाद शिलोंग, तुरा, ग्वालपाड़ा, सिलीगुड़ी होते हुए पटना पधारना हुआ। बिहार के मुख्यमंत्री श्री नितीशकुमार ने अनेक कठिन परिस्थितियों व बाधाओं के होते हुए बिहार में नशाबंदी करने के निर्णय को लागू किया। 'नशामुक्त जीवन जीना' जैन जीवन शैली के अन्तर्गत अणुव्रत आंदोलन का प्रमुख सूत्र है। बिहार राज्य में इसका प्रयास शुरू हुआ, अतः उसके प्रमुख सूत्रधार मुख्यमंत्री नीतीशकुमारजी को तत्कालीन राज्यपाल श्री रामनाथ कोविन्द (वर्तमान राष्ट्रपति) के कर-कमलों से अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ऐसी हस्तियों व व्यक्तियों को खोजना व सम्मानित करना आचार्यप्रवर की प्रमुख विशेषता रही है, जिससे अन्य भी प्रभावित होते हैं।

तीर्थंकर महावीर की पावापुरी: पावापुरी भी आपका पधारना हुआ, वहां का सबसे बड़ा आकर्षण व कार्यक्रम रहा जैन धर्म के सभी सम्प्रदायों के साथ मिलकर 'तीर्थंकर महावीर का जन्म कल्याणक' का विशेष व प्रभावी आयोजन। वर्तमान में वहां एक भी जैनी नहीं रहते, वहां हजारों व्यक्ति एकत्रित हुए। तीर्थंकर महावीर के नाम से आप्लावित प्रायः सभी क्षेत्रों जैसे कुण्डलपुर, राजगिरी, नालन्दा आदि पधारना हुआ।

जैनों की नगरी कोलकाता: सम्भवतः अहमदाबाद, मुम्बई व कोलकाता में सर्वाधिक जैन परिवार रहते हैं। उसी तरह तेरापंथ के भी करीब ७-८ हजार सर्वाधिक परिवार यहां प्रवास करते हैं। आचार्यश्री तुलसी ने सन १९५८ का चातुर्मास कोलकत्ता में किया था, अब वहां सन २०१७ के चातुर्मास हेतु तेरापंथ के आचार्य का दूसरी बार पधारना हुआ। व्यावसायिक नगरी होने से यहां पर सर्वाधिक व्यक्ति दर्शन सेवा हेतु पहुंचे एवं वहां पर आयोजित कार्यक्रमों व प्रवचनों में काफी प्रभावी भीड़ रही।

दक्षिण भारत में : आपने शुरू में कोलकाता तक की यात्रा घोषित की थी बाद में उसे दक्षिण भारत पधारने का घोषित कर दिया, जो इस अनुरूप है-

वर्ष	मर्यादा महोत्सव	चातुर्मास
२०१८	कटक (उड़ीसा)	चेन्नई (तमिलनाडु)
२०१९	कोयम्बटूर (तमिलनाडु)	बैंगलुरू (कर्नाटक)
२०२०	हुसुर (कर्नाटक)	हैदराबाद (तेलंगाना)
२०२१	रायपुर (छत्तीसगढ़)	भीलवाड़ा (राजस्थान)
२०२२	बीदासर (सम्पन्न)	छापर (राजस्थान)
२०२३	टापरा	मुम्बई

गुरुदेव का तीव्र विहार: पुज्य गुरुदेव अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार विहार में अग्रसर थे एवं कार्यक्रम के अनुसार **शेष पृष्ठ २४ पर...**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ २३ से... वो २० मार्च २०२२ को दिल्ली पधारने वाले थे, उन्हें जब यह जानकारी प्राप्त हुई तब उन्होंने अपने विहार की गति बढ़ा दी। चूरू में जहां तीन रोज विराजने वाले थे, उसे एक रोज में ही निपटाया। विहार की गति तो बढ़ी हुई थी, परन्तु लुहारू के बाद बढ़ती गर्मी के मौसम में भी प्रतिदिन दो-तीन विहार एवं तीन दिन तक लगातार ३५ किलोमीटर की गति से उग्र विहार किया, ६ मार्च २०२२ को गर्मी के मौसम में अति उग्र ४७ किमी का विहार करके शाम ५:४५ बजे अस्पताल पहुंचकर साध्वीप्रमुखाजी को दर्शन दिये एवं विधिवत वंदना की।

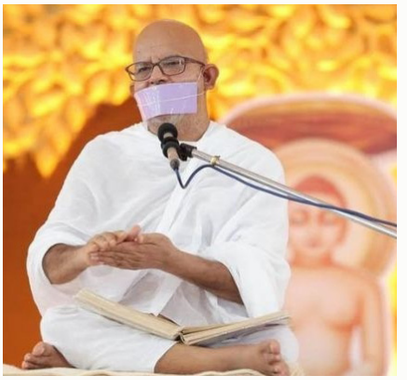

अनुकम्पा भवन में: सभी तरह की व्यवस्था करके शासन माता को साधना केन्द्र के 'अनुकम्पा भवन' के एक कमरे में स्थांतरित कर दिया गया एवं आचार्यप्रवर भी वहीं पधार गये, अगले दस दिन आचार्यप्रवर दिन में दो-तीन बार साध्वीप्रमुखाजी को दर्शन देने व मंगलपाठ सुनाने हेतु पधारते एवं कुछ समय वहीं पर विराजते, इससे प्रमुखाजी को भी काफी मानसिक प्रसन्नता होती। ७ मार्च का प्रातः शारीरिक स्थिति ज्यादा अनुकूल न देखकर उन्हें सागारी संथारा करवा दिया गया एवं कुछ समय बाद ही साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी प्रातः ८:४५ पर महाप्रयाण कर गईं।

वात्सल्य पीठ: निर्धारित समय उपरान्त उनके पार्थिव शरीर को वर्द्धमान समवसरण में श्रावकों के दर्शनार्थ रखा गया। साध्वी प्रमुखा जी का महाप्रयाण सुनकर सभी स्तब्ध थे एवं हजारों की संख्या में अपने भाव सुमन भेंट हेतु वहां आये। शाम करीब ४ बजे एक सुसज्जित बैकुंठी में विराजमान करके, साधना केन्द्र के बाहरी क्षेत्र में परिक्रमा करके, अनुकम्पा भवन के ठीक सामने ही, नये अधिग्रत प्लॉट में, हजारों लोगों की अश्रुपूरित नेत्रों के मध्य उनका अन्तिम दाह-संस्कार कर दिया गया, सभी शासन माता की जय-जयकार कर रहे थे। अगले ४-५ दिनों तक गुरुदेव के सान्निध्य में उनका स्मृति दिवस मनाया गया, जिसमें सैकड़ों साधु-साध्वियां, श्रमणियां, श्रावकगण व राजनेता, विद्वानों ने शासन माता के प्रति अपने उच्च भावों को भाव सुमन भेंट किये। विदित हो कि इस संस्कार स्थल पर शासनमाता का एक भव्य स्मृति स्थल का विकास किया जायेगा, जिसका पूज्यवर ने नाम दिया 'वात्सल्य पीठ'।

अहिंसा यात्रा का समापन: अगले चार दिन आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अणुव्रत भवन, पूर्वी दिल्ली आदि क्षेत्रों का स्पर्शन करते हुए २७ मार्च २०२२ को प्रातः तालकटोरा स्टेडियम में पधारे। सभी वर्ग के हजारों की उपस्थिति से स्टेडियम खचा-खच भरा था। नेपाल के पूर्व उपराष्ट्रपति श्री परमानन्द झा एवं केन्द्रीय मंत्री अर्जुन मेघवाल मुख्य अतिथि के रूप में करीब ५ घण्टे से अधिक चले कार्यक्रम में उपस्थित रहे। मुनिश्री कुमार श्रमण के संयोजना में कार्यक्रम कई रूप में अति रोचक चला, उपस्थित वक्ताओं के अलावा प्रधानमंत्री सहित अनेक राज्यपाल, मुख्यमंत्री व अनेक विशिष्ट व्यक्तियों ने अपने भावों की अभिव्यक्ति विडियो के माध्यम से व्यक्त की।

राष्ट्रपति से मुलाकात: २८ मार्च २०२२ को आचार्यप्रवर का राष्ट्रपति से मुलाकात का समय निर्धारित था। २९ मार्च प्रातः नांगलोई में विदाई समारोह आयोजित था, उसके बाद पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार पुज्यवर का हरियाणा, राजस्थान की ओर विहार हो गया।

इससे पूर्व आचार्य महाश्रमण युवाचार्य के रूप में आचार्य महाप्रज्ञ के साथ २००३ में सूरत चातुर्मास हेतु पधारे थे, आचार्य महाश्रमण जी २०२३ का अक्षय तृतीया महोत्सव सूरत में सम्पन्न किया। २०२३ का चातुर्मास आचार्यश्री ने भारत की आर्थिक राजधानी मुंबई के नंदनवन में सम्पन्न किया। २०२४ का चातुर्मास सूरत में होने वाला है।

आचार्य महाश्रमण पूर्णतः समय नियोजित महापुरूष हैं। वर्षों व महिनों का ही नहीं, बल्कि दिनों का उसके घंटों का भी अपना कार्यक्रम जो निर्धारित करते हैं, उसी अनुरूप अपना कायक्रम करते हैं। यहां तक कि किसी व्यक्ति से कितना मिनट, कितने बजे मिलना है यह भी तय करके आगंतुक को अपना समय देते हैं एवं उसी अनुरूप वार्तालाप करते हैं, ऐसे महापुरूष कम ही देखने को मिलते हैं, जिसके वजह से अपने हर क्षण का सदुपयोग करते हुए अपनी साधना-आराधना को गति दे रहे हैं। आप हर दृष्टिकोण से सचेष्ट रहते हैं एवं किसी भी तरह के लोभ व लालच को तो आसपास भी नहीं फटकने देते, ऐसे निस्पृह व्यक्तित्व वाले तेरापंथाचार्य स्वस्थ रहें, शतायु रहें, ऐसी मेरी, समस्त जैन समाज व 'जैन एकता' के लिए कटिबद्ध एकमात्र पत्रिका 'जिनागम' परिवार व तीनों लोकों के श्रावक-श्राविकाओं की मनोकामना है।

-विजयराज सुराणा जैन
पड़िहारा-दिल्ली

!! ॐ अर्हम् !!
सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य श्री महाश्रमण जी के ६३वें जन्म वर्ष पर कोटि-कोटि वंदन
CHORARIA & FAMILY
CA Jawaharlal Choraria
Mob: 9433084855/ 7044019664
J.L. Choraria & Associates
Chartered Accountants
88, Manicktala, Main Road, 8th Flor,
Kolkata, West Bengal, Bharat-700054
Email- jlchoraria23@rediffmail.com
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove ~~'INDIA'~~ Name From The Constitution

100% Veg.

NAKODA

NOURISH

nakodagheetel

FRESHLY PRESSED

COLD PRESSED OILS

- Minimal Heating
- No Chemicals
- Manual Filtration
- 100% Natural

From the house of

NAKODA®

Pure Ghee, Edible Oils & More...

BOOK YOUR ORDER NOW

8928882457 / 8591562269 / 8928586181 / 9137756585

www.nakodagheetel.com info@gheetel.com

FORTIFIED SAMPOORNA POSHAN SWASTH JEEVAN

MAKE IN INDIA

fssai Lic. No: 10017022005931

DAR KOSHER

APEDA

An ISO 22000: 2018 & HACCP Certified Company

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

महावीर किसी एक पंथ के नहीं, सम्पूर्ण मानवता के भगवान: राष्ट्र-संत चन्द्रप्रभ जी

संबोधि धाम में महावीर जन्म कल्याणक पर हुआ विराट १८ अभिषेक महापूजन श्रद्धालुओं ने किया

पद्मासन में विराजमान ५१ इंच ऊंची प्रतिमा का महा मस्तकाभिषेक

जोधपुर: राष्ट्र-संत चन्द्रप्रभजी ने 'जिनागम' पत्रिका को कहा कि तीर्थंकर महावीर केवल जैनों के लिए ही नहीं, वरन् सम्पूर्ण मानवता के आराध्य हैं, उन्होंने जितनी साधना की और उपसर्ग सहन किए, वैसा आज तक कोई भी नहीं कर पाया। वे नारी जाति के लिए वरदान बनकर आए उन्होंने चन्दनबाला के रूप में नारी को बिक्री की वस्तु से हटाकर श्रद्धा की मूर्ति का स्थान दिलवाया, अगर उनके अहिंसा, अनेकांत, समता, समानता, सहयोग जैसे संदेशों को विश्वभर में फैला दिया जाए तो विश्व शांति का सपना शीघ्र साकार हो सकता है।

संत श्री ने संबोधि धाम में महावीर जन्म कल्याणक के मंगलमय अवसर पर आयोजित विराट १८ अभिषेक महा पूजन समारोह में श्रद्धालुओं को संबोधित कर रहे थे, उन्होंने कहा कि जहाँ राम दिए हुए वचन को निभाने के लिए प्रेरणा स्तंभ हैं, वहीं महावीर लिए हुए संकल्प पर दृढ़ रहने के आदर्श हैं। सिकन्दर बनकर दुनिया को जीतना सरल है, पर उसी सिकन्दर के लिए स्वयं को जितना मुश्किल है, जो स्वयं को जीतते हैं, वही एक दिन महावीर बनते हैं, जैसे राम ने रावण का और कृष्ण ने कंस का संहार किया, वैसे ही महावीर ने क्रोध और कषाय के कंस का एवं राग और द्वेष के रावण का अंत कर सदा-सदा के लिए 'णमो अरिहंताणम्' बन गए।

उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी भारत के राष्ट्रपिता हैं पर तीर्थंकर महावीर भारत के प्राण हैं, क्योंकि गांधी ने महावीर द्वारा प्रदत्त अहिंसा के अस्त्र से ही 'भारत' को आजादी दिलवाई। संत प्रवर ने कहा कि महावीर के संदेश तब भी उपयोगी थे, आज भी उपयोगी हैं और सदा उपयोगी बने रहेंगे। वे कभी आउट ऑफ डेट नहीं होंगे, सदा अप-टू-डेट बने रहेंगे। महावीर के अनुयायियों सदा ध्यान रखो कि नेता को वोट, अमीर को नोट और आगे बढ़ने वालों को सपोर्ट चाहिए, पर महावीर को केवल आपकी खोट चाहिए, ताकि वे आपको खरा बना सकें। महावीर को भीड़ नहीं, भाव चाहिए, सिक्के नहीं, श्रद्धा चाहिए। उन्हें मंदिर में नहीं, मन में बिठाएँ। वैभव का तो वे त्याग करके आए थे, इसलिए उन्हें वैभव चढ़ाने की बजाय अपनी बुरी आदतें चढ़ाएँ ताकि आपका जीवन निर्मल और पवित्र बन सके।

सैकड़ों श्रद्धालु भाई बहनों ने संबोधि धाम में महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर आयोजित विराट १८ अभिषेक महापूजन समारोह में पद्मासन में विराजमान ५१ इंच ऊंची भगवान की प्रतिमा का महा मस्तकाभिषेक संपन्न किया।

श्रद्धालुओं ने विविध नदियों के जल, औषधि मिश्रित चूर्ण और पंचामृत आदि अट्ठारह प्रकार से परमात्मा का अभिषेक किया। भक्तों ने महारानी त्रिशला माता द्वारा देखे गए ऋषभ, सिंह, लक्ष्मी जैसे १४ महान सपनों का झूमते गाते हुए बधावना किया, इस दौरान भगवान के पालने को झुलाने का लाभ श्रीमती उषा जैन संपत राज जैन परिवार ने लिया।

समारोह के संयोजक सुरेश दिलीप मेहता, मीना जैन परिवार का संबोधि धाम ट्रस्ट मंडल द्वारा अभिनंदन किया गया।

कार्यक्रम में राष्ट्रसंत ललितप्रभजी, राष्ट्रसंत चंद्रप्रभजी और डॉ. मुनि शांतिप्रियजी महाराज साहब प्रभु महावीर के भजनों की सरिता बहाई। समारोह के अंत में महा आरती करने का सौभाग्य संजय मेहता परिवार ने लिया।

कार्यक्रम में के.एन. भंडारी, किशन गर्ग, अशोक पारख, अशोक जोहरी, कीर्ति खजांची, नवरतन मानधना आदि विशेष रूप से मौजूद थे।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के
जन्म दिवस व दीक्षा दिवस पर नमन्

श्रद्धाप्रणत

बजरंग लाल डागा
जैन संस्कारक
9830125300

स्नेहलता डागा
ज्ञानशाला प्रशिक्षिका
9830347142

गंगेज़ गार्डन फेज़ -१, हावड़ा

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

सारा जमाना पदम जैन का दीवाना

हजारों परिवारों को रिश्तों में जोड़ने वाले पदमचंद जैन का हर कोई दीवाना

वैवाहिक दुनिया के बेताज बादशाह के रूप में सुप्रतिष्ठित पदमचंद जैन की आज दुनिया दीवानी है। दुनिया जिन उद्योगपतियों, फिल्मी सितारों की दीवानी है, वे सारे पदमचंद जैन के दीवाने है। और हो भी क्यों नहीं? आखिर देशभर में अब तक नामी-गिरामी परिवारों को आपस में वैवाहिक रिश्तों में जोड़ने का कीर्तिमान जो स्थापित किया है। जयपुर में एक शादी के आयोजन में जीतो के श्रेष्ठीवर्य से मुलाकात हुई। इनमें तारक मेहता का उल्टा चश्मा के फेम शैलेष लोढा, शेयर मार्केट के दिग्गज मोतीलाल ओसवाल, प्रमुख बिल्डर सुभाष रूणवाल, सेलो ग्रुप के प्रदीप राठौड, इन्स्पीरा के प्रकाश जैन, डॉ. सुरेन्द्र जैन युएसए, प्रकाश कानुगो, तेजराज गुलेच्छा, किशोर खाबिया, राकेश मेहता, शांतिलाल कवाड़, संदिप बाफना सहित अनेक दिग्गजों से मुलाकात हुई। पदमचंद जैन ने अपनी चिर परिचित शैली में सभी का आत्मीय स्वागत किया। रूणवाल परिवार में वैवाहिक आयोजन के अवसर पर परिवार को बधाई दी। पूरे भारत में ओसवाल जैन बच्चों के वैवाहिक बायोडेटा के लिए पदमचंद जैन एक जाना-माना नाम है। राजनीति, प्रशासनिक, समाजसेवी, ब्यूरोक्रेटस उद्योगपति, सहित हर क्लास परिवार के बच्चों के बायोडेटा उपलब्ध है। सच में इतनी दीवानगी देखी नहीं कहीं। हर जुबां पर पदमचंद जैन का नाम।

■ आपके सपनों को पूरा करने वाली टीम ■

आईजेवीओ यानी पदम परिवार की यह टीम आपके बच्चों के लिए तलाशती हैं एक-से-बढ़कर एक सुंदर रिश्तों वाला बायोडाटा

॥ श्री पार्श्वनाथाय नमः ॥

रिश्तों का मंडप आई जे वी ओ

विश्वस्तरीय ओसवाल-दिगम्बर जैन एवं वैश्य समुदाय के 8 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्ते करवाने का गौरवशाली कीर्तिमान स्थापित

9314510196 / 9602623456

FCP JITO
पदमचंद जैन

प्रोफेशनल, सीए, पायलट इंजीनियर, आईएएस, आईपीएस, आरएएस, फिल्म, राजनैतिक क्षेत्र के अलावा हर वर्ग और क्षेत्र में कार्यरत युवा-युवतियों के लिए जांचे परखे वैवाहिक रिश्तों का खजाना
1 जून से 2000 से सतत आपकी सेवा में तत्पर

IJ VO
जैन - वैश्य वैवाहिक रिश्तों का आखिरी पड़ाव

एक छत के नीचे उपलब्ध सेवाएं
वैवाहिक-रोजगार, छात्रवृत्ति, विधवा पेंशन, मेडिकल हेल्प, प्रशासनिक एवं कानूनी सलाह, धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में सदैव अग्रणी सहयोगी

इंटरनेशनल जैन एवं वैश्य ऑर्गनाइजेशन
1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04
फोन : 0141-2602626

अपनों से हो अपनों का रिश्ता

हैं और निरंतर वृद्धि हो रही है। इस केन्द्र के कम्प्यूटर फीड बायोडेटा में बड़ी आसानी से मनवांछित रिश्ते के लिए बायोडेटा पलक झपकते ही उपलब्ध हो जाते हैं। देश में आज इतना बड़ा नेटवर्क कहीं देखने को नहीं मिलता जहां सभी बायोडेटा वेरीफाईड हो अर्थात प्रत्येक बायोडेटा की पूर्ण सूक्ष्मता से जांच की जाती है, उसके बाद ही बायोडेटा प्रोसेस में अग्रेषित होते हैं। इस केन्द्र में देश-विदेश के जैन-वैश्य समुदाय के हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के वैवाहिक बायोडेटा उपलब्ध हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा हो, सी.ए. हो, आई पीएस हो या राजनीति, समाजसेवा के क्षेत्र से हो, देश का ख्यातनाम औद्योगिक घराना हो या फिर मीडिया हो या फिल्मी क्षेत्र हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के बायोडेटा का नायाब खजाना है। संकोच नहीं, सम्पर्क करें : पदमचंद जैन -

इस केन्द्र की स्थापना से लेकर अब तक लगभग 50 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्तों के बायोडेटा आ चुके

सेवा के सरोकार
छात्रवृत्ति
मेडिकल शिक्षा
रोजगार
विधवा पेंशन
उक्त आवेदकों की जानकारी पूरी तरह से गोपनीय रखी जाती है।

अशोक सिरोया (अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष) | चंदराज सिंघवी (राष्ट्रीय अध्यक्ष) | डॉ. प्रकाश गोलेछा (योजना मंत्री) | नरेन्द्र कुमार जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष, यू.थि.) | वसंत जैन (राष्ट्रीय संगठन मंत्री) | संजय जैन (कोर्डिनेटर) | सुरेन्द्र कुमार जैन (राष्ट्रीय प्रचार मंत्री)

सेवा के पथ पर अग्रसर टीम आईजेवीओ

1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, वैभव लॉन के पास, हनुमान मंदिर के सामने, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04
फोन : 0141-2602626 / 4010196 email: neerapadamjain@gmail.com

मै भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.maibharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!!

'सहस्राब्दियों में एकाध बार ही होता है विद्यासागरजी जैसे संतों का जन्म

नवी मुंबई में समाधिस्थ आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज को दी गई विनयांजलि

नवी मुंबई वाशी: नवी मुंबई के महाराष्ट्र भवन मैदान में समाधिस्थ आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज को सकल जैन समाज मुंबई, ठाणे व नवी मुंबई के हजारों जैन धर्मावलंबियों ने अपनी ओर से विनयांजलि समर्पित की और अपने गुरु के गुणों का गुणानुवाद किया। दोपहर तेज धूप में भी हजारों महिला-पुरुष व बच्चे गुणानुवाद सभा में पूर्ण अनुशासन के साथ बैठे रहे। समाज के विशिष्ट व गुरुदेव का चरण सानिध्य पाने वाले सुधी श्रावक-श्राविकाओं ने अपने शब्दों में गुरु के गुणों व उनकी प्रेरणा, उनके जीवन दर्शन का बखान किया। गुणानुवाद सभा में परम पूज्य मुनिश्री १०८ अक्षयसागरजी महाराज व ऐलक श्री १०५ उपशमसागर जी महाराज के पुनीत सानिध्य में समाधिस्थ आचार्य श्री १०८ विद्यासागरजी महामुनिराज के चित्र का अनावरण प्रभात जैन, जयेश शाह, दिलीप घेवारे, किरीट दोशी ने किया और दीप प्रज्वलन राजेंद्र सेठी, मनीष जैन, प्रमोद भारल, मयंक जैन, मनोज बड़जात्या ने किया। सभा के शुभारंभ के लिए व्रती डॉ. मोनिका शाह ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया, इसके पश्चात मुनिश्री के चरणों का प्रक्षालन व उनके हस्तकमलों में शास्त्र भेंट कर कार्यक्रम की श्रृंखला को आगे बढ़ाया गया। गुरुदेव के चरणों में दिलीप घेवारे, पद्मा जैन, प्रभात जैन, कमल गंगवाल, इंदु जैन, प्रवीण जैन, डॉ. सुहास शाह, ब्र. कल्पेश भाई, ब्र. देवेंद्र भाई, शांतिनाथ जांगड़े एवं राकेश जैन आदि ने अपनी शब्दमयी विनयांजलि प्रस्तुत की।

मुनिश्री १०८ अक्षयसागरजी महाराज ने अपने प्रवचनों में आचार्यश्री को युगदृष्टा संत निरूपित किया

मुनिश्री १०८ अक्षयसागरजी महाराज ने अपने प्रवचनों में आचार्यश्री को युगदृष्टा संत निरूपित किया और बताया कि कैसे वे दक्षिण से उत्तर भारत के कुंडलपुर में गुरुदेव के पास पहुंचे और उसके बाद उनके जीवन की दशा और दिशा बदल गई और वे मोक्ष मार्ग में आगे बढ़े। मुनिश्री ने बताया की एक बार १९८७-८८ में कुंडलपुर में जब वे ब्रह्मचारी अवस्था में थे, तब उन्हें भयंकर तीव्र ज्वर हो गया था, १०४ डिग्री तक

चला गया था। वे आचार्यश्री की समयसार की कक्षा में पढ़ने नहीं जा पा रहे थे और चटाई ओढ़कर सोए थे, तभी उनके सिर पर किसी ने हाथ फेरा, अक्षयसागरजी ने आंखें खोलकर देखा तो वह हाथ उनके गुरुदेव आचार्य विद्यासागरजी महाराज का था, इस प्रकार उन्होंने बताया कि गुरु का अपने शिष्यों के प्रति कितना वात्सल्य था, जो झरता रहता था। उन्हीं गुरु का प्रताप है जो आज दक्षिण का एक साधारण युवा जिसे केवल णमोकार का ज्ञान भर था वो आज मुनि बनकर मूलाचार का पालन कर रहा है।

आजीवन मांसाहार के त्याग, गोवंश को कत्लखानों से बचाने का संकल्प

देश के विभिन्न राज्यों के छोटे-बड़े गांवों व नगरों में समाधिस्थ आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज को विनयांजलि दी गई, अनेक स्थानों पर मांसाहारी व्यक्तियों ने आजीवन मांसाहार के त्याग का संकल्प लिया। मुंबई की संस्कारधाम जीवदया संस्था ने ७७७७ गोवंश को कत्लखानों से बचाने का संकल्प लिया, इस कार्य में घाटकोपर से नरेश संघवी व गोरेगांव से किरीट दोशी अपनी संस्था के साथ प्राणप्रण से लगे हुए हैं और गुरुदेव के जीवदया के संदेश को जन-जन तक पहुंचा रहे हैं। कार्यक्रम का संचालन प्रतीक जैन व लवकेश जैन किया। णमोकार मंत्र की स्तुति के साथ सभा का समापन हुआ।

डोडिया गांधी प्रतिष्ठा महोत्सव समिती के मुख्य संयोजक बने

अहमदाबाद: जाने माने प्रतिष्ठित समाजसेवी, उदार हृदयी, समाज के शिखर पुरूष, समाज रत्न, धर्मनिष्ठ, श्रेष्ठवर्य समस्त जैन पंथों की एकमात्र 'जिनागम' पत्रिका के प्रबुद्ध पाठक व सहयोगी बाबुलाल धनराजजी डोडिया गांधी धुम्बड़िया हाल अहमदाबाद को ३० मार्च २०२४, शनिवार को साहित्य सम्राट, सौम्य स्वभावी, अचलगच्छाधिपति, परम पूज्य आचार्य भगवंत श्री कलाप्रभसागरसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा आशीर्वाद प्रदान कर श्री आर्यरक्षित जैन श्वेताम्बर तीर्थ दंताणी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव समिती का मुख्य संयोजक मनोनित किया गया।

श्री आर्यरक्षित जैन श्वेताम्बर दंताणी के अध्यक्ष महोनलाल सिंघी ने 'जिनागम' पत्रिका को बताया कि परम पूज्य राजस्थान-दक्षिण दीपक, अचलगच्छाधिपति, आचार्य, भगवंत गुरूदेव श्री कलाप्रभसागरसूरीश्वरजी म.सा. की पावनतम निश्रा में ३० मार्च २०२४, शनिवार को अहमदाबाद के मणिनगर स्थित श्री अचलगच्छ जैन उपाश्रय में ट्रस्टी मण्डल की प्रभावी बैठक हुई। बैठक में तीर्थ के प्रगति विवरण के साथ अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव संबंधित चर्चा की गई। बैठक में गुरूदेव श्री की आज्ञा से धुम्बड़िया निवासी श्रेष्ठीवर्य श्री बाबुलाल धनराजजी डोडिया गांधी अहमदाबाद को प्रतिष्ठा महोत्सव समिती के मुख्य संयोजक मनोनयन की उद्घोषणा की गई। तीर्थ के ट्रस्टी संघवी अमृतलाल कटारिया ने बताया कि बैठक में निर्माण समिती के सभी सदस्यों व मोरसीम निवासी चंदनमल पुखराजजी कटारिया संघवी को ट्रस्टी मनोनीत किये गए। निर्माण समिति के संयोजक तेजराम दोशी ने 'जिनागम' को बताया कि मंदिर निर्माण का कार्य लगभग पूर्णता की ओर अग्रसर हैं व दादावाडी का काम भी द्रुत गति से प्रारंभ हो गया है। ट्रस्टी मण्डल द्वारा प्रतिष्ठा की तैयारियां जोर-शोर से शुरू कर दी गई है। गुरूदेवश्री के मांगलिक आशीर्वाद के साथ बैठक संपन्न हुई।

-श्री आर्यरक्षित जैन श्वेताम्बर जैन तीर्थ -दंताणी

With Best Compliments From

GIRIAS®

The Consumer Durable People

MOST TRUSTED HOUSE HOLD NAME SINCE 1971

SINCE 1971

160 MEGA SHOW ROOMS

ELECTRICAL AND ELECTRONICS CONSUMER DURABLE PEOPLE

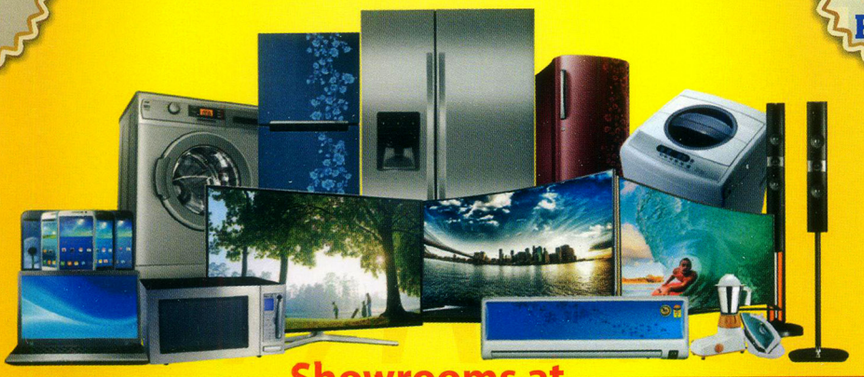

Showrooms at

YELAHANKA
Rudreshwara Chambers
Yelahanka New Town
Sharavathi Hotel Building
Ph: 48504464

COLES PARK
No.41 (Park Grand)
St John's Chruch Road
Ph: 25362525

MATHIKERE
Opp. Ramaiah Kalyana
Mantapa, Gokula
(Near BEL Circle)
Ph: 23450101

KATHRIGUPPE
Kathriguppe Main Road
Diagonally Opp. Big Bazar
Banashankari
Ph: 9035499288

MARATHAHALLI
Outer Ring Road
(Opp. Home Town)
Ph: 90354 99011

BANNERGHATTA ROAD
NS Palya, BTM 2nd Stage
(Next To Shoppers Stop)
Ph: 2678 3030

BANASHANKARI
Ring Rd Iliyas Nagar
Near Sarakki Signal
Ph: 2671 5654

GANDHINAGAR
1st Main Road
Ph: 2220 4189

BRIGADE ROAD
138, Shoolay Circle
Ph: 2211 8871

MYSORE ROAD
Opp. Indian Oil Bunk
Ph: 2674 1227

HOSUR ROAD
Near Silk Board Flyover
Ph: 2572 4947

INDIRANAGAR
100 Ft Road
Ph: 2520 2880

HRBR LAYOUT
Opp. Kalyan Nagar
Bus Depot
Ph: 90354 99177

SADASHIVNAGAR
Opp.Cauvery Theatre
Circle
Ph: 2361 2745

JAYANAGAR
Opp. Dayanand
Sagar Mantap
Ph: 90354 99077

RAJAJINAGAR
Next to National Public
School, WOC Road
Ph: 2311 9237

BASAVANGUDI
"Chitra Court" Sankaramutt Vani
Vilas Junction, Vanivilas Road
Ph: 90354 99244

KORAMANGALA
80 Feet Road
Sony Junction
Ph: 9035411200

NAGARABHAVI
Ring Road
Near BDA Complex
Ph: 2318 6902

HOSUR
4,Prabhu Complex
Post Office Road
Ph: 04344 243633

BRANCHES: ✶ HUBLI: 90354 99155 ✶ MANGALORE: 90354 99211 ✶ MYSORE: 90354 99099 ✶ DAVANGERE: 9591987864 ✶ DHARWAD: 9591987863 ✶ CHENNAI: 044 26264233 ✶ COIMBATORE: 0422 2230615 ✶ SALEM: 0427 2330734 ✶ THIRUVALLUR: 044 27663299 ✶ POLLACHI: 04259 220031 ✶ HOSUR: 04344 243633 ✶ MADURAI: 0452 2343733 ✶ TIRUPPUR: 0421 2243633

BANGALORE H.O.
GIRIAS INVESTMENT PVT LTD
#47,3rd Main Road, Near Tel. Exchange
Bangalore - 560 003
Ph: 080 41411663

CHENNAI
GIRIAS INVESTMENT PVT LTD
No 249, AH Block, 7th Main Road, 1st Street
Shanthi Colony, Chennai 600 040
Ph: 044 26223633.

SOUTH INDIA'S NO.1 CONSUMER DURABLE RETAILER.

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.maibharathun.co.in

युग शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी के
चरणों में भावपूर्ण विनयांजलि

आचार्य श्री 108 विद्यासागर गुरुवे नमः

ASHOK JAIN - CMD
Mob: 94141 01170

WAGAD

WAGAD INFRAPROJECTS PVT. LTD.

414, The Time Square Arcade, Near Baghban Party Plot,
Thaltej - Shilaj Road, Ahmedabad, Bharat - 380 059
Ph: 079-3521 2802 | Email: admin@wagadinfra.com/ Email: ashokjain@wagadinfra.com

औरंगाबाद में महावीर जन्म कल्याणक पर्व के अवसर पर भव्य दिव्य शोभायात्रा निकाली गई

धर्मनगरी औरंगाबाद में चैत्र शुक्ल त्रयोदशी रविवार दिनांक २१ अप्रैल २०२४ को २६२३ वें महावीर जन्म कल्याणक के अवसर पर भव्य दिव्य शोभायात्रा अनुशासन प्रिय जैन समाज की महिलाएं, पुरुष, बालक एक कतार में चलना, संपूर्ण महाराष्ट्र के लिए ही नहीं भारत वर्ष के लिए आदर्श आचरण रहा। श्वेताम्बर-दिगम्बर जैन पंथ के साथ माहेश्वरी आदि का साथ, सबका विचार, सबका अनुशासन यहां की विशेषता रही,

राष्ट्रसंत सारस्वताचार्य मुनि देव नंदी जी

सामाजिक एकता, अहिंसा, अपरिग्रह, पर्यावरण संवर्धन, जल का बिंदु बचाव, शाकाहार की जन जागृति, सजीव निर्जीव दिखावे में से समाज जागृति का दर्शन हो रहा था। ढोल ताशे, लेजियम पथक, धर्मनगरी की चर्चा विषय बना।

राष्ट्र संत, सारस्वताचार्य मुनि देव नंदी जी, आचार्य मुनि विभव सागर जी, आर्यिका कुलभूषण माताजी, किरण सुधा जी की प्रेरणा से उत्साह उमंग बना हुआ था। जुलूस पैठण गेट से निकलकर गुलमंडी, चौक सिटी, चौक सराफा, शाहगंज, राजा बाजार पहुंचा, इस अवसर पर बोलते हुए राष्ट्रसंत सारस्वताचार्य मुनि देव नंदी जी ने कहा की तीर्थंकर महावीर जी के सिद्धांत सत्य, अहिंसा, शांति, अपरिग्रह, आज भी प्रासंगिक है, मानवता विश्व बंधुत्व अहिंसा अखिल विश्व की देन है, इस अवसर पर राजेंद्र दर्डा, महावीर पाटनी, प्रशांत बोथरा, विकास जैन, ललित पाटनी, विकास जैन, दशहरा कासलीवाल तथा डॉ. राजेश पाटनी, दिनेश सेठ, दिलीप पाटनी, मुकेश साहू, निलेश पहाड़े पत्रकार और मीना पापड़ीवाला, संगीता संचेती आदि आदि उपस्थित

थे। 'जियो और जीने दो', जय महावीर, 'अहिंसा पर्व धर्म' की सदा जय हो, इन नारों से धर्म की नगरी गुंजायमान हो रही थी।

- एम.सी. जैन

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

धुलियान में महावीर जन्म कल्याणक पर्व मनाया गया

धुलियान पश्चिम बंगाल: तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक का आगाज प्रभात फेरी के साथ हुआ, कलश शांतिधारा व पुजन के बाद रथ में भगवान को विराजमान कर भव्य जुलुस निकाला गया। पुरुष वर्ग सफेद वस्त्र व महिलाएं केशरीया वस्त्र धारण कर जुलुस की शोभा बड़ा रही थी। जुलुस में गुंज रहा था तीर्थंकर महावीर की जय! अहिंसामय जैन धर्म की जय! आज का दिन क्या चाहता है शांति! शांति का एक मात्र उपाय अहिंसा से.., अहिंसा के पुजारी तीर्थंकर महावीर का दिव्य संदेश 'जिओ और जिने दो'। आंधी हो या तुफान हो, आगे बढते जाना है, महावीर की वाणी को घर-घर तक पहुंचाना है। 'जिसकी विश्व में आज बहुत जरूरत है' महावीर स्वामी का मस्तकाभिषेक हुआ। धुलियान में होम्योपैथिक दातव्य औषधालय चल रहा है उसके लिए दान निकाला गया, दोप्-हर को महावीर चालीसा, संध्या को महाआरती के पश्चात तीर्थंकर को पालकी में झुलाने का कार्यक्रम हुआ, तदपश्चात धार्मिक, सांस्कृतिक अनुष्ठान का आयोजन रखा गया, सबने अपना प्रतिष्ठान जन्म कल्याणक के दिन पुर्ण रूप से बंद रखा।

- संजय कुमार बड़जात्या जैन
धुलियान प. बंगाल

जैन सोशल ग्रुप ने महावीर भक्ति कर गायकों ने बांधा समां

ठाणे: जैन सोशल ग्रुप, सकल जैन समाज के संयुक्त तत्वावधान में विराज बैंकेट हॉल, स्वास्तिक रेगालिया सोसायटी वाघबील रोड, ठाणे में महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक मनाया गया। कार्यक्रम में भाजपा विधायक संजय केलकर, विधान परिषद सदस्य निरंजन डावखरे और भाजपा ठाणे इकाई अध्यक्ष संजय वाघुले आदि ने भाग लिया। सुबह महावीर स्वामी का वरघोड़ा निकाला गया, इसके बाद महावीर भक्ति कर जैन सोशल ग्रुप ने अपने भक्ति गीतों से लोगों को भावविभोर कर दिया। आयोजन में गीतकार नीकेश बरलोटा ने समां बांध दिया। आयोजन को सफल बनाने में प्रकाश श्री श्रीमाल, ललित कोठरी, पंकज खमेसरा, कल्पेश विनोद बोहरा, पुखराज प्रवीण कराड, संस्था अध्यक्ष कमलेश कुमठ, मंत्री प्रवीण कराड, कोषाध्यक्ष पंकज कोठारी, महिला मंडल अध्यक्ष रवीना खमेसरा, मंत्री मंजू कोठारी आदि का योगदान रहा।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के जन्म दिवस व दीक्षा दिवस पर नमन्

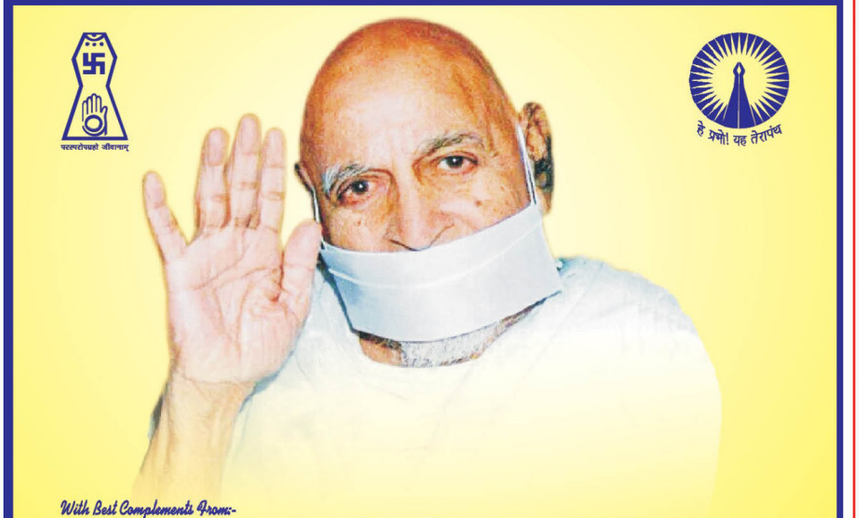

With Best Compliments From:-
Jain Labels Pvt. Ltd
AN ISO - 9001 : 2000 CERTIFIED CO.
Manufacture of: Woven Labels, Printed Labels, Cotton Labels
Hang Tag, Jacquard Tapes, Narrow Fabric Tapes
Regd. Off.: 7/11, Anand Parbat, Industrial Area
New Delhi - 110005 (INDIA)
Phones : (91 11)- 28761808, 28761828, 28764339
Email-sales@jainlabels.com, vinod@jainlabels.com
Factory : 35, Phase - I, H.S.I.D.C.
Industrial Area, KUNDLI (Sonepat)
Phone 95130-2370483.95130-2371045
Email- works@jainlabels.com

B.K. DYEING INDUSTRIES
The Complete Polyester Yarn Dyeing Plant
Available In More Than 1000 Shades
SOLE DISTRIBUTOR
BIMAL SINGH KAMAL SINGH
STREET NO.4, PLOT NO. 71,
ANAND PARBAT INDUSTRIAL AREA,
NEW DELHI-110005
TEL. : (91 11) -28762716, 28761491
Email- sales.bsks@gmail.com

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक समारोह के उपलक्ष्य में

गरिमामय उपस्थिति प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि मेरा सौभाग्य है कि प्रज्ञा सागर महाराज जी का भी विशेष आशीर्वाद प्रदान हुआ।

गुरुवर प्रज्ञा सागर जी महाराज के आर्शीवाद एवं सभी संतों के आर्शीवाद से देश के प्रधानमंत्री जी को चक्रवर्ती पद से सम्मानित किया गया। जैन समाज की ओर १०० रू. का सिक्का लॉन्च किया गया एवं पावापुरी डाक टिकट का भी उद्घाटन किया गया, यह बड़ा पुण्य अवसर था कि मुझे भगवान के निर्वाण महोत्सव की उद्घाटन में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, यह संभाषण प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हजारों की भीड़ के बीच कहा।

भारत वर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष मा. श्री निर्मल कुमार सेठी जी की पुण्यतिथि २७ अप्रैल को मनाई गई

नयी दिल्ली/औरंगाबाद: एक महान उद्योगपति, महान समाजसेवी, धर्म ग्रंथो के अभ्यासक, मुनि भक्त निर्मल कुमार सेठी जी एक सीधे साधे व्यक्ति, सहज जमीन पर भी बैठ जाने वाले, सामान्य व्यक्ति से मिलकर हाल-चाल पूछने वाले, बड़े ही सरल स्वभाव के 'जैन एकता' के परम समर्थक थे, जब भी औरंगाबाद आते चिकलथाना एरोड्रम पर हम स्वागत के लिए जाते, ३०-३५ वर्षो से सेठी जी से जुड़ा रहा, सेठी जी महाराष्ट्र के जैन समाज की स्थितियों के बारे में चर्चा करते, अत्यंत आत्मविश्वास के साथ अनेक पहलुओं के बारे में पूछते हुए हमेशा उत्साही रहते, यह उनकी विशेषता थी। एक बार हम णमोकार तीर्थ में एक समारोह में मिले, साथ ही बैठे, तब उन्होंने समाज की आर्थिक हालात, महिलाओं की स्थिति को लेकर चर्चा की और उचित कदम उठाने पर विचार व्यक्त किया। निर्मल कुमार जी सेठी कितने चिंतित थे, इसका एहसास हुआ। एक उद्योगपति महान समाज सेवक होते हुए समाज के प्रति, कमजोर वर्गों के प्रति सजग थे। २००७ में राष्ट्रीय पुरस्कार हेतु हम दिल्ली गए, निर्मल जी ने हमें आमंत्रित कर महासभा कार्यालय में सम्मान कर 'चरित्र चक्रवर्ती' ग्रंथ भेंट स्वरूप दिया तथा शाम को अपने कार में भोजन के लिए निजी आवास पर ले गए। निर्मल कुमार जी सेठी जैसा व्यक्ति, लाखों करोड़ों में एक होते हैं यादें अनेक हैं, स्मृतियां हृदयपटल पर अंकित है, ऐसे व्यक्तित्व के महामानव को हार्दिक श्रद्धांजलि।

- एम.सी. जैन

VALUE COUNTER MODEL - KM 9014A
UPDATES WITH NEW NOTES

FEATURES :
- Automatic start, stop and clear.
- With Batch, Add and Self-checking functions.
- UV, MG, IR and MT counterfeit detection.
- Automatic half-note, chained note detecting.
- Double-note detecting with IR.
- LCD turns red when detects fake note.

SPECIFICATIONS :
- Counting Display : 4 digits
- Batch Display : 3 digits
- Counting speed : 1000pcs/min
- Hopper Capacity : 300 notes
- Stacker Capacity : 200 notes
- Size of countable note : 50*110-90*190mm
- Power Supply : AC220V±10% 50Hz
- Power Consumption : ≤ 80W
- Size of box : 375*333*251 mm

KUSAM-MECO®
An ISO 9001:2015 Company
Shop No. 18, 1st floor, CIDCO Shopping Complex, Plot No 9, Sector-7, Rajiv Gandhi Marg, Sanpada,Navimumbai-400705. INDIA. Tel.: 022-27754546, 27750662 / 0292
Email :sales@kusam-meco.co.in Web : www.kusamelectrical.com

भारत को 'भारत' ही बोलें
आइये हम सब मिलकर इसकी शुरूआत करें
जय भारत से...

श्वेताम्बर जैन दिगम्बर

'जैन एकता' से ही जैन समाज का विकास व सम्मान बढ़ेगा
मिल कर कहें 'हम-सब जैन हैं'

'जैन एकता' के लिए प्रथम आवश्यकता है 'श्वेताम्बर एवं दिगम्बर' जैन समाज विभिन्न क्षेत्रों पर चल रहे मुकदमों को वापस लेवे
अभी तक सिर्फ चर्चाओं तक हम सीमित हैं इसे कार्य रूप में परिणत करना हो तो दोनों पक्षों को ठोस कार्य करना होगा
दोनों पंथ के प्रतिनिधियों की एक कमेटी बनाई जानी चाहिए जो 'भारत' में चल रहे विभिन्न अदालती मुकदमों के बारे में अंतिम निर्णय ले
जो संस्था या पंथ नहीं माने, उसका सार्वजनिक रूप से बहिष्कार किया जाना चाहिए।
तभी एकता की बात का कोई मतलब रहेगा, मिलकर प्रयास करें तब ही सफलता मिलेगी। जय जिनेंद्र! जय भारत!

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

समन्वय सदभावना संगठन — दिगम्बर जैन महासमिति

डॉ. अशोक जैन बड़जात्या
BE, MS(USE), DBM
राष्ट्रीय अध्यक्ष
मो. 09993722222

दिगम्बर जैन महासमिति

५१५ए मिलिन्दा मेनोर, २ आर.एन.टी. मार्ग, इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत-४५२००१
फोन : ०७३१-२५२९७५१, ४०१०७००
Email : ashok@hindustangroup.com Website : www.hindustangroup.com

!! ॐ अर्हम् !!

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य श्री महाश्रमण जी के ६३वें जन्म वर्ष पर कोटि-कोटि वंदन

Research Dev. & Mfg. Corporation

Manufacturers Of:
SPUR, HELICAL, BEVEL, WORMS,
WORM WHEEL, RACKS & GEAR BOXES

490 (K), 2nd Stage, 4th Phase,
Peenya Industrial Area, Bangalore,
Karnataka, Bharat - 560 058
Ph. : 080 - 22974041
Fax : 080 - 41171049
Mob. : 9448045383 / 9972381111

समस्त जैन पंथों के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ जी के
इक्षु पारणा दिवस 'अक्षय तृतिया' के
पावन पर्व पर शुभकामनाएं

सुनिल उ. शाह जैन

अनिल शाह एंड ब्रदर्स

87/14, सिंधु बिल्डिंग, जी-रोड, मरीन ड्राईव, मुम्बई,
महाराष्ट्र, भारत-400 020, फोनः 022-22818714/22812605
मो. 9820051752

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

युवा समाजसेवी, गौ सेवक कार्य सम्राट बैंगलुरू निवासी महेंद्र मुणोत के कार्यों की झलकियां

कर्नाटक हेम्मेय कन्नडिगा संगठन द्वारा कविका लेआउट में अंबेडकर जयंती के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि युवा समाजसेवी महेन्द्र मुणोत ने संविधान निर्माता भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर के चित्र पर पुष्प अर्पित कर अपने वक्तव्य में कहा, 'हमें अपने संविधान पर गर्व है, कुछ ही दिनों बाद लोकतंत्र का उत्सव लोकसभा चुनाव है, हमारा एक वोट भी निर्णायक हो सकता है, अत: चुनाव के दिन राष्ट्रहित में अवश्य मतदान करें।'

चैलेंजिंग रॉकर्स डांस स्टूडियो द्वारा चंद्रा लेआउट में सांस्कृतिक कार्यक्रम 'पुनीत नमना' का आयोजन किया गया। बाल प्रतिभाओं ने सांस्कृतिक प्रस्तुति से दर्शकों का मन मोह लिया, इस अवसर पर युवा समाजसेवी महेन्द्र मुणोत एवं अभिनेता दीक्षित शेट्टी अतिथि के रूप में उपस्थित थे। स्टूडियो के आनंद शेट्टी ने अतिथियों को सम्मानित एवं बच्चों को पुरस्कृत किया।

चातुर्मास २०२४

- चातुर्मास प्रारम्भ आषाढ़ शुक्ला १४, शनिवार २० जुलाई, २०२४
- चातुर्मास समाप्त कार्तिक शुक्ला १५, शुक्रवार १५ नवम्बर, २०२४
- पर्युषण पर्व भाद्रपद कृष्णा १४ से प्रारम्भ
- संवत्सरी महापर्व भाद्रपद शुक्ला ५, रविवार
- फाल्गुनी चौमासा-फाल्गुन शुक्ला १४, गुरूवार १३ मार्च, २०२५
- आद्रा नक्षत्र २० जून को रात्रि ०६.१० से प्रारंभ...
  स्वाती नक्षत्र १ नवम्बर को दिन ०३.३१ तक

लगेरी स्थित अंगला परमेश्वरी देवस्थान में आयोजित 'देवी मां पूजा महोत्सव' कार्यक्रम में जन समूह को संबोधित करते हुए विशिष्ट अतिथि युवा समाजसेवी श्री महेन्द्रजी मुणोत।

अखंड भारत खादी महासंगठन द्वारा रविंद्र कला क्षेत्र में आयोजित 'खादी उत्सव एवं अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' कार्यक्रम में महिला साधकों को पुरस्कृत करते हुए संगठन की अध्यक्षा निवेदिता, युवा समाजसेवी महेन्द्रजी मुणोत, ममता देवराज, सर्वोत्तम शेट्टी एवं अन्य अतिथि।

नागरभावी क्षेत्र में आयोजित 'लक्ष्मी उत्सव' कार्यक्रम में मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत ने देवी मां की विशेष पूजा अर्चना कर आशीर्वाद लेकर अपने वक्तव्य में कहा, 'कुछ ही दिनों बाद लोकतंत्र का उत्सव लोकसभा चुनाव आने वाला है, हमारा एक वोट भी निर्णायक हो सकता है, उस दिन पब्लिक होलीडे है लेकिन यह ना भूलें कि यह वोटिंग डे भी है, प्रत्येक मतदाता भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए राष्ट्रहित में अवश्य मतदान करे।' ये सभी जानकारी भूपेन्द्र एस. भानावत ने एक विज्ञप्ति द्वारा 'जिनागम' पत्रिका को दी है।

हाय, हैलो छोड़िये, जय जिनेन्द्र बोलिए!

Ideal place for
Marriages, Conferences & Relaxation
Khanvel RESORT SILVASSA
09320023557
09824056861
022-26352635
022-26305555
follow us on:
/thekhanvelresort
/khanvelresort
www.khanvelresort.com
sales@khanvelresort.com

!! ॐ अर्हम् !!
जय आचार्य भिक्षु जय आचार्य तुलसी जय आचार्य महाप्रज्ञ
आचार्य महाश्रमण जी के जन्म दिवस पर
कोटी-कोटी वंदन!
AEC HOUSE OF SWITCHGEAR & CABLE
Pratik Baid (M.D. Partner)
+91 95371 65041
sales@aecswitchgear.com
AHMEDABAD ELECTRIC CORPORATION
HOUSE OF SWITCHGEAR & CABLE
B- 25, 37, 38, Adarsh Gold Estate, B/h. Abhishree Estate,
Opp. CISF Camp, Odhav Ring Road, Odhav, Ahmedabad - 382430.
M: +91 98253 25835
www.aecswitchgear.com
9724669118
Authorised Distributor :
KEI Wires & Cables
Schneider Electric | ABB | SIEMENS SWITCHGEAR | L&T SWITCHGEAR
C&S electric | legrand | COOPER Bussmann | selec | POLYCAB

जैन एकता' से ही जैन समाज का विकास व सम्मान बढ़ेगा
मिल कर कहें हम-सब जैन हैं
Samrat Jewellers SJ
नवग्रह रत्नों के व्यापारी
मणिक, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा,
नीलम गोमेदक, लहसुनिया, नवग्रह रत्न अपनी राशी के
अनुसार रत्न धारण करने से हर समस्या दूर होकर,
स्वास्थ लाभ, समुद्र शाली, व हर क्षेत्र
में सफलता प्राप्त होती है
हमारे यहां सभी राशियों के रत्न हमेशा उपलब्ध रहते हैं
एक बार अवश्य संपर्क करें
अनोखीलाल नाहर जैन पंकज नाहर जैन
३१ - ए कीर्तीकर मार्केट, दादर (पश्चिम), मुम्बई,
महाराष्ट्र, भारत - ४०००२८ फोन ०२२-२४३०६६४२
मो: ९८९२८०५०६९
www.samratjewellers.com

May Lord Mahavir Bless You Abundantly &
May Your Life Be Filled With Peace,
Good Health, Prosperity & Compassion.
With Best Compliments
Nimesh N. Kampani
Address:- 141 - Maker Chamber-III, 13th Floor,
Nariman Point, Mumbai,
Maharashtra, India - 400021

!! ॐ अर्हम् !!
जय आचार्य भिक्षु जय आचार्य तुलसी जय आचार्य महाप्रज्ञ

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य श्री महाश्रमण जी के ६३वें जन्म दिवस पर
कोटि-कोटि वंदन
Sampat Baid
Mob: 9971387313
A-156,vivek vihar, phase- 2nd Delhi- 110095

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.maibharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

तप और दान के प्रवाह का पर्व- अक्षय तृतीया

ॐ
राघशुक्लतृतीयाया, दानमासीत् तदक्षयम्
पर्वाक्षय तृतीयेति, ततोऽघापि प्रवर्तते
श्रेयांसोपज्ञमवनौ, दान-धर्म प्रवृत्तवान्
स्वाम्युपेतमिवाऽ शेषव्यवहार नयक्रमः

'अक्षय तृतीया' का दिन महामंगलकारी होता है, इस दिन की महिमा मात्र जैनों में ही नहीं, अजैनों में भी है, वर्ष में कुछ दिन ऐसे हैं जो 'बिना पूछे मुहूर्त' कहलाते हैं, वैशाख सुदी तीज की भी यही महिमा है, इस अवसर्पिणी काल में सर्वप्रथम दान धर्म का प्रारंभ इसी दिन से शुरु हुआ था। अक्षय तृतीया - यह ऐसा त्यौहार है, जिसका महात्म्य बहुत बड़ा और व्यापक है। हिंदू, वैदिक और जैन परंपराओं में 'अक्षय तृतीया' का महत्व बहुत ज्यादा माना गया है, यह जिज्ञासा उठनी स्वाभाविक है कि इस पर्व का नाम 'अक्षय तृतीया' क्यों पड़ा?

अ-क्षय, मतलब, जिसका क्षय नहीं, अर्थात हर हाल में यथावत।

वैशाख मास की इस तृतीया का कभी 'क्षय' नहीं होता, इसीलिए इसे 'अक्षय तृतीया' कहा गया है। भारतीय ज्योतिष शास्त्रानुसार तिथियाँ चंद्रमा और नक्षत्रों की गतिनुसार बनती है, जैसे चंद्रमा की कला घटती-बढ़ती है वैसे तिथियाँ भी घटती-बढ़ती है, एकम से लेकर अमावस्या, पुनम आदि सभी तिथियों में घटबढ़ी चलती रहती है, किंतु वैशाख सुदी ३ याने आखा तीज की तिथि हजारों वर्षों में क्षय तिथि नहीं बनी, यह कभी नहीं घट-बढ़ी, इसलिये इसे अक्षय तिथि कहा गया है, इसे आखा तीज भी कहा जाता है।

'वैशाखमासे राजेन्द्र, शुक्लपक्षे तृतीय का
अक्षय सा निधि प्रोक्ता कृतिका रोहिणी युता

अंक शास्त्री कहते हैं - ३ और ९ की संख्या ऐसी है जो कभी कम नहीं होती, ९ को जोड़ो तो वह हमेशा ९ ही रहता है। (9 X 1=9, 9X2 = 18 = 9, 9X3 =27 = 9) तीन का अंक तो और करामाती है, दुगुना, तिगुना होकर फिर अपने मूल रुप में आ जाता है। कभी घटता नहीं (3X1=3, 3X2=6, 3X3=9, 3X4=12 =3)

वैदिक परम्परा में कहा जाता है कि ऋषि जमदग्नि के पुत्र, परम बलशाली परशुरामजी का जन्म आखा तीज के दिन हुआ था। कुछ लोग मानते हैं कि सतयुग का प्रारम्भ भी इसी दिन हुआ था, इसलिये यह युगादि तिथि भी है। एक बार राजा युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण से 'आखा तीज' पर्व की विशेषता पूछी तो उन्होंने बतलाया - वैशाख शुक्ल तृतीय के पूर्वाह्न में जो यज्ञ, दान, तप आदि पुण्य कार्य किये जाते हैं उनका फल अक्षय होता है, यह विश्वास है कि इस दिन का मुहुर्त सबसे श्रेष्ठ है, इसलिये विवाह, गृहप्रवेश, व्यापार आदि का शुभारंभ अक्षय तृतीया के दिन बहुत होता है। गाँवों में तो इस दिन सामुहिक विवाह होते हैं, कई जगह तो आज भी छोटे-छोटे बच्चों का विवाह कर दिया जाता है, इस दिन सोना खरीदना भी शुभ माना जाता है ताकि घर में लक्ष्मी माँ की कृपा बनी रहे, इस दिन वृंदावन में साल में एक बार बिहारीजी के चरणों के दर्शन होते हैं,

इस दिन मंदिरों में बिहारीजी का चंदन श्रृंगार होता है। 'अक्षय तृतीया' को बद्रीनाथ धाम के द्वार भक्तों के लिये खुलते है, गंगा-स्नान का भी इस दिन बहुत महत्व है।

जैन परम्परा में 'अक्षय तृतीया' के साथ अत्यंत महत्वपूर्ण घटना जुड़ी है, इसलिये जैनों में इस दिन का बहुत अधिक महत्व है। प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ का एक वर्ष के कठिन तप के बाद, इसी दिन श्रेयांसकुमार ने (जो कि प्रभु के पपौत्र थे) इक्षु (गन्ने) रस द्वारा पारणा करवाया था, इस तिथि को अक्षय पुण्य प्रदान करने वाली तिथि कहा जाता है। 'अक्षय तृतीया' को 'दान और तप' दोनों का अद्भुत संबंध जुड़ा होने के कारण ही यह 'अक्षय' बन गया।

तीर्थंकर ऋषभदेव ने चैत्र कृष्णा अष्टमी के दिन बेला (दो उपवास) की तपस्या के साथ दीक्षा ग्रहण की, उनके साथ अन्य ४००० व्यक्तियों ने भी दीक्षा अंगीकार की, इस तपस्या के साथ दो मुख्य बातें थी- अखण्ड मौन तथा पूर्ण निर्जल तप। अखण्ड मौन व्रत धारण कर भगवान ने चऊविहार बेला किया, उसके पश्चात विशेष अभिग्रह ग्रहण कर भिक्षा के लिए नगर में पधारे, परंतु कहीं भी शुध्द आहार नहीं मिलने के कारण ऋषभदेव नगर में भ्रमण करके वापस लौट गये और पुनः आगे का तप ग्रहण किया, इस तरह तप करते हुए १३ महीने और १० दिन व्यतीत हो गये, अंत में वैशाख शुक्ल तृतीया के दिन प्रभु हस्तिनापुर पधारे, उस समय बाहुबली के पौत्र एवं राजा सोमप्रभ के पुत्र श्रेयांसकुमार युवराज थे, उन्होंने उसी रात एक विचित्र स्वप्न देखा - 'सोने के समान दीप्ति वाला सुमेरु पर्वत श्यामवर्ण का कांतिहीन सा हो रहा है, मैने अमृतकलश से उसे सींचकर पुनः दीप्तिमान बना दिया है' उसी रात्रि में सुबुद्धि **शेष पृष्ठ ३७ पर...**

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी के चरणों में कोटि-कोटि वंदन

तेरापंथ धर्मसंघ के ११ वें पट्टधर अहिंसा यात्रा के प्रणेता, महातपस्वी, शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी के जन्म दिवस पर कोटी-कोटी वंदन!

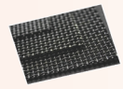

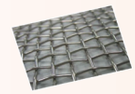

Madan Lal Bothra & Piyush Bothra
Mob. : 98451 81122 / 98868 51911

Since 1975

Jain Wire Netting Stores
ONE STOP SHOP FOR ALL TYPES OF MESH & WIRE PRODUCTS

11, Silver Jubilee Park Road, (SJP Road), Bangalore - 560 002 Ph. : +91-80-2222 4750, 4151 3950, 4163 4105
website : www.jainwirenetting.com e-mail : jwnsblr@gmail.com

पृष्ठ ३६ से... नाम के श्रेष्ठि ने सपना देखा 'सुरज से निकली हजारों किरणों को श्रेयांसकुमार ने पुन: सुर्य में स्थापित कर दिया, जिससे वह सुरज अत्याधिक चमकने लगा।

उस रात सोमयश राजा ने भी स्वप्न देखा 'अनेक शत्रुओं के द्वारा घिरे हुए राजा ने श्रेयांस कुमार की सहायता से शत्रु राजा पर विजय प्राप्त कर ली' स्वप्न के वास्तविक फल को तो कोई जान न सके परंतु सभी ने यही कयास लगाया कि इसके अनुसार आज श्रेयांसकुमार को विशेष लाभ प्राप्त होगा?

राजकुमार श्रेयांस इस विचित्र सपने के अर्थ पर विचार करते हुए गवाक्ष में बैठे हुए थे, उसी समय में राजमार्ग पर प्रभु ऋषभदेव का आगमन हुआ, हजारों लोग उनके दर्शन हेतु विविध प्रकार की भेंट सामग्री लेकर आ रहे थे (लेकिन प्रभु के लिये उन भेटों का कोई महत्व नहीं था, वे तो त्यागी थे, शुध्द आहार की खोज में थे) जनता का कोलाहल, बढ़ती भीड़ और उन सबके आगे चलते प्रभु को देखकर श्रेयांसकुमार विचार में पड़ते हैं और सोचते 'आज क्या बात है, यह महामानव कौन आ रहा है, इस प्रकार का तपस्वी साधक मैंने पहले भी कहीं देखा है, उनकी स्मृतियाँ अतीत में उतरती हैं, चिन्तन की एकाग्रता बढ़ती है और उन्हें जाति-स्मरण ज्ञान हो जाता है' वह जान लेते हैं कि यह मेरे परदादा दीर्घ तपस्वी प्रभु आदेश्वर हैं और शुध्द भिक्षा के लिये इधर पधार रहे हैं, श्रेयांसकुमार महल से नीचे उतरते हैं और प्रभु को वंदन कर प्रार्थना करते है 'पधारो प्रभु! पधारो' उसी समय राजमहल में इक्षुरस से भरे १०८ घड़े आये थे, शुध्द और निर्दोष वस्तु और वैसी शुध्द भावना कुमार की, श्रेयांसकुमार इक्षुरस द्वारा प्रभु को पारणा करवाते हैं। उस समय देवों ने आकाश में देव दुंदभि बजाई, रत्नों की पंचवर्ण के पुष्पों की, गंधोदक की और दिव्य वस्त्रों की, सुगंधित जल की वृष्टी की। अहोदानं! अहोदानं की घोषणा हुयी। पांच दिव्यों की वर्षा हुई। जैन साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका भी इस तरह एक साल का व्रत रखते हैं (१ दिन उपवास दूसरे दिन बियासणा) और आखा तीज के दिन गन्ने के रस द्वारा पारणा करते हैं, इस दिन रस पीना और मंदिर में गुड़ चढ़ाना शुभ माना जाता है। तप और दान की दिव्य महिमा से आज का दिन (याने आखा तीज) पवित्र हुआ। भगवान ऋषभदेव का प्रथम पारणा होने से इस अवसर्पिणी काल में श्रमणों को भिक्षा देने की विधि का प्रथम ज्ञान देने वाले श्रेयांसकुमार हुए, सचमुच ऋषभदेव के समान उत्तम पात्र, इक्षु रस के समान उत्तम द्रव्य और श्रेयांसकुमार के भाव के समान उत्तम भाव का त्रिवेणी संगम होना अत्यंत ही दुर्लभ है।

तप और दान की आराधना करने वाला अक्षय पद प्राप्त कर सकेगा, यही संदेश इस पर्व में छिपा है।

जैनधर्म में मोक्ष प्राप्ति के चार मार्ग बताये गये हैं। दान, शील, तप और भाव। 'अक्षय तृतीया' को दान और तप इन दोनों का अद्भुत संबंध जुड़ा होने के कारण यह अक्षय बन गया।

विशेष: प्रभु ऋषभदेव के पहले भरत क्षेत्र में युगलिक काल था, इस वजह से लोगों में धर्म की प्रवृत्ति का अभाव था। युगलिक काल में सभी मनुष्य युगल (पुत्र-पुत्री) के रुप में पैदा होते थे, प्रभु के सौ पुत्र और दो पुत्रियां थी, जेष्ठ पुत्र को ७२ कलाएं सिखलायी थी, भरत ने भी अपने सभी भाईयों को ये कलाएं सिखलायी, दूसरे पुत्र बाहुबली को **शेष पृष्ठ ३८ पर...**

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.maibharathun.co.in

पृष्ठ ३७ से... प्रभु ने हस्ति, अश्व, स्त्री और पुरुष के अनेक प्रकार के भेदवाले लक्षणों का ज्ञान दिया।

पुत्री ब्राह्मी को दाहिने हाथ से अट्ठारह लिपियां बतलायी और पुत्री सुंदरी को बायें हाथ से गणित की शिक्षा दी, उनकी सारी मनोकामनाएँ कल्पवृक्ष के द्वारा पूर्ण हो जाती थी, सभी युगलिक भद्रिक परिणामी होने से देवगति प्राप्त करते थे, उस समय विवाह व्यवस्था नहीं थी। उस काल में सर्वप्रथम विवाह प्रभु ऋषभदेव का हुआ था। लग्न के विधि-विधान हेतु स्वयं इंद्र महाराजा उपस्थित थे।

प्रभु ने न्याय नीति और व्यवहार धर्म की शिक्षा दी। अपना कल्प (आचार) समझकर प्रभु ने ही पुरुषों को ७२ कलाएं, स्त्रियों को ६४ कलाएं और सभी प्रकार के १०० शिल्प सिखाए थे, परंतु दान आदि धर्मों का बोध नहीं दिया था क्योंकि तारक तीर्थंकर को जब तक केवलज्ञान नहीं प्राप्त हो जाते, धर्म का बोध नहीं देते, असत्य भाषण की संभावना बनी रहती है, केवलज्ञान के पश्चात् प्रभु ने भरतक्षेत्र के जीवों को धर्म की शिक्षा दी। १८ कोडाकोडी सागरोपम से मोक्षमार्ग का जो द्वार बंद था, प्रभु ने उसे खोला, अत: उनका असीम उपकार हम सब पर है।

अक्षय तृतीया जो इस वर्ष २२ अप्रैल २०२३ को है, उसका महत्व क्यों है? जानिए कुछ महत्वपुर्ण जानकारी..

- आज ही के दिन मां गंगा का अवतरण धरती पर हुआ था।
- महर्षी परशुराम का जन्म आज ही के दिन हुआ था।
- मां अन्नपूर्णा का जन्म भी आज ही के दिन हुआ था।
- द्रोपदी को चीरहरण से कृष्ण ने आज ही के दिन बचाया था।
- कृष्ण और सुदामा का मिलन आज ही के दिन हुआ था।
- कुबेर को आज ही के दिन खजाना मिला था।
- सतयुग और त्रेता युग का प्रारम्भ आज ही के दिन हुआ था।
- ब्रह्मा जी के पुत्र अक्षय कुमार का अवतरण भी आज ही हुआ था।
- प्रसिद्ध तीर्थ स्थल श्री बद्री नारायण जी का कपाट आज ही खोला जाता है।
- बृंदावन के बांके बिहारी मंदिर में साल में केवल आज ही के दिन श्री विग्रह चरण के दर्शन होते हैं, अन्यथा साल भर वो वस्त्र से ढके रहते हैं।
- इसी दिन महाभारत का युद्ध समाप्त हुआ था।

'अक्षय तृतीया' अपने आप में स्वयं सिद्ध मुहूर्त है कोई भी शुभ कार्य का प्रारम्भ किया जा सकता है। **- मंजु लोढ़ा जैन, मुंबई**

विभिन्न धर्मावलम्बी व विद्वानगणो ने आचार्य श्री रामलाल जी के दर्शन किए

परमपूज्य युग निर्माता आचार्य भगवन १००८ श्री रामलालजी मसा व बहुश्रुत वाचनाचार्यश्री राजेश मुनिजी मसा. के दर्शन हेतु भदेसर जिला चितौड़गढ राष्ट्रीय पर्यावरण अभियान्त्रिकी अनुसंधान केंद्र नागपुर के सीनियर प्रिंसिपल हेड साइंटिस्ट डॉ रितेश विजय जी, श्रीमती रीमा बिश्वाश जी प्रिंसिपल साइंटिस्ट, श्री अभिषेक बिसारिया साइंटिस्ट, श्री अमित कुमार साइंटिस्ट और सह प्रमुख, जल उपकर्म पीएसजी एवं विद्याभवन पॉलीटेक्निक कॉलेज उदयपुर के प्रिंसिपल श्री अनिल मेहता आचार्य श्री के दर्शनार्थ पधारे।

One Stop Shop for Cooling Solutions
REETESH TRADING CORPORATION
Trusted Name Since 1982
Deals in : Refrigeration , Airconditioning & Washing Machine Appliances & Spares, Voltage Stabilizers, Plastic Bag Sealers, Water Purifiers, Water Heater,Insulation items , controls etc.
A.T. Road, M.C. Choudhary Complex,
Behind Andhra Bank(Union Bank), Guwahati - 781001 (Assam)
Phone : 0361-2735398, 84860 23906 Email : reetcorpghy@gmail.com
V-Square, G.S. Road, Arunodai Path
Christian Basti, Guwahati - 781005
Ph : +91 84860 23908
Email : reeteshdigital@gmail.com
CUSTOMER CARE 84860 23905
Police Reserve Lane, Near Ram Mandir,
Guwahati-781 001
Phone : 0361-2548725 , 84860 23907
Email : reeteshcorp@gmail.com

भारतीय संस्कृति का परम पावन त्यौहार
अक्षय तृतीया पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं
Sumer Chand Patni Jain- 094225 90163
Rajesh Patni Jain- 094220 45502
SHRI BAHUBALI ENGINEERS
SHRI PADMAVATI ELECTRICALS
Suppliers of All type of Bearings
Repairs & Rewinding of Electric Motors
12/814, Kagwadi Mala, Near Jain Mandir, Ichalkarani,
Dist. Kolhapur, Maharashtra, Bharat-416115, दूरध्वनि : 0230- 2422158
अणुडाक : patnirajesh72@gmail.com, arpan000@gmail.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!!

।। ॐ अर्हम् ।।

जय आचार्य भिक्षु जय आचार्य तुलसी जय आचार्य महाप्रज्ञ

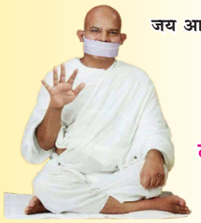

छाई है खुशिया संघ में, मना रहे जन्मोत्सव
तेरी अमृत-वर्षा गण में, खिलाती रहे नव-पल्लव
युगों-युगों तक तारणहार, करो तुम संघ संचालन
महान है श्रमणत्व तुम्हारा, जय-जय महाश्रमण

Mahabir Lal Baid
Navratan Mal Baid
Mob: 9874235374 / 9831106543

Ganesh Steel & Alloys Ltd.

Office :
14, Netaji Subhas Road, 3rd floor,
Room No 304 & 315 Saathi Chamber, Kolkata - 700001
Email: gssteelalloys@rediffmail.com

Works:
NH-2, Delhi Road, Serampore, Hooghly, West Bangal - 712 203

Manufacturing of Alloy Steel & Stainless Steel Ingot

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

।। ॐ अर्हम् ।।

जय तुलसी जय भिक्षु जय महाप्रज्ञ

अहिंसा यात्रा-अणुव्रत से, युगधारा में भर रहे प्राण
दृष्टि तुम्हारी है राष्ट्र का, हो सर्वांगीण निर्माण
नयी पीढ़ी को मिलता रहे संस्कारों का सिंचन
महान है श्रमणत्व तुम्हारा, जय-जय महाश्रमण

BINOD KUMAR GANG
Mob: 9435 074716

Nathmal Hemraj / Gang Brothers

Madan Mohan Road, Karimganj,
Assam, Bharat - 788711

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय भिक्षु ।। ॐ अर्हम् ।। जय महाश्रमण

तेरापंथ धर्मसंघ के ११ वें पट्टधर अहिंसा यात्रा के प्रणेता, महातपस्वी, शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी के जन्मोत्सव, पटोत्सव, दीक्षा दिवस पर कोटी-कोटी वंदन!

स्वर्गीय मातोश्री बदाम देवी व स्वर्गीय पिताश्री मनोहर लाल जी सोनी के आशीर्वाद से...

रमेश- ललिता- कार्तिक सोनी परिवार ठाणे (थामला)
कावेरी सन्नी जी मेहता

-:: श्रद्धप्रणत ::-

कावेरी ज्वेलर्स सोनी परिवार (थामला)

7 साई धाम अपार्टमेंट, यशोधन नगर बस स्टाप के पास, ठाणे, महाराष्ट्र, भारत - 400 606 भ्रमणध्वनि : 9820053204

रमेश सोनी : अध्यक्ष-तेरापंथी सभा ठाणे

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

ज्ञान प्राप्ति के बाद ही भगवान महावीर ने दिया उपदेश

- गुलाबचंद कटारिया राज्यपाल असम राज्य

मुंबई: 'जियो और जीने दो' का संदेश देने वाले महावीर स्वामी के २६२३वें जन्म कल्याणक के उपलक्ष्य में नरीमन पॉइंट स्थित यशवंत राव ऑडिटोरियम में महा-महावीरोत्सव धूमधाम से मनाया गया। बड़ी संख्या में मुंबई और सटे उपनगरों से जैन समाज के लोग पहुंचे। भक्तिमय गीत-संगीत, भगवान महावीर के चित्र अनावरण और दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई, इस अवसर पर असम के राज्यपाल गुलाब चंद कटारिया ने कहा कि तीर्थंकर महावीर २६०० वर्ष पहले भी प्रासंगिक थे, आज भी हैं और भविष्य में भी रहेंगे। महावीर ने माता-पिता की बात मानकर २८ वर्षों तक दीक्षा नहीं ली। माता-पिता की मृत्यु के वाद भाई की बात मानकर दो वर्ष तक उन्होंने दीक्षा नहीं ली। आखिरकार उन्होंने ३० वर्ष के उम्र में दीक्षा ली। उन्होंने कहा, 'आजकल नेता पहले दिन से भाषण देने लगते हैं, लेकिन तीर्थंकर महावीर ने अपने मुख से अमृत वाणी निकालने से पहले साढ़े १२ वर्षों तक घोर तपस्या की, अपने को तपाकर अपने भीतर के जितने भी दुश्मन थे, उन सबको परास्त किया, जब ज्ञान की उपलब्धि हुई, उसके बाद ही उन्होंने अपने मुख से विश्व के कल्याण में बोलना शुरू किया, उन्होंने कहा कि वास्तव में अगर देश को बदलना चाहते हो, तो भाषण से नहीं बदलेगा, बल्कि अपने जीवन से बदलेगा।

सत्य का एक रूप हो ही नहीं सकता सिद्धेश्वर ब्रह्मर्षि गुरुदेव गुरुवानंद स्वामी जी ने कहा कि जीवन सिर्फ प्रदर्शन नहीं, आत्मदर्शन भी होना चाहिए। तीर्थंकर महावीर का सारा जीवन आत्मदर्शन है, जो आप देखते हो, वह सारा सत्य नहीं है, सत्य का एक रूप नहीं हो सकता, वहीं, देवेंद्र ब्रह्मचारी ने कहा कि महावीर किसी जाति, धर्म, संप्रदाय के नहीं, वल्कि जन-जन के हैं, उनकी प्रासंगिकता पहले से अधिक है, अतः उनके सिद्धांतों को जन-जन पहुंचाना आवश्यक है और यही मेरे जीवन का उद्देश्य है।

इस अवसर पर गुरुदेव आचार्य नयपद्मसागर सूरीश्वर, साध्वी नमीवर्षा और नेहवर्षा, आचार्य लोकेश मुनि ने भी तीर्थंकर महावीर के शांति और अहिंसा के संदेश के महत्व को रेखांकित किया, इस अवसर पर महेंद्र तुरखिया, घेवरचंद बोहरा, श्री खंडेलवाल दिगम्बर जैन समाज के अध्यक्ष सीए के. सी. जैन, महावीर इंटरनैशनल के अध्यक्ष घनश्याम मोदी, राकेश कोठारी, राज पुरोहित, अतुल शाह, राकेश नाहर, उत्तम शाह, कुमार बोहरा, संगीता कासलीवाल, कृपा शाह, सुमन कोठारी सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे।

!! श्री पार्श्वनाथाय नमः !!
चलो शिखर जी
अक्षय तृतीया की हार्दिक शुभकामनाएं

अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर श्री सम्मेद शिखरजी यात्रा की घोषणा
चलो शिखरजी : समस्त भारत से 11000 यात्रियों की
श्री सम्मेदशिखरजी 11वीं यात्रा
15 व 16 अक्टूबर से 20 अक्टूबर 2024

दिल्ली एवं एनसीआर से यात्रा 16 अक्टूबर को प्रस्थान करेगी उपाध्याय श्री गुप्ति सागरजी महाराज के मंगल आशीर्वाद एवं पावन प्रेरणा से 11,000 यात्रियों की श्री सम्मेद शिखरजी की 11वीं यात्रा दिल्ली, गुड़गांव, फरीदाबाद, गाजियाबाद, नोएडा, मेरठ, हापुड़, सहारनपुर, सिकंदराबाद, कानपुर, लखनऊ, जयपुर, किशनगढ़, अजमेर, नसीराबाद, ब्यावर, भीलवाड़ा, कोटो, उदयपुर, चित्तौढ़, जोधपुर, इंदौर, भोपाल, उज्जैन, दमोह, सागर, अहमदाबाद, बड़ौदा, सूरत, मुंबई, पुणे, इचलकरंजी, सदलगा, बंगलौर, चेन्नई, गुहाटी, कलकत्ता, अम्बाला, चंडीगढ़, लुधियाना, जालंधर एवं समस्त भारत से 15 व 16 अक्टूबर 2024 से 20 अक्टूबर 2024 तक जाएगी। आप अपनी टिकट नीचे दिए गये नंबर पर सम्पर्क करके बुक करवा सकते हैं, जो चार्ज लिखा है उसमें आना-जाना, लोकल बस, टैक्सी नाश्ता भोजन, सुन्दर रहने की व्यवस्था, विधान, पूजन, सामूहिक यात्रा सामग्री की सुन्दर कि ट व सभी सुविधाओं के साथ फाइव स्टार यात्रा कर सकते हैं। जो यात्री आर्थिक कारणों से नहीं जा सकते, वो निःशुल्क जा सकते हैं। इसके लिए आप मोबाइल नं. 9355551008 पर अपनी पूरी जानकारी केवल व्हाट्सप्प करें।
टिकट बुक कराने की अंतिम तिथि रविवार 16 जून 2024 तक है। यात्रा शुल्क स्लिपर क्लास 3500/- व 4000/-, 3 एसी में 6100/- व 7100/-, 2 एसी में 8500/- व 9500/-, राजधानी से 3 एसी में 8500/- एवं 2 एसी में 11000/-, फ्लाइट द्वारा 21000/- प्रति यात्री देना होगा।
यात्रा मुख्य संयोजक : पवन जैन गोधा • विजय जैन चांदी वाले • वीरेंद्र सोनी प्रीत विहार, पियूष जैन नरायणा विहार, राजेश जैन खाना खजाना, जिनराज डालमिया, अमित जैन सीए, गजराज जैन गंगवाल, राजेश जैन सीए मॉडल टाउन, जिनेन्द्र जैन नरपतिया, निशांत जैन ग्रीन पार्क, महावीर कासलीवाल इचलकरंजी, सुमित शाह पुणे।

नमनकर्ता : पवन जैन गोधा
डायरेक्टर आदिनाथ टी.वी. चैनल
प्रधान, श्री संकटहरण पार्श्वनाथ जिन मंदिर, गुड़मंडी राणा प्रताप बाग

अरिहंत ट्रेलर सर्विस
27/13 प्रथम तल, एन्डीपीएल आफिस, नगला पार्क, शक्ति नगर, दिल्ली-110007 मो.: 8368222062
ankurjain@arihanttrailer.com

।। ॐ अर्हम् ।।

जय तुलसी जय भिक्षु जय महाप्रज्ञ

अहिंसा यात्रा-अणुव्रत से, युगधारा में भर रहे प्राण
दृष्टि तुम्हारी है राष्ट्र का हो सर्वांगीण निर्माण
नयी पीढ़ी को मिलता रहे संस्कारों का सिंचन
महान है श्रमणत्व तुम्हारा, जय-जय महाश्रमण

बिमल आसकरण जैन (दुगड़)

भ्रमणध्वनि : 98200 25699

अभिमन्यु जैन श्रेयांस जैन

JCC
THE GIANT MOVERS

JCC INDIA PVT. LTD.

Logistics I Infrastructure I Rental

D-4100, BIMA Complex, Kalamboli, Navi Mumbai,
Maharashtra, Bharat - 410 218
Ph. : 022-27425055 Fax : 022-27425066 Email: bimaljain@jccindia.com

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर

'अहिंसा' और 'जैन एकता'
हेतु सदा समर्पित
'जिनागम' यूं ही होती रहे पुष्पित-पल्लवित

Ajay Kumar Bogawat

मो: 9440060553

Mohanlal Naresh Kumar Jain

Gandhi Chowk, Adilabad,
Telangana, Bharat- 504001
Ph:- 08732-226553

श्वेताम्बर जैन दिगम्बर

'जैन एकता' से ही जैन समाज का
विकास व सम्मान बढ़ेगा
मिल कर कहें हम-सब जैन हैं

Imperial Hosiery Factory

15 Brojodulal Street, kolkata,
West Bengal, Bharat- 700006

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु जय आचार्य तुलसी जय आचार्य महाप्रज्ञ

जिनवाणी को जन-जन पहुचाने तुम चलते अविराम
हर शबरी की कुटिया पावन, करते 'तेरापथ के राम'
पुरुषोत्तम तुम कर रहे, मर्यादा-मूल्यों का जागरण
महान है श्रमणत्व तुम्हारा, जय-जय महाश्रमण

Rajendra Baid
Mob: 9326170637/ 9322295793

Ranjit R. Baid
Mob: 9699941780

Laxmi Refrigeration

Dealers In : R-22 & 134 A Gases, Refrigeration,
Air Conditioning & Washing Machines Genuine Spares

Shop No.2, Shree Mayureshwar C.H.S. Ltd.,
Opp. Carmell Girl's High School, Adarsh Lane, Malad (W),
Mumbai, Maharashtra, Bharat -400064

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मै भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

नवम गच्छाधिपति आचार्य श्री के दर्शन कर भक्त हुए निहाल

नवम गच्छाधिपति आचार्यश्री हितेशचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ में प्रथम बार एतिहासिक मंगल प्रवेश

राजगढ/धार: श्री शत्रुंजयावतार प्रभु श्री आदिनाथ भगवान व दादा गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की प्रसिद्ध पुण्यभूमि पर श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर पेढ़ी ट्रस्ट के तत्वाधान में दादा गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की पाट परम्परा के अष्ठम पट्टधर गच्छाधिपति आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय ऋषभचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के पट्टालंकार मालवकेसरी नवम गच्छाधिपति आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय हितेशचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा., मुनिराज श्री दिव्यचन्द्रविजयजी म.सा. मुनिराज श्री रुपेन्द्रविजयजी म.सा., मुनिराज श्री वैराग्ययशविजयजी म.सा., मुनिराज श्री जीतचन्द्रविजयजी म.सा. एवं वरिष्ठ तपस्वी साध्वी श्री किरणप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का भीनमाल नगर में आचार्य पद आरोहण के पश्चात् प्रथम बार श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ पर आगमन हुआ, इस अवसर पर सम्पूर्ण मालवांचल, मारवाड़, गुजरात, महाराष्ट्र आदि विभिन्न महानगरों एवं मध्यप्रदेश कई श्रीसंघों के प्रतिनिधि विशेष रुप से उपस्थित रहे। आचार्यश्री आचार्य पद आरोहण के पश्चात् सम्पूर्ण मालवांचल में जिन शासन की प्रभावना करते हुए राजगढ़ नगर में प्रवेश हुआ। श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ के गुरुकुल परिसर में मनावर निवासी श्री रमेशचन्द्रजी खटोड व श्रीमती पुखराज खटोड द्वारा आयोजित नास्ता नवकारसी के पश्चात् आपका विशाल चल समारोह श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ पहुंचा।

चल समारोह में सभी राजगढ़ नगर के महिला मण्डलों की महिलाएं अपनी परम्परागत वेशभूषा में चल रही थी, श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर पेढ़ी ट्रस्ट के महामंत्री फतेहलाल कोठारी, मेनेजिंग ट्रस्टी सुजानमल सेठ, कोषाध्यक्ष हुकमीचंदजी वागरेचा, शांतीलाल सियाणा, कमलचंद लुणिया, मांगीलाल पावेचा, बाबुलाल खिमेसरा, शांतीलाल दैयाप, मेघराज जैन, संजय सराफ, मांगीलाल रामाणी, आनन्दीलाल अम्बोर, कमलेश पांचसौवोरा, बाबुलाल डोडियागांधी, भेरुलाल गादिया, पुष्पराज बोहरा, जयंतीलाल कंकुचौपड़ा, पारसमल बालगोता व सरोड़ पालीताणा

ट्रस्ट मण्डल के ट्रस्टीगणों एवं तीर्थ के महाप्रबंधक अर्जुन प्रसाद मेहता, सहप्रबंधक प्रीतेश जैन सहित सम्पूर्ण पेढ़ी स्टाफ, राजगढ़ नगर के कई वरिष्ठ समाजसेवीगणों ने आचार्यश्री के मंगल प्रवेश पर आगवानी की, इस अवसर पर ट्रस्टी फतेहलाल कोठारी, सुजानमल सेठ, मेघराज जैन व मांगीलाल रामाणी ने धर्मसभा में उद्बोधन दिया।

गच्छाधिपति आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय हितेशचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. ने आचार्य पदवी के बाद श्री मोहनखेड़ा तीर्थ की पाटगादी से प्रथम धर्मसंदेश श्रावक-श्राविकाओं को देते हुए कहा कि तीर्थ भूमि एक ऐसी पुण्यभूति होती है जहां संसार में रहने वाले व धर्म क्षेत्र में धर्म देशना देने वाले साधु-साध्वी सहित जो भी जीव हैं उनके जीवन में मन, वचन, काया से जाने-अनजाने में कोई भी पाप होता है, उसकी निर्जरा तीर्थ भूति स्पर्शना मात्र से हो जाती है। धर्म के क्षेत्र में मेरा एक ही संदेश रहेगा हम हमारे विचार कितने भी भिन्न क्यों ना हो पर दादा गुरुदेव के नाम पर हमें सभी को सारे मन मुटावों को दूर करते हुए एक छत के निचे आकर रहने का प्रयास करना है, साथ ही आगामी २०२७ में दादा गुरुदेव के जन्मजयंती के २०० वर्ष पूर्ण हो रहे है, इस अवसर पर हमें एकता का परिचय देते हुए २०० वीं जन्म जयंती की योजना रुपरेखा इस प्रकार बनानी है कि उससे हमारी आने वाले कई पीढियां याद करती रहें। दादा गुरुदेव के नाम पर हम हमेशा एक बने रहें, यही हमारा प्रयास रहेगा। पालीताणा में १४, १५, १६ जुन में राजेन्द्र भवन के नवनिर्मित धर्मशाला के निर्माता श्री बाबुलालजी धनराजजी डोडियागांधी के निवेदन पर आचार्यश्री ने मुहूर्त प्रदान किया, साथ ही सरोड़ पालीताणा तीर्थ में नवनिर्मित तलहटी एवं आचार्य श्री रवीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा., आचार्य श्री ऋषभचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की प्रतिमा की प्रतिष्ठा हेतु सरोड ट्रस्ट मण्डल को १८, १९, २० जुन का मुहूर्त प्रदान किया।

स्मरण रहे आचार्यश्री वर्षीतप पारणा महोत्सव में निश्रा प्रदान करने हेतु एवं तीर्थ स्पर्शना हेतु श्री मोहनखेडा तीर्थ पर पधारे हैं। प्रवचन के पश्चात् स्वामिवात्सल्य का लाभ मनावर निवासी श्रीमती पुष्पा सुभाषचंदजी भण्डारी 'रत्नराज ज्वेलर्स' द्वारा लिया गया। श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर पेढ़ी ट्रस्ट की ओर से दोनों लाभार्थी परिवारों का बहुमान किया गया एवं आचार्यश्री को ट्रस्ट की और से काम्बली ओढा कर श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ के पाट पर विराजित किया गया।

जैन एकता' से ही जैन समाज का बिकास व सम्मान बढ़ेगा मिल कर कहें
हम-सब जैन हैं

के. सी. जैन मेडिकल स्टोर्स, चिकलठाणा, अजिंठा मेडिकल एंड एज्युकेशन संस्था
एन-४, सिडको, प्रीति क्लीनिक चिकलठाणा, सौ. हेमलता बाई
एम. पाटनी मेडिकल एंड एज्युकेशन संस्था, प्रीति क्लीनिक एन-३,
एम.सी.जैन, पत्रकार ग्रंथालय जैनगिरी, जटवाड़ा, पाटनी लॉन्स,
केंब्रिज के सामने कचनेरजी रोड, चिकलठाणा
एम.सी. जैन पत्रकार-सौ. हेमलताजी एम. जैन, प्राचार्य डॉ. राजेश एम.पाटनी,
सौ. डॉ. स्नेहल आर. पाटनी, दिनेश एम.पाटनी, सौ. मंजूषा डी. पाटनी,
डॉ. प्रीती.आ. टदैया (बी.डी.एस., एम.डी.एस.), डॉ. नीलम (एम.डी.) औरंगाबाद
प्रीतेश आर. पाटनी, प्रतीक डी. पाटनी चिकलठाणा, औरंगाबाद, महाराष्ट्र, भारत-४३१००३

जिसके प्रति हमारे जनता का हृदय फट चुका है उसकी भाषा अंग्रेजी के प्रति अपना मोह हमें छोड़ देना चाहिए - दिनकर
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908
Remove INDIA Name From The Constitution मई २०२४ INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ 'भारतद्वार' लिखवायें

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

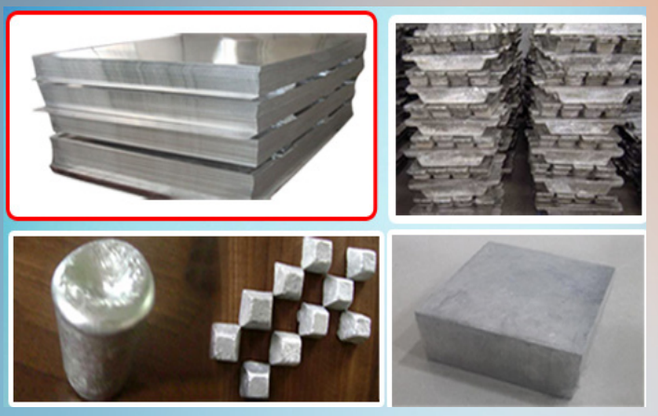

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

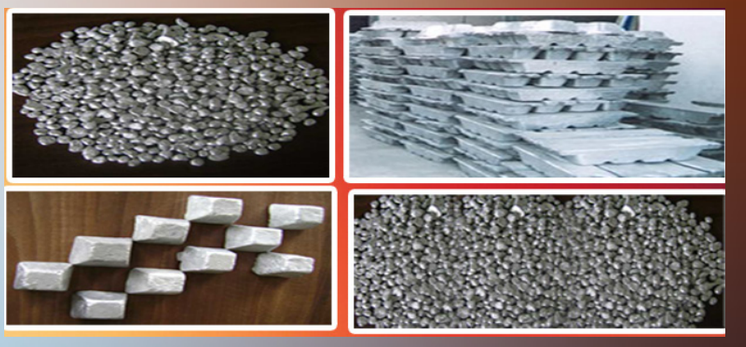

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road, Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय भारत! जय जिनेन्द्र!

भारत को 'भारत' ही बोलेगें INDIA नहीं

प्रकाश बैद
कोषाध्यक्ष आचार्य महाप्रज्ञ महाश्रमण एजुकेशन सोसाइटी कोलकाता
लाडनूं निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८३०१७०६१०

प्रकाश जी आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री बहुत ही शांत प्रवृत्ति के हैं, वे अपने पास आने वाले हर श्रावक की बात बड़े ध्यान से सुनते हैं और उचित मार्गदर्शन देते हैं, उनका आभा मंडल बहुत ही निराला है और उनका मुस्कुराता चेहरा हर किसी को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। उनकी प्रवचन शैली अनोखी है, युवाओं को जोड़ने का अधिक से अधिक प्रयास करते हैं, ऐसी अनेक बातें हैं हमारे आचार्य श्री में।
'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'जैन एकता' आज हमारे समाज में बहुत जरूरी है और इसके लिए सभी को मिलकर प्रयास करना होगा, तभी समाज में एकता स्थापित हो सकेगी। एकता ना होने से आज हमारा समाज टुकड़ों में बटता जा रहा है, जिससे कोई अस्तित्व नहीं रह गया है, अपने धर्म और समाज के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए समाज में 'जैन एकता' होना जरूरी है।
आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ रही है, उन्हें उचित मार्गदर्शन मिले तो वह अवश्य अपने धर्म और समाज से जुड़ी रहेगी।
'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इस अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूं।
प्रकाश जी मूलतः राजस्थान स्थित 'लाडनूं' के निवासी हैं। आपका जन्म रतनगढ़ व सम्पूर्ण शिक्षा 'कोलकाता' में संपन्न हुई है, यहां आप शेयर मार्केट के कारोबार से जुड़े हुए हैं, पूर्व में अमृतवाणी के अध्यक्ष, मंत्री पद पर सक्रिय रहे हैं, आचार्य श्री महाप्रज्ञ महाश्रमण एजुकेशन सोसाइटी के कोषाध्यक्ष हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

कमल बैंगानी जैन
व्यवसाई व समाजसेवी
बिदासर निवासी-दिल्ली प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३१२२१००९४

कमल जी मूलतः राजस्थान के 'बिदासर' के निवासी हैं, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'बिदासर' में ही संपन्न हुयी है, पिछले कई वर्षो से आप 'दिल्ली' के अरिहंत नगर में बसे हुए हैं और यहां लेवल के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। भारतीय जैन संघटना पश्चिम क्षेत्र दिल्ली के अध्यक्ष, अणुव्रत समिति दिल्ली के वरिष्ठ उपाध्यक्ष, जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा दिल्ली के परामर्शक, जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा पश्चिम विहार दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष रहे हैं, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के कार्यकारिणी सदस्य व रोहिणी सभा, बहादुरगढ़ सभा, मानसरोवर गार्डन सभा, नांगलोई सभा, प्रीतमपुरा सभा व पालम सभा के प्रभारी के रूप में कार्यरत हैं। श्री भुवाल माता जी जन सेवा ट्रस्ट में अध्यक्ष की भुमिका निभा रहे हैं। अन्य कई धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं।
कमल जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपना विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि 'जैन एकता' आज हमारे समाज की सबसे बड़ी जरूरत बन गई है। एकता ना होने के कारण ही आज की युवा पीढ़ी अन्य धर्म और समाज के प्रति आकर्षित हो रही है। जैन समाज के बाहर शादियां की जा रही हैं, शादियों में रात्रि भोजन को बढ़ावा दिया जा रहा है। हम पश्चिमी सभ्यता को अपनाते जा रहे हैं और अपने धर्म के महत्व और मूल्य को भूलते जा रहे हैं, यह सब जिन शासन के सिद्धांतों के विरुद्ध हैं, यदि समाज में एकता होगी तो ही हम इन सिद्धांतों को निष्ठा से पालन कर पाएंगे। सभी पंथ व समाज तीर्थंकर महावीर के ही अनुयाई हैं, उनके बताए निर्देशों का अनुसरण करने का प्रयास करते हैं, 'हम सब जैन हैं' इस सिद्धांत को ही महत्व देना चाहिए, यदि 'जैन एकता' स्थापित हो जाती है तो इससे अच्छी और कोई बात नहीं हो सकती, इससे हमें सामाजिक और राजनीतिक महत्व भी प्राप्त होगा।
आज की युवा पीढ़ी का अपने धार्मिक क्रियाकलापों में रुझान बढ़ता जा रहा है, संवत्सरी के दौरान देखा गया की तपस्या करने वालों में अधिकतर युवा पीढ़ी ही थी, जो एक शुभ संकेत है हमारे धर्म और समाज के लिए।
'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि भारत तो हमेशा 'भारत' ही रहा है और 'भारत' ही रहेगा, इस अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूं। जय भारत!

दिलीप कुमार मेहता

उपाध्यक्ष श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ कोलकाता

आसोप निवासी-कोलकाता प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९३३११४५५४४

दिलीप जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि 'जैन एकता' तो होनी ही चाहिए, देखा जाए तो पूरे भारत में जैन समाज की संख्या सबसे कम है,पहले के मुकाबले हमारे समाज की संख्या लुप्त भी हुई है चाहे कारण कोई भी रहा हो और भविष्य में जो माहौल बन रहा है उसमें भी हमारी जनसंख्या और कम हो जाएगी। अपने धर्म और समाज की रक्षा हेतु संपूर्ण जैन समाज को एकसाथ-एकमंच पर आना होगा और इसके लिए सर्वप्रथम हमारे साधु-संत, श्रावक श्राविकाओं व धर्माचार्य सभी को एक मंच के नीचे उपस्थित होकर इस विषय पर कार्य करना होगा, तभी समाज में 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है। आज हमारे साधु-संत अपनी परिपाटी को ही आगे बढ़ाने में लगे हुए हैं।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से विमुख होती जा रही है, इस पर मेरा यही कहना है कि हमें समय के परिपेक्ष में धर्म के साथ-साथ दूसरी चीजों को भी जोड़ना अति आवश्यक है, तभी हम युवाओं को अपने धर्म और समाज से ज जोड़े रख सकेंगे।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'।

दिलीप जी मूलत: राजस्थान के जोधपुर जिले में स्थित 'आसोप' के निवासी हैं, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'कोलकाता' में संपन्न हुई, यहां आप होजरी के कारोबार से जुड़े हुए हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ कोलकाता के उपाध्यक्ष हैं। जय भारत!

दिलीप मुणेत

व्यवसायी व समाजसेवी

केसुर निवासी-इंदौर प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९८९३६७५०१३

दिलीप जी आचार्य श्री महाश्रमण जी के जन्मपर्व पर उन्हें वंदन करते हुए कहते हैं कि वे एक तपस्वी महापुरुष हैं, उनके चेहरे पर जो ओज है, वह सभी को अपनी ओर आकर्षित करता है, उनके सरल स्वभाव और सहज स्वभाव से सभी प्रभावित होते हैं, उनके समझाने की शैली बहुत ही प्रभावशाली है, उनके व्यक्तित्व से सिर्फ 'तेरापंथ' ही नहीं बल्कि अन्य समाज व धर्म के लोग भी प्रभावित होते हैं, ऐसे आचार्य श्री का आशीर्वाद हम पर सदा बना रहे यही कामना करते हैं।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'जैन एकता' होना बहुत जरूरी है क्योंकि आज हमारा समाज संख्या में बहुत कम है, उस पर भी यदि हम बंटे रहे तो हमारे धर्म और समाज का अस्तित्व खतरे में आ जाएगा, इसीलिए 'जैन एकता' होना बहुत जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से कम ही जुड़ी हुई है, वह अपनी आधुनिक जीवन शैली और समय की व्यवस्ता के कारण धर्म और समाज से नहीं जुड़ पा रही है।

दिलीप जी मूलतः राजस्थान के निवासी हैं, पर आपका परिवार कई पीढ़ियों से मध्य प्रदेश स्थित 'केसुर' का निवासी है, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। पिछले १३ सालों से आप 'इंदौर' में बसे हुए हैं और अनाज के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही यथासंभव सामाजिक कार्यों से भी जुड़े रहते हैं। जय भारत!

संपत लाल बैद

राजस्थान निवासी-दिल्ली प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९९७१ ३८७३१३

संपत जी आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री एक बहुत ही शांत व सौम्य व्यक्तित्व के धनी हैं, जिन्होंने संपूर्ण तेरापंथ धर्म संघ को एक माला में पिरो कर रखा है। आज संपूर्ण तेरापंथ धर्म समूह उनके ही दिशा निर्देश में कार्य कर रहा है, उनकी 'अहिंसा यात्रा' ने संपूर्ण समाज को जोड़ने का कार्य किया है, उनके चरणों में मेरा कोटि-कोटि वंदन।

युवा पीढ़ी के विषय में आपका कहना है कि एक मोबाइल है जिसने सारी युवा पीढ़ी का भविष्य खराब कर दिया है, युवा पीढी इसके चक्कर में पड़कर अपने संस्कार, अपनी संस्कृति, अपनी सभ्यता को भूलते जा रहे हैं।

संपत जी का जन्म और संपूर्ण शिक्षा राजस्थान (सुजानगढ़) की है, आप ४५ वर्षों से 'दिल्ली' के विवेक विहार में निवास कर रहे हैं। पूर्व में आप रोजगार से जुड़े रहे, तत्पश्चात स्वयं का आभूषण निर्माण का कारोबार प्रारंभ किया। वर्तमान में सेवानिवृत्त है। आप अपना पूरा समय धार्मिक कार्यों में, पुस्तकों से ज्ञान अर्जित करने में बिता रहे हैं। आप आचार्य महाश्रमण जी व आचार्य महाप्रज्ञ जी के लिखे हुए लेख पढ़ते हैं। आपके गुरु जी का कहना है कि जिसके भाव अच्छे हैं उसका भव अच्छा है। आप देश प्रेम की भावना से भी परिपूर्ण है, आपकी एक दिली इच्छा है कि आप प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी से भेंट करें और उनको देश के विकास और प्रगति के लिए कुछ अपने सुझाव बताएं। जय भारत!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

सुरेंद्र बोथरा

सचिव उत्तर हावड़ा श्री जैन श्वे. तेरापंथ सभा
बीकानेर निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८८३८४७८९०

सुरेंद्र जी आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री एक तटस्थत स्वभाव के संत हैं, उनकी नजर में सभी साधु व श्रावकगण एक समान है, ना कोई छोटा ना कोई बड़ा। उनकी नजर में दोनों का ही मूल्य समान है, आचार्य प्रवर का समता भाव विलक्षण एवं बेजोड़ है। गुरूदेव का आभामंडल बड़ा ही निराला है ऐसा लगता है कि पवित्र तीर्थ के दर्शन हो जा रहे हैं, उनकी संपूर्ण जीवन शैली हमारे लिए प्रेरणा स्त्रोत है, उन्होंने अपनी अहिंसा यात्रा के माध्यम से २७-२८ राज्यों की पदयात्रा की, नैतिकता, नशा मुक्ति, सद्भावना तीन आयामों विशेष जोर दिया। वर्तमान में ऐसा संत प्राप्त होना हमारे लिए गौरव की बात है, उनका मार्गदर्शन हमेशा प्राप्त होता रहे। हम आचार्य श्री के दिक्षा कल्याण के ५०वें वर्ष को दिक्षा कल्याण महोत्सव के रूप में मना रहे है एवं आचार्य श्री के प्रति उनके स्वास्थ्य की मंगल कामना करते है। उनके चरणों में कोटि-कोटि वंदन....

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'जैन एकता' आज हमारे समाज में बहुत जरूरी है और इसके लिए सभी को मिलकर कार्य करना चाहिए विशेषकर हमारे गुरु भगवंतों को इस दिशा में विशेष कार्य करना चाहिए, क्योंकि समाज की रक्षा करने वाले के यदि भाव इस दिशा में होंगे तो समाज में रहने वाला भी इसी दिशा पर आगे बढ़ेगा, लोगों में जागरूकता लानी चाहिए। हमारे पर्व 'संवत्सरी' एकसाथ एकरूप में मनाया जाने चाहिए, जिस विषय पर हमारे मतभेद हैं, उन विषय को छोड़कर जिस विषय पर हम एकमत हैं उन विषयों को लेकर हमें आगे बढ़ना चाहिए और एकता की दिशा में कार्य करना चाहिए।

आज का युवा वर्ग अपने धर्म और समाज से जुड़ रहा है, एक निश्चित उम्र आने पर वह अवश्य अपने धर्म और समाज से जुड़ता है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य अपने देश का नाम सिर्फ भारत ही रहना चाहिए यह शाश्वत नाम है INDIA तो विदेशियों द्वारा थोपा गया नाम है, हमारी पहचान 'भारत' नाम से थी और 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए।

सुरेंद्र जी मूलतः राजस्थान के बीकानेर जिले में स्थित 'गंगाशहर' के निवासी हैं। आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा बिहार व उच्च शिक्षा कोलकाता में संपन्न हुयी है पिछले कई वर्षो से आप 'कोलकाता' में बसे हुए हैं और सीए के प्रोफेशन से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, उत्तर हावड़ा तेरापंथ सभा के सचिव पद पर सक्रिय हैं, गंगाशहर नागरिक परिषद सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

दीपक जैन

व्यवसायी व समाजसेवी
हरियाणा निवासी-दिल्ली प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८१०४७०८६३

दीपक जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि 'जैन एकता' होना बहुत जरूरी है, एकता ना होने के कारण आज हमारा समाज पंथ और संप्रदायों में बंटा व बिखरा हुआ है, जिससे समाज को नुकसान का सामना करना पड़ रहा है, समाज में एकता हो इसके लिए हमारे साधु संतों को विशेष प्रयास करना होगा, यदि साधु संत एकसाथ-एकमंच पर स्थापित हो जाएं तो समाज एकरूप में स्थापित हो सकेगा, अतः सर्वप्रथम हमारे गुरु-भगवंतों को एकसाथ आना जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से तो जुड़ना चाह रही है पर समाज के बड़े बुजुर्गों द्वारा उचित मार्गदर्शन नहीं मिल पा रहा, ना ही प्रोत्साहन मिलता है, हमेशा टोका टाकी होती रहती है, चाहे वह बड़े बुजुर्गों द्वारा हो या साधु द्वारा। यदि युवाओं को सही तरीके से समझाया जाए और उन्हें मौका प्रदान किया जाए, सामाजिक कार्यों व धार्मिक कार्यों को करने के लिए प्रेरित किया जाए तो अवश्य ही युवाओं का अपने धर्म और समाज के प्रति लगाव बढ़ेगा।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इंडिया तो अंग्रेजों द्वारा थोपा गया नाम है, हमारी प्राचीन पहचान और संस्कृति 'भारत' से है और 'भारत' से ही रहनी चाहिए।

दीपक जी मूलतः हरियाणा स्थित 'नांगलोई' के निवासी हैं, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'दिल्ली' में संपन्न हुई है, यहां आप आभूषणों के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। नांगलोई जैन समाज के कार्यकारिणी सदस्य हैं, जैन एकता मंच से जुड़े हुए हैं, दिगम्बर समाज के अन्य संस्थाओं में भी यथासंभव सक्रिय रहते हैं। जय भारत!

'जिनागम' समस्त जैनों की एकमात्र पत्रिका है
इसे पढें व अन्यों को भी पढायें...

मनाया गया महावीर जन्म कल्याणक
२६२३वां जन्म कल्याणक महोत्सव

मुंबई-भिवंडी: दुनिया को अहिंसा, दया, क्षमा, शांति, मित्रता के साथ ही जियो और जीने दो का संदेश देने वाले जैन धर्म के २४वें तीर्थंकर महावीर स्वामी का २६२३वां जन्म कल्याणक महोत्सव भिवंडी शहर में बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। श्री समस्त जैन महासंघ की ओर से अनुशासित तरीके से आयोजित शोभायात्रा में हजारों की संख्या में महिला, पुरुष, युवा, वृद्ध व छोटे बच्चों ने भाग लिया, इस अवसर पर लोकसभा चुनाव में शत- प्रतिशत मतदान करने के लिए झांकी निकाली गई।

समस्त महाजैन संघ भिवंडी के संयोजक अशोक जैन के अनुसार आचार्य भव्यकीर्तिसूरी, आचार्य रविशेखरसूरी व आचार्य जयधर्मसूरी सहित अन्य संतों के मार्गदर्शन में आयोजित शोभायात्रा में शत-प्रतिशत मतदान करने की अपील भिवंडी में निकाली गई शोभायात्रा, चिलचिलाती धूप में हजारों की संख्या में लोग हुए शामिल की गई। सामाजिक समरसता, अहिंसा, पर्यावरण संरक्षण, शाकाहार के प्रति जनचेतना जगाने वाली विभिन्न झांकियां भी निकाली गईं, इस रथ यात्रा में केंद्रीय राज्य मंत्री कपिल पाटील, विधायक महेश चौघुले, पूर्व नगरसेवक संतोष शेट्टी समेत विभिन्न जैन पाठशालाओं की ओर से २४ रथ भी शामिल हुए। अंजुरफाटा से गोकुलनगर तक लगभग आठ किलोमीटर दूरी तक निकाली गई, शोभायात्रा

में ध्वेन श्रेणिक ने (६ साल) ढोल बजाकर लोगों को आकर्षित किया।

श्री समस्त जैन महासंघ के अध्यक्ष मिठालाल जैन, सचिव रमेश तेजावत, उपाध्यक्ष जीवराज नगरिया, संयोजक अशोक जैन, मुकेश जैन, भूपेन्द्र महेता, विमल छाजेड व सुरेंद्र चोपड़ा ने पुलिस प्रशासन सहित मनपा आयुक्त और यातायात विभाग का आभार जताया।

ऊँचाई पहुंचने के लिए पारिवारिक रिश्ते जरूरी

एक बेटे ने पिता से पूछा-
सफल-जीवन-क्या-है?
पिता, बेटे को पतंग उड़ाने ले गए।
बेटा पिता को ध्यान से पतंग उड़ाते देख रहा था, थोड़ी देर बाद बेटा बोला-
पापा.. ये धागे की वजह से पतंग और ऊपर नहीं जा पा रही है, क्या हम इसे तोड़ दें !! ये और ऊपर चली जाएगी..
पिता ने धागा तोड़ दिया ..
पतंग थोड़ा-सा और ऊपर गई और उसके बाद लहरा कर नीचे आयी और दूर अनजान जगह पर जा कर गिर गई...
तब पिता ने बेटे को जीवन का दर्शन समझाया...
बेटा..
'जिंदगी में हम जिस ऊंचाई पर हैं..
हमें अक्सर लगता की कुछ चीजें, जिनसे हम बंधे हैं वे हमें और ऊपर जाने से रोक रही हैं
जैसे :
घर, परिवार, अनुशासन, माता-पिता, गुरु और समाज
और हम उनसे आजाद होना चाहते हैं...
वास्तव में यही वे धागे होते हैं जो हमें उस ऊंचाई पर बना के रखते हैं..
इन धागों के बिना हम एक बार तो ऊपर जायेंगे परन्तु बाद में हमारा वो ही हश्र होगा जो बिन धागे की पतंग का हुआ...
'अतः जीवन में यदि तुम ऊंचाइयों पर बने रहना चाहते हो तो, कभी भी इन धागों से रिश्ता मत तोड़ना..'
धागे और पतंग जैसे एक दूसरे के सफल संतुलन से मिली हुई ऊंचाई को ही 'सफल जीवन' कहते हैं।

!! ॐ अर्हम् !!
जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ
हार्दिक हृदय गुरुवर तेरा, मैं समक्ष समझ सकु दो ऐसा मन
शुद्ध भाव अन्तःकरण अन्तर्मन से अभिनंदन।।
ज्योतिचरण का जहां है बसेरा,
वहीं चारों धाम मेरे, वहीं तीर्थ मेरा।

Dilip Munath
Mob: 98936 75013 / 70009 07224
M/s. Dilipkumar Kundanmal Jain
Grain Marchent And Commission Agent
18A, Sector C, Scheme No. 71, Indore, Madhya Pradesh, Bharat - 452 009

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

संबोधि पावर योगा मेडिटेशन कैंप १८ मई से
६ दिन के आवासीय शिविर में फिजिकल, मेंटल और स्प्रिचुअल पावर बढ़ाने के लिए सिखाए जाएंगे विशेष प्रयोग

जोधपुर: संबोधि साधना के प्रणेता, राष्ट्र-संत श्री चन्द्रप्रभ जी, राष्ट्र-संत श्री ललितप्रभ जी और डॉ. मुनि शांतिप्रिय सागर जी के सान्निध्य में संबोधि पावर योगा एंड मेडिटेशन कैंप का आयोजन कायलाना रोड स्थित प्रसिद्ध साधना-स्थली संबोधि धाम में १८ मई से २३ मई २०२४ तक होगा। लाइफ में फिजिकल, मेंटल और स्प्रिचुअल पावर बढ़ाने के लिए शिविर में प्रतिदिन योग, ध्यान एवं अध्यात्म के पावरफुल प्रयोग करवाए जाएँगे। यह शिविर जीवन जीने की कला का आध्यात्मिक प्रशिक्षण है, शिविर से हम आरोग्य पूर्ण, आनंद पूर्ण और ऊर्जावान जीवन के मालिक बनेंगे, यह शिविर हमें क्रोध, चिंता एवं मानसिक अशांति जैसे नेगेटिव भावों से बाहर निकालेगा और मन में शांति-समाधि घटित करते हुए हृदय में प्रेम, करुणा और भक्ति जैसे दिव्य गुणों को साकार करेगा।

छः दिन के इस आवासीय शिविर में प्रतिदिन सुबह ६.१५ बजे आरोग्य लाभ का पहला सत्र, १० बजे जीवन-जीने की कला का दूसरा सत्र, दोपहर ३ बजे स्वाध्याय, जिज्ञासा समाधान एवं सत्य साक्षात्कार का तीसरा सत्र एवं रात्रि ७ बजे भक्ति एवं साधना का चौथा सत्र होगा। प्रतिदिन ध्यान की तीन बैठक होगी। समरूपता के लिए शिविर में भाई-बहिन श्वेत वस्त्र धारण करेंगे। शिविर किसी के दान या चंदे से नहीं होगा, शिविरार्थी स्वैच्छिक सहयोग कर सकते हैं। शिविर में सम्मिलित होने के लिए १७ मई की शाम तक संबोधि धाम पहुँचना अनिवार्य होगा। शिविर की पूर्णाहुति २३ मई को दोपहर १२ बजे होगी, शिविर स्थल पर ही आवास एवं भोजन की उत्तम व्यवस्था रहेगी, शिविर में १८ से ६५ वर्ष के सभी स्वस्थ और सीढियां चढ़ने में समर्थ भाई-बहन भाग ले सकते हैं। शिविर हेतु पहले नामांकन करवाना अनिवार्य रहेगा, अन्यथा शिविर में प्रवेश निषेध रहेगा। शिविर में भाग लेने के लिए संबोधि धाम के ९४१४८ ०५३३३, ८९४९६ ६१८५८, ८९९९१ ०३९०९ मोबाइल नंबर पर नामांकन करवाया जा सकता है।

पालघर में तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर शोभायात्रा में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

मुंबई के पास पालघर 'जियो और जीने दो' का जीवन मंत्र देने वाले अहिंसा के अवतार महावीर स्वामी के जन्मोत्सव पर शोभा यात्रा में पूरा जैन समाज उमड़ पड़ा। चहुंओर महावीर के जयकारों की गूंज सुनाई दे रही थी। गाजे-बाजे और महावीर के जय-जयकार के साथ तीर्थंकर को पालकी में बिठाकर जैन मंदिर से निकली शोभायात्रा जूना पालघर, मनोर मार्ग से पालघर रेलवे

स्टेशन, हुतात्मा स्तंभ होते हुए बारह पंथी भवन पर समाप्त हुई। शोभायात्रा में महिला, बच्चे, पुरुष बड़ी संख्या में शामिल हुए। जैन समुदाय के लोगों ने महावीर के दिखाए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। पालघर, बोईसर, दहाणू, मनोर, सफाले समेत पालघर जिले के अन्य क्षेत्रों में जैन समुदाय के लोग बड़ी संख्या में रहते हैं, इस दिन सभी ने अपनी दुकानें बंद कर जैन धर्म प्रभावना और महावीर स्वामी के सिद्धांतों को शोभायात्रा व अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से घर-घर पहुंचाते हैं। शोभायात्रा में जैन समाज के लोगों के साथ शिवसेना (उद्धव) के गट नेता कैलास म्हात्रे, उपनेता राजेश भाई शहा, भाजपा की पूर्व नगरसेविका लक्ष्मीदेवी हजारी, अल्का राजपूत आदि ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

!! ॐ अर्हम् !!
जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ

हार्द हृदय गुरुवर तेरा, मैं समक्ष समझ सकु दो ऐसा मन
शुद्ध भाव अन्त:करण अन्तर्मन से अभिनंदन।।
ज्योतिचरण का जहां है बसेरा,
वहीं चारों धाम मेरे, वहीं तीर्थ मेरा।

Surendra Bothra
उत्तर हावड़ा
Mob: 98838 47890
9/12, Lal Bazar Street,
Kolkata, West Bengal, Bharat - 700001

आचार्य श्री रामेश : एक परिचय

समता, ममता, क्षमता के अमर देवता का नाम है	:- आचार्य श्री रामेश
व्यसनमुक्ति व संस्कार-क्रांति का अलख जगाने वाले का नाम है	:- आचार्य श्री रामेश
हर श्रावक को ज्ञानवान व क्रियावान बनने की प्रेरणा देने वाले का नाम है	:- आचार्य श्री रामेश
स्वपर कल्याण की साधना में अहर्निश रत रहने वाले का नाम है	:- आचार्य श्री रामेश
बावरी जाति का उद्धार करने वाले मसीहा का नाम है	:- आचार्य श्री रामेश
हर पल हर क्षण सबको कल्याण का पथ दिखाने वाले हैं	:- आचार्य श्री रामेश
हर संघर्ष और हर चुनौती में भी आगे बढ़ने वाले हैं	:- आचार्य श्री रामेश
जवाहराचार्य, गणेशाचार्य, नानेशाचार्य के प्रतिरुप हैं	:- आचार्य श्री रामेश
धर्म के मर्म को जन-जन तक पहुंचाने वाले हैं	:- आचार्य श्री रामेश
निर्मल चारित्र व श्रुत के अराधक का नाम है	:- आचार्य श्री रामेश
आदर्श सिद्धान्त और अनुशासन के प्रेरक है	:- आचार्य श्री रामेश
निर्ग्रन्थ श्रमण संस्कृति के उन्नायक हैं	:- आचार्य श्री रामेश
सरलता, सहजता और सजगता के प्रतिमूर्ति हैं	:- आचार्य श्री रामेश
कथनी और करनी में एकरुपता है जिनका	:- आचार्य श्री रामेश
उच्च आचार और उच्च चिंतन है जिनका	:- आचार्य श्री रामेश
शास्त्रों के गूढ़ ज्ञाता हैं	:- आचार्य श्री रामेश

सांसारिक जीवन छोड़कर पति-पत्नी ने लिया सन्यास

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ बावन जिनालय में दीक्षा समारोह

मुंबई-भायंदर: अपनी तीन संतानों को प्रभु वीर के मार्ग में आगे बढ़ाकर स्वयं संयम मार्ग में जाने को उत्सुक रत्नकुक्षी माता-पिता मुमुक्षु कीर्तिभाई अंबालाल शाह एवं मुमुक्षु जयश्री बेन कीर्तिभाई शाह ने 'भगवती प्रवज्या उत्सव' में सन्यास मार्ग का वरण कर लिया। २ से ४ मई २०२४ की आयोजित भगवती प्रवज्या उत्सव में दीक्षा दाता, वचन सिद्ध महापुरुष गच्छाधिपति पूज्य आचार्यश्री नरदेव सागर सूरीश्वरजी महाराज ने दोनों मुमक्षु को दीक्षा प्रदान की, इस अवसर पर ओजस्वी प्रवचनकार पूज्य मुनिश्री विनम्रसागरजी महाराज, पूज्य साध्वीश्री सिद्धिपूर्णाश्रीजी महाराज के सानिध्य में जीवन समर्पण अनुष्ठान के तहत प्रथम दिन चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी गुरुवार को सुबह जिनालय में श्री शक्रस्तव अभिषेक किया गया, इसके बाद दीक्षार्थी के कपड़े रंगाने का कार्यक्रम किया गया। अंत में शाम को महाआरती की गई। महोत्सव के दूसरे दिन वर्षीदान यात्रा, अंतिम वायणा और विदाई समारोह आयोजित किया गया।

गुरुदेव के सानिध्य में २००वां दीक्षा समारोह था, जो ऐतिहासिक बन गया। दीक्षा समारोह के अंतिम दिन वरुथिनी एकादशी पर सर्व वीरती ग्रहण (भगवती दीक्षा), गच्छाधिपतिश्री का ८३वां जन्मदिन, साध्वीश्री देवर्षिपूर्णा जी का ५००वां आयंबिल तप वधामाणा कार्यक्रम किया गया। गच्छाधिपति आचार्यश्री देवेंद्रसागर सूरीश्वरजी महाराज के शिष्य गच्छाधिपति पूज्य आचार्य श्रीमद् नरदेवसागर सूरीश्वर महाराजा आदि ठाणा की पावन निश्रा में हुए समस्त अनुष्ठान में पूज्य आचार्यश्री विनीतसागरजी महाराज, मुनिश्री देवप्रभसागरजी महाराज, मुनिश्री पद्मकीर्तिसागरजी महाराज, मुनिश्री विनम्रसागरजी महाराज आदि ठाणा, पूज्य आत्मयशश्री जी महाराज, पूज्य साध्वीश्री अनंतगुणाश्रीजी महाराज तथा पूज्य साध्वीश्री सिद्धिपूर्णाश्रीजी महाराज आदि ठाणा उपस्थित थे।

।। ॐ अर्हम् ।। ।।श्री गुरूवेनमः ।।
जर्य भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ
युगप्रधान आचार्य महाश्रमणजी के
६३वें जन्म पर्व पर शत् शत् नमन

Sushil Kumar Giria Mob. : 98309 55911
Rajesh Textile
Dealings In Cotton Night Gown Fabrics
29/1/30, Armenian Street, Kolkata, West Bengal, Bharat-700001
Ruchika Enterprise
3A, Mullick street, 1st Floor, Kolkata, West Bengal, Bharat-700007

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

Intensive

● Investment Banking ● NBFC ● Family Office

~ Unique Advice. Capital Market Insight, Efficient Execution, Delivering Financial Growth

~~~ Our Services ~~~

- Public Issue (IPO)
- M&A / Strategic Acquisition
- Wealth Management & Advisory
- Right Issue / Buy-Back
- Takeover / Open Offer
- Valuation & ESOP
- Private Equity
- QIP Placement
- Pre-IPO Placement
- Debt Syndication
- Amalgamation & Demerger
- Financial Engineering

Intensive Fiscal Services Private Limited

RO: - 914, Raheja Chambers, Free Press Journal Marg, Nariman Point, Mumbai –400021, India,
Tel: +91-22-22870443 / 44 / 45, **Contact Person:** Virendra Bajaj +91 9699292100
Email: admin@intensivefiscal.com , Web: www.intensivefiscal.com

10+ NATIONALISE BANK

20+ PRIVATE BANKS

30+ FOREIGN BANKS

50+ NBFC

100+ CO-OPERATIVE BANKS

Which Institute Should I Prefer ?

Who Will be fasted in Providing Loan ?

Who Will Give Lower Rate of Interest ?

Who Will give Higher Loan Eligibility ?

Confused ? Can't Decide ?

Why go to various Institution for your fund requirement ?

Just4uloan
Educate - Empower - Enhance - Engage

Shall cater to your funds by selecting the Financial Institution best suited for you which has :

- Speedy Approval.
- Lowest Processing Fees.
- Fast Disbursement.
- Quick Processing.
- Lowest Rate Of Interest.
- Higher Eligibility.

Do You Know ?

- Working Capital loan is available at approx 11% to 12% p.o.
- Loan is available against plot of NA Land.
- Loan to Builders & developers (Rera Compliant) Within 20-25 working days.
- Unsecured loan between 12-14 % p.o.
- Businessman can avail loan upto Rs. Five crores without collateral under government sponsored scheme
- Eligibility of Housing loan can be increased by considering projected income.
- Loan is available upto 90% of the property value.
- Small business can avail working capital loan upto Rs. 10 Lacs without collateral under government sponsored scheme.
- Loan is available for educational Institute against discounting of future fees.

Contact Now :

Just4uloan
Educate - Empower - Enhance - Engage

Reduce your interest cost without reducing your loan.

Enhance your eligibility.

Loan at your Door Steps.

enquiry@just4uloan.com | www.just4uloan.com

Call Now : 022 - 28615154

Address : 504, Rainbow Chambers, Near MTNL Exchange, S.V. Road, Kandivali (W), Mumbai - 400 067.

Postal Registration Number - MCN/192/2024-2026
WPP License No. MR/Tech/WPP-319/North/2024-26
Published on 09th May 2024 & Posting On 10th & 12th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059

ADD Gel®

ACHIEVER®

THE WORLD'S FINEST GEL PEN

Non Dry
NOW...UPTO 2 YEARS

LEADERS IN WRITING TECHNOLOGY

Presenting New ADD Gel Achiever, the world's finest gel pen.With improved dye base ink that stays Non-Dry for up to 2 years.For smoother, effortless writing.

ONLY ₹50/- PER PC

www.addpens.com

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक विजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059, टेलीफैक्स-022-2850 9999
अणु डाक -mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना : www.jinagam.co.in, द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI NO. MAHHIN/2006/19598